चीन का क्रान्तिकारी राष्ट्रनिर्माता
डाक्टर सनयातसेन

[चीन की राज्यक्रान्ति का इतिहास]

लेखक—

श्री विश्वनाथ राय एम. ए., एल-एल. बी.

प्रकाशक—

विद्याभास्कर बुकडिपो

चौक, बनारस

प्रथम संस्करण
१०००

जौलाई १९३९

मूल्य

दो शब्द

चीन एक महादेश है। इसकी सभ्यता और संस्कृति पुरानी है। इसमें एक अपनापन है। अपनी एक मौलिकता है। चीन ने ससार को सभ्यता के रूप में बहुत-सी वस्तुएँ प्रदान की। परन्तु वह चीन आज आपस के मतभेद से जापान के द्वारा रौंदा जा रहा है। बारी बारी से चीन के सभी प्रान्त जापान ने ले लिये। युद्ध अभी जारी है। चीन की राष्ट्रीय भावना पूर्ण रूप से जागृत है। लेकिन वह भावना जापान की सैनिक शक्ति और संगठन के समक्ष कुछ काम नहीं करती। अतः यह स्पष्ट है कि इस आधुनिक युग में वैज्ञानिक संगठन के बिना कोई राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता।

चीन सभ्यता के उच्चतम शिखर पर था। पर समय एक-सा नहीं रहता। सदियों के बाद मनुष्य का पतन उसके स्वभाव के कारण अवश्यम्भावी हो जाता है। इतिहास इसका साक्षी है। समय और स्थिति महापुरुषों को जन्म देती है प्रत्येक देश और प्रत्येक राष्ट्र में ऐसे महापुरुषों का आविर्भाव होता है। वे अपने कृत्यों द्वारा राष्ट्र के जीवन में परिवर्तन लाते हैं। नये २ सन्देशों और उपदेशों से समाज का उपकार करते हैं। यदि समाज में महान व्यक्तियों का आविर्भाव न हो तो सभ्यता का विकास ही नहीं हो सकता। महान पुरुषों की कृतियाँ ही सभ्यता-विकास की नसेनी है। चीन में जब मांचू राज्यवंश घोर अत्याचार कर रहा था वैसे ही समय में डाक्टर सनयातसेन का जन्म हुआ डाक्टर सनयातसेन की जीवनी से मालूम हो जायगा कि किस प्रकार इन्होंने क्रान्ति का बीजारोपण किया और अपने जीवन काल ही में वह बीज बड़ा होकर फला और फूला। फिर भी उनके जीवन के

पिछले हिस्सों के अध्ययन से मालूम हो जायगा कि जिस पेड़ को उन्होंने लगाया और बड़ा किया उसकी रक्षा के लिये कैसे रचनात्मक संगठन का कार्य्य करना चाहते थे जिससे वह वृक्ष चिरकाल तक फलता और फूलता रहे। रचनात्मक संगठन में कैसी २ बाधायें आ उपस्थित हुईं। अन्त में सनयातसेन अपने देश को कार्य्यक्रम का आदर्श दिखला कर इस संसार से चल्ते बने। परन्तु यह अच्छी तरह कहा जा सकता है कि सनयातसेन का संगठनात्मक कार्य्य यदि पूरा हुआ होता तो इसकी यह दशा कभी न होती।

भारतवर्ष के लिये चीन का उदाहरण एक विशेष अर्थ रखता है। भारतवर्ष भी अपनी स्वतन्त्रता के लिये लड़ रहा है। यह भी सत्य है कि भारत को स्वतन्त्रता थोड़े समयों में ही प्राप्त हो जायगी परन्तु स्वतन्त्रता को कायम रखना ही सब से बड़ा प्रश्न है। बिना राष्ट्रीय और वैज्ञानिक संगठन के भारत की आजादी टिक न सकेगी। जिस तरह प्रान्तीय शासनों के अधिकार प्राप्त हो जाने पर भी शासन की बागडोर की छीछालेदर हो रही है जो कांग्रेस संगठन का नाट करती है उसी के अन्दर आपस में फूट के कीटाणु प्रविष्ट हो चुके हैं जिसके कारण नवयुवक समुदाय में कांग्रेस का प्रभुत्व कम होता जा रहा है। अग्रगामी गुट की ओर नवयुवक खिंचे जा रहे हैं। इसी तरह यदि आपस में ही संगठन न हुआ तो शासन डोर मिल जाने पर भी स्थायी न होगी। डाक्टर सनयातसेन की जीवनी पढ़कर अपने देश की स्थिति समझने में पर्याप्त सहायता मिल सकेगी।

× × × ×

प्रस्तुत पुस्तक सन् १९३७ के जनवरी और फरवरी मास में लिखी गई थी तब से आज तक यह पड़ी हुई थी। विद्याभास्कर जी की कृपा से यह पुस्तक पाठकों के समक्ष आई है।

मातृभाषा हिन्दी होते हुए भी मुझे हिन्दी नहीं आती । इससे बढ़कर दुर्भाग्य क्या हो सकता है। फिर भी इच्छा है कि कुछ लिखूँ और कदाचित् लिखते २ लिखना भी आ जाय। इसलिये पाठकवृन्दों से मैं क्षमा प्रार्थी हूँ कि वे मेरी असंयत भाषा का ध्यान न रख कर पुस्तक के विषय को ही अपनावें।

विद्याभास्कर जी ने स्वयं ही प्रूफ संशोधन तथा भाषा का परिमार्जन करके भाषा की अशुद्धियों को ठीक करने का कष्ट उठाया है जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ फिर भी कुछ छापे की अशुद्धियाँ रह गई हैं जिनके लिये लेखक क्षमा याचना करता है और आशा करता है कि पुस्तक के दूसरे संस्करण में अशुद्धियाँ न रह पायेंगी।

काशी
सम्बत् १९९६ श्रावण

विनीत
विश्वनाथ राय एम० ए०

विषय-सूची—

बाल्यकाल

गरीब घर में जन्म लेने के कारण डाक्टर सनयात सेन का बाल्यकाल अज्ञात-सा है। इनके पिता सन-टाचो-च्यान कानटंग-प्रान्त के चोआय-हंग नामक ग्राम के रहने वाले एक गरीब किसान थे। सनयातसेन की जन्म तिथि भी अनिश्चित-सी है। स्वयं सनयातसेन भी अनभिज्ञ थे। इनका जन्म दिवस कौमोनटांग (चीन का प्रजादल) ने १२ नवम्बर सन् १८६६ ईस्वी माना है। उस समय इनके पिता एक मध्य वयस्क पुरुष थे। सनयातसेन का एक बड़ा भाई था जिसकी उम्र उस समय पन्द्रह वर्ष के लगभग थी।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव की पुरातन पाठशाला में हुई थी। ग्रामीण बालक होते हुये भी बालकपन से सनयातसेन ने बाहरी संसार के विषय में दिलचस्पी लेना प्रारम्भ कर दिया था। पिता ने अपनी किशोरावस्था की कहानियाँ सनयातसेन को सुनाई थी। गाँव से थोड़ी दूर पर एक छोटी सी पहाड़ी के पास ही एक छोटा सा बन्दरगाह था जहाँ बालक सनयातसेन छोटे २ जहाजों को देखने जाया करता था। घर में बाहरी संसार से सम्बन्ध रखने वाली स्मृति के रूप में दो चाचियाँ मौजूद थीं। १८४८ ईस्वी में कैलफोर्निया में सोने की खान का पता लगा था। वहाँ के रहनेवाले गोरों को कुलियों की बड़ी जरूरत पड़ी। किसी तरह उन्हें मालूम हो गया कि दक्षिणचीन में मजदूर बहुत सस्ती मजदूरी पर मिलेंगे। कम्पनियों के दलाल क्वानटंग के कृषि जिलो में घूमने लगे। इनके पास तरह २ के पोस्टर तथा चित्र भी मौजूद थे जिनके द्वारा गरीब किसानों को धन का लोभ दिखाकर उन्हें कैलफोर्निया के लिये तैय्यार किया जाता था। १८५१ ईस्वी तक लगभग २५००० के चीनी मजदूर कैलफोर्निया मे काम करने लगे थे। इन्ही में सनयातसेन के दो चाचा भी गये थे। इनकी स्त्रियाँ प्रथा के अनुसार घर पर रह गईं। कुछ दिनों के बाद पता चला कि एक की मृत्यु समुद्र यात्रा में हो गई थी और दूसरे की मृत्यु कैलफोर्निया में हुई।

प्रवास से लौटे हुए चीनियों से वह बहुधा-उनकी आत्म कहानी सुना करते थे। एक प्रवासी चीनी ने किस तरह सोने ठोके चुराकर कैलफोर्निया से घर लाया था वह अपनी

चतुरता की बड़ाई बालक सनयात से कहा करता था।

सनयातसेन जब अभी बालक थे तभी उनके बड़े भाई सन-मी ने होनोलुलु के लिये प्रस्थान किया। पर्लहार्बर के लोलैण्ड प्रदेश की उन्नति करने वालों में सन-मी प्रधान थे। सन-परिवार दक्षिण प्रदेश के रहने वाले थे। इसी प्रदेश के रहने वाले प्रवास जाने वालों में अग्रणी थे। कैन्टन और मकावो उन्नतिशील बन्दरगाह थे। यहाँ से बाहरी व्यापार खूब चालू था। हवाई प्रदेश में गन्ने की खेती की वृद्धि होने से चीनी मजदूरों की आवश्यकता खूब हुई। अतः अधिकाधिक संख्या में चीनी होनोलुलु में जाकर बसने लगे। सनयातसेन के जन्म के पहले ही बाहर जाने वालों के लिये एक बोर्ड बना था और अमेरिका से एक कमिश्नर चीन आया था जो हांगकांग से पांच सौ चीनी मजदूर रवाना किया था। आठ डालर के बोनस की लालच से गरीब मज़दूर बाहर जाने के लिये टूट पड़ते थे।

कुछ दिनों के बाद सनयातसेन के भाई अपने घर लौटे। वहाँ के धन की बहुत बड़ाई की। अपने छोटे भाई को उन्होंने उन प्रदेशों को देखने के लिये उत्तेजित किया। सन-मी ने अपने माता पिता से सनयातसेन को ले जाने की अनुमति मांगी परन्तु माता-पिता ने उसे छोटा समझ कर ले जाने की अनुमति नहीं दी। बड़े भाई ने एक दूसरी तरकीब ले जाने की निकाली। इस तरकीब में अपने एक क्वानटंग के मित्र की सहायता से बहुत से चीनी नवयुवकों को बोनस की लालच

से होनोलुलु ले गये। इस प्रकार सन् १८७६ में ग्रेनीच नामक अंग्रेजी जहाज पर सनयातसेन बहुत से चीनी मजदूरों के गरोह के साथ होनोलुलु पहुँचे। होनोलुलु पहुंचने पर सनयातसेन को बड़े भाई ने जेनरल स्टोर के काम में लगा दिया। जेनरल स्टोर की एक दूकान भी सन-मी ने शुरू की थी। सन-मी एक स्वयं निर्मित आदमी थे। उसने कृषि का काम भी अच्छी तरह जमा लिया था। एक दूकान भी खोल ली थी। सनयातसेन को किसी कार्य के लिये कष्ट नहीं उठाना पड़ा। सन-मी होनोलुलु के निकट एवा नामक ग्राम में रहते थे। वह बराबर बाहर इधर उधर जाया करते थे।

सन-मी ने आवोलानी के चर्च स्कूल में सनयातसेन को भर्ती करा दिया। बारह वर्ष का सनयातसेन उस समय अंग्रेजो नहीं समझ सकता था। कुछ और भी चीनी लड़के उस स्कूल में पढ़ते थे। अतः अपने स्कूल के साथियों तथा मास्टरों से सनयात को अंग्रेजी सीखनी पड़ी। उस स्कूल में एक हवाइयन मास्टर को छोड़ कर सभी अंग्रेज थे। उस स्कूल के सभी तरीके अंग्रेजी थे। पाठ्य पुस्तकें अंग्रेजी में थी। उस स्कूल में राज-तंत्र की ही शिक्षा दी जाती थी। जब सनयातसेन चीन के राज तंत्र के विरुद्ध बागी हो गये तब विशप विलिस ने दिसम्बर १५ सन् १८९६ के डायोसेसन मैगेजिन में अपने स्कूल की तरफ से सफाई देते हुए एक लेख लिखा था कि "ताईचू" ने (सनयातसेन इसी नाम से स्कूल में विख्यात थे) अपने स्कूल के जोवन में ऐसा कोई कार्य्य नहीं किया था जिससे उसके

भविष्य के कार्यों का कुछ भी आभास मिलता हो। उसने कभी मांचू वंश के विरुद्ध अपनी ज़बान नहीं खोली थी। कम से कम स्कूल में लोक तंत्र के झुकाव की तरफ़ लड़कों का ध्यान नही दिलाया जाता था।

आयोलानी स्कूल के बोर्डिंग में रहने वाले विद्यार्थियों पर काफी नियंत्रण रहा करता था। उन पर अमेरिका की राजनैतिक पद्धति का प्रभाव नहीं पड़ने पाता था। परन्तु उस नियंत्रण के बाहर भी देखने और सुनने के लिये नेत्र और कान मौजूद थे। जब बालक सनयातसेन अंग्रेजी समझ सकता था तब अमेरीकन पद्धति के समझने की भी क्षमता थी। धार्मिक शिक्षा पर बड़ा ध्यान दिया जाता था। प्रातः और सन्ध्या समय की प्रार्थना में मौजूद रहना अत्यावश्यक था। सनयातसेन ने गाने का भी अच्छा-सा अभ्यास डाल लिया था।

विशप का अधिकतर ध्यान लड़कों को ईसाई धर्म की शिक्षा देने पर रहता था। वह उनके दिमाग में अंधविश्वास और मूर्ति पूजा के विरुद्ध भाव भरा करता था और उनके कोमल मस्तिष्क में ईसाई धर्म और उन्नति की याद बराबर दिलाया करता था। उन्हें ईसाई हो जाने के लिये हर प्रकार से समझाया जाता था। सनयातसेन अपने स्कूल के साथियों को ईसाई होते देखकर स्वयं भी धर्म परिवर्त्तन की इच्छा करने लगे। इस विषय पर उसने अपने बड़े भाई से बातें की यहाँ तक कि उसने अपने बड़े भाई को घर के देवताओं को न पूजने के लिये समझाया।

सन आह-मी को अब ख्याल आया कि स्कूल में विदेशीपन हद दर्जे तक घुस चुका है जिससे लड़कों की बुद्धि बिल्कुल परिवर्तित हो जाने की सम्भावना है। आह-मी सनयातसेन के धर्म परिवर्तन को कभी स्वीकार नहीं कर सकते थे। सनयातसेन चीनी कलेण्डर के हिसाब से अब सतरह वर्ष के हो रहे थे।

सन् १८८२ ईस्वी की २७ जुलाई को आयोलानी स्कूल का वार्षिक उत्सव था जिसमें चीन के राज-वंश के लोग भी पधारे थे। राजा कालाकाया ने पुरस्कार-वितरण किया था। सनयातसेन को भी अंग्रेजी व्याकरण में दूसरा नम्बर होने से इनाम मिला था। होनोलुलु से घर जाते समय उन्होंने एक अंग्रेजी बाइबल भी ले लिया था जिसे वह बड़े चाव से पढ़ा करते थे। जब तक उनके घर जाने का प्रबन्ध हो रहा था तब तक उन्होंने अपने भाई की दूकान में काम का देख भाल किया। भाई ने उनको अपना हिस्सेदार बना दिया था।

१८८२ या ८३ के लगभग सनयातसेन चीन लौटे। हवाई में कुछ दिन रह जाने से उनमें परिवर्तन आ गया था। पश्चिमीय सभ्यता की छाप उन पर लग गई थी। अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव काफी पड़ चुका था। जब वह चीन में उतरे तभी उन्हें चीन एक पिछड़ा हुआ देश मालूम पड़ने लगा। होनोलुलु में उन्होंने भव्य भवन, बैंक, अखबार, कारखाने तथा बड़े २ जहाजों को आते जाते देखा था। सनयातसेन एक पुरानी जाति तथा कौम के आदमी थे। परन्तु थोड़े ही दिनों में वह अपने को एक बदला हुआ आदमी समझने लगे। यूरोपीय

सभ्यता की उदारता ने हवाई को चीन से भिन्न कर दिया था। सनयातसेन चीन में हवाईयन प्रभाव के साथ आये थे। उन्हें अब अन्ध-विश्वास से घृणा पैदा होने लगी थी। लू-हावो-टंग नाम का एक ईसाई दोस्त उन्हें मिल गया था जिसको वह अपना सिद्धान्ती-भाई कहा करते थे। इन दोनों दोस्तों ने जबर्दस्ती से अन्ध-विश्वास हटाने का ठान लिया था। किसी त्यौहार के दिन कुछ नवयुवकों को लेकर गाँव के मन्दिर में ऐसे समय घुस पड़े जब पुजारी कहीं गया हुआ था। सनयातसेन ने उपस्थित लोगों के सामने मूर्ति पूजा के विरुद्ध भावमय व्याख्यान दिया और इसके बाद मन्दिर की सबसे बड़ी मूर्ति की अँगुलियाँ तोड़ने लगे। जितने लोग वहाँ मौजूद थे बिल्कुल डर से गये। उन्हें विश्वास हो गया कि गाँव पर अवश्य ही कोई विपत्ति आयेगी। सनयातसेन के पिता इस समाचार को सुन कर और भी घबड़ा उठे। गाँव में मुखियों की एक बैठक हुई और सभी लोगों ने एक स्वर से निश्चित किया कि सनयातसेन गाँव छोड़कर कहीं चले जायँ और उनके पिता की तरफ से टूटी हुई मूर्तियों की मरम्मत करा दी जावे तभी देवता प्रसन्न होंगे। लोग कहने लगे कि सनयातसेन का दिमाग विदेशी विचार से भर दिया गया है इसी से वह पागल सा व्यवहार कर रहे हैं।

सनयातसेन भी चोप-हंग में रहने से घबड़ा गये थे। अब उन्हें दूसरी जगह जाने का अवसर मिला और हांगकांग में जाने का निश्चय किया। उनके पिता ने उन्हें जाने की अनु

मति दे दी। बड़े भाई के यहाँ से पढ़ने का खर्च मिलता था। उन्होंने डाओसेसन स्कूल में १८८३ के अन्त में अपना नाम लिखाया परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद उस स्कूल को छोड़ दिया। स्कूल से हट जाने पर उन्हें घर जाना पड़ा। उनके पिता की हालत खराब हो रही थी और थोड़े ही दिनों में वह मर गये। गाँव वालों में इसकी चर्चा काफी दिनों तक रही कि यदि सनयातसेन मूर्त्तियों को नष्ट भ्रष्ट न करते तो उनके पिता की मृत्यु न होती। देवताओं के कोप से ही उनके पिता की मृत्यु हो गई।

१८८४ के अप्रैल में उन्होंने क्वीन्स कालेज में अपना नाम लिखाया। उसी साल के मई मास में उनकी शादी भी हो गई। उनके घर वाले बिना शादी के उन्हें रहने देना पसन्द नहीं करते थे। विदेशी प्रभाव से वे बहुत डरने लगे थे। उनका विश्वास था कि ब्याह की बेड़ी से सनयातसेन विदेशी धर्म की तरफ अग्रसर न होंगे। परन्तु सनयात के लिये वैवाहिक जीवन कोई रोक नहीं था।

हांगकांग में सनयातसेन ने अपने रहने के लिये एक मकान ठीक किया जो चीनी लड़कों के लिये डे-स्कूल का काम देता था। यहाँ पर उन्हें डाक्टर हेजर से मुलाकात हुई। डाक्टर हेजर १८८३ में अमेरिकन मिशन की तरफ से चीन आये थे। सनयातसेन अंग्रेजी बोल सकते थे अतः नये आगन्तुक पादरी से मित्रता हो गई।

डाक्टर हेजर ने एक बार सनयातसेन से पूछा कि क्या वह ईसाई हैं? सनयात ने उत्तर दिया कि वह ईसा के सिद्धा-

न्त में विश्वास करते हैं। तब डाक्टर हेजर ने कहा कि आप ईसाई क्यों नहीं हो जाते ? उत्तर मिला कि वह ईसाई हो जाने के लिये हर समय तैयार हैं। थोड़े दिनों के बाद सनयातसेन ने ईसाई धर्म की दीक्षा ले ली। सनयातसेन होनोलुलु में ही अपने मित्रों के साथ ईसाई धर्म के सिद्धान्त को मान चुके थे और चीन में लौटने पर लू-हावो-टंग के संग से और भी प्रभावित हो गये।

सनयातसेन ईसाई होने में घर वालों के विरुद्ध ही थे। सनयातसेन ने क्वीन्स कालेज में तीसरा, दूसरा और पहला दरजा क्रम से १८८६ तक समाप्त कर लिया था। सन् १८८६ में बड़े भाई ने इन्हें हवाई में किसी कागज पर हस्ताक्षर करने की जरूरत से बुलाया। आह-मी को ज्योंही यह बात मालूम हुई कि सनयात ने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया है त्योंही एक पत्र घर भेजा कि वह अब रुपये घर न भेजेंगे जब तक सनयात ईसाई धर्म को छोड़ न देंगे। इसका कुछ भी असर सनयात के ऊपर नहीं पड़ा। चीनी ईसाईयों ने रुपये एकत्र करके सनयातसेन को पादरी बनाने की चेष्टा की। सनयातसेन ने भी यह ठान लिया कि बाइबल सिखलाना उनके जीवन का एक आवश्यक अंग है। जब सनयातसेन चीन से वापिस आये तबतक इनकी पढ़ाई पिछड़ गई और उस समय इन्हें पैसे की कमी मालूम पड़ी। डाक्टर हेजर ने इस समय उनकी काफी मदद की।

होनोलुलु से लौटने पर सनयातसेन को अपने विषय में बहुत परेशान होना पडा। डाक्टर हेजर ने लिखा है कि यदि

उस समय हांगकांग या कैन्टन में कोई सेमिनरी स्कूल रहता, और कहीं से आर्थिक सहायता मिलती तो सनयातसेन अपने समय के एक विख्यात उपदेशक बन जाते। सनयात में बोलने तथा अपनी तरफ आदमियों को खींचने की विलक्षण शक्ति थी। कई महीनों के बाद उन्होंने डाक्टरी पढ़ने का इरादा किया। डाक्टरी भी चीन में एक प्रतिष्ठित चीज समझी जाती थी। सनयातसेन के व्यक्तिगत प्रार्थना पर डाक्टर हेजर ने एक पत्र डाक्टर केर को दिया और सिफारिश की कि मेडिकल फीस का कुछ हिस्सा माफ कर दिया जाय। उस समय साल भर के लिये करीब २० डालर देना पड़ता था।

डाक्टर जौनकेर की उम्र साठ वर्ष की हो चुकी थी जब सनयातसेन अपने परिचय के लिये डाक्टर हेजर का पत्र लेकर पहुँचे थे। डाक्टर केर तीस वर्ष तक मिशनरी का काम चीन में संयुक्त राष्ट्र के प्रेसबीटेरीयन चर्च की तरफ से कर चुके थे। कैन्टन मेडिकल मिशनरी सोसाइटी के सहयोग से डाक्टर केर ने बहुत सुन्दर अस्पताल तैयार किया था। इस अस्पताल के ज़रिये केर का नाम बहुत दूर तक फैल गया था। सरजरी में इनका हाथ कमाल का था। डाक्टर केर ने चीन की भाषा में चीन के लड़कों को डाक्टरी सिखाने की गर्ज से १८७६ से ही क्लास लेना शुरू कर दिया था। सनयातसेन भी १८८६-८७ में इस स्कूल के एक विद्यार्थी थे। अस्पताल में कुछ काम करके अपनी फीस का कुछ हिस्सा पूरा कर देते थे।

बाग़ी होना

बाल्यकाल से ही सनयातसेन के जीवन में परिवर्तन हो रहे थे। ग्रामीण किसान के घर में पैदा होकर संसार भ्रमण करने की प्रवृत्ति, चीनी विद्यार्थी के बदले अंग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी बन जाना, मूर्तिपूजक से ईसाई धर्म ग्रहण करना, मिशनरी समाज से मित्रता करना तथा पाश्चात्य शिक्षा में प्रेम रखना इत्यादि उनके जीवन में आप ही आप परिवर्तन ला रहे थे।

सनयात सेन ने अपनी जीवनी में 'क्रान्ति के बीज का प्रस्फुरन्, फ्रांस और चीन की लड़ाई जो १८८४-८५ में हुई थी उसी समय से बतलाया है। फ्रांस की मनशा टांगकिंग

हड़पने की थी क्योंकि टांगकिंग चीन के सुन्दर प्रान्त यूनन को इण्डो-चीन से मिलाता है। यूनन को भी फ्रांसिसी अपने प्रभाव क्षेत्र (Sphere of influence) में रखना चाहते थे। इस युद्ध के समय सनयातसेन की उम्र १८ वर्ष की थी और क्वीन्स कालेज में विद्याध्ययन करते थे। वह इस युद्ध का अध्ययन बड़ी दिलचस्पी से किया करते थे। चीन की सेना स्थल पर काफी मजबूत थी और फ्रांसिसी सिपाहियों से मोर्चा लेने में किसी तरह कमजोर नहीं थी परन्तु समुद्र पर फ्रांसिसी बेड़े फूचो और फारमोसा तक बढ़ आते थे। सनयातसेन के मस्तिष्क में चीनी-फ्रांसिसी लड़ाई की ध्वनि गूंजती रहती थी और अपने लेखों में कितनी ही बार इन्होंने जिक्र भी किया। विदेशियों के आधीन में चीन के प्रदेश धीरे २ चले जा रहे थे। इसकी पीड़ा, इसकी कसक, सनयातसेन को थी। मांचू राज्य वंश तथा मंत्री-मंडल की बेवकूफी पर सनयातसेन और भी चिढ़ जाते थे। चीनी सेना काफी वीरता से लड़ती, विदेशियों को आगे बढ़ने न देती परन्तु चीनी सरकार सन्धि करके विदेशियों को मनचाही वस्तुएँ दे देती।

कैन्टन के मेडिकल स्कूल में सनयातसेन के क्रांतिकारी भावों की उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी। लू-हा-टंग जो सनयात का सिद्धान्ती-मित्र था डाक्टर केर के स्कूल में विद्यार्थी होकर आ गया था। दोनों मित्र एक ही कमरे में रहते थे। बड़ी स्वतंत्रता के साथ बातें करते थे। एक चेंग-शीह-लियांग नाम का धनी आदमी जो संघाई के सौदागर का लड़का था

मेडिकल स्कूल में भर्ती हुआ था। वह भी मांचू के राजवंश से बगावत करने के लिये तैयार था। चेंग ने सनयात और लू-हा को मांचू के विरुद्ध गुप्त समितियों का पता बताया। ये गुप्त समितियाँ अधिकतर छोटे क्लास की जनता में प्रचलित थी। स्वयं चेंग भी एक सदस्य थे। इन तीन विद्यार्थियों का एक गुट था। ये क्रांति के विषय में बातें करते थे। अभी तक इनका कार्यक्रम बातों तक ही सीमित था।

उस समय हांगकांग में एक मेडिकल स्कूल खोलने का आयोजन हो रहा था। डाक्टर कैन्टली संस्थापकों में मुख्य थे। १८८७ के अक्टूबर महीने में सनयातसेन ने नये मेडिकल स्कूल में नाम लिखाया और यही स्कूल के प्रथम विद्यार्थी हुए। सनयातसेन को नये मेडिकल कालेज में विज्ञान के अध्ययन का अच्छा अवसर मिला। रसायन, उद्भिद तथा प्राणी विज्ञान से इनका काफी परिचय हो गया। सनयातसेन इस मेडिकल कालेज के प्रथम विद्यार्थी और प्रथम ग्रेज्युएट थे। १८९२ ईस्वी में इन्हें पारंगत होने की सनद मिली। यहाँ पर इनके क्रांतिकारी विचारों का विकास हुआ। इनके तीन और मित्र थे। जिन्हें आगे चलकर लोग चार बड़े बागी के नाम से पुकारने लगे थे।

मकाओ में डाक्टर सनयातसेन ने अपनी डाक्टरी शुरू की। डाक्टर कैन्टली इनकी बड़ी मदद किया करते थे। कभी २ हांगकांग से मकाओ भी सनयातसेन को चीड़-फाड़ में सहायता देने पहुँच जाते थे।

सनयातसेन को अपनी डाक्टरी मकाओ में स्थगित

करनी पड़ी क्योंकि मकाओ पूर्तगीज उपनिवेश था और डाक्टरी करने के लिये पूर्तगीज सनद की जरूरत पड़ी। सनयातसेन कैन्टन में चले गये। १८९३ ईस्वी में सनयातसेन अपने मित्र लू-हा-टंग के साथ उत्तरी चीन के लिये रवाना हुए। उस समय इनकी उम्र केवल छब्बीस वर्ष की थी।

उत्तरी चीन में उस समय सबसे प्रसिद्ध आदमी बूढ़े वाइसराय ली-हंग-यांग थे जो संसार प्रसिद्ध व्यक्ति थे। यूरोप में भी इनका नाम था और मांचू राजवंश में इनका बड़ा मान था संसार भ्रमण कर चुके थे। ली-हंग के उद्योग से टन्टसीन में ऊँचे दर्जे की शिक्षा का प्रबन्ध हो रहा था। उसी समय एक मेडिकल स्कूल भी प्रारम्भ हुआ। ली-हंगभी स्कूल के संरक्षक थे। सनयातसेन इस नये स्कूल में किसी जगह के लिये बड़े इच्छुक हुए।

दोनों नवयुवकों ने वाइसराय से मिलने की इच्छा प्रकट की। परन्तु वाइसराय से मिलने की इज़ाज़त इन लोगों को नहीं मिली। फिर मेडिकल स्कूल में जगह मिलने की कोई बात हो न रही। यदि वाइसराय से ये मिले होते और कोई जगह सचमुच मेडिकल स्कूल में मिली होती तो सनयातसेन का जीवन कदाचित् कुछ दूसरा हो गया होता। सनयातसेन ने एक मेमोरियल वाइसराय को अर्पण करने के लिये तैयार किया था। इसमें सनयातसेन ने राष्ट्रीय विकास के लिये कम से कम चार चीज़ों पर वाइसराय का ध्यान आकर्षित किया था। चीन की मानसिक शक्ति का विकास, जमीन की उपज, व्यवसायिक वस्तुओं की सामग्री तथा

चीज़ों के भेजने का प्रबन्ध। ये ही चार मुख्य वस्तुयें सनयातसेन के दिमाग़ में चीन के लिये ज़रूरी थीं। इनकी सफलता के लिये उन्होंने निःशुल्क शिक्षा तथा विशेष कलाओं में प्रवीणता, कृषि की वैज्ञानिक नीतिपर उन्नति, प्राकृतिक सामग्रियों का आविष्कार तथा उन्नति, व्यवसाय में मेशिनरी का प्रचार तथा व्यापार की रुकावटें हटाना और गन्तव्य मार्ग का निर्माण इत्यादि बतलाया था। परन्तु जब सनयातसेन वाइसराय से व्यक्तिगत रूप में न मिल सके तब अपने मेमोरियल को पाकेट में रखकर लू-हा-टंग के साथ पेकिंग देखने के लिये चल पड़े।

पेकिंग देखने का एक मतलब था। माँचू राज-वंश की शक्ति का अन्दाज़ा लगाने के लिये दोनों मित्र आये थे। ये वूचंग और हांगकाऊ के रास्ते लौटे। यांगटी-सी के प्रदेश में जनता की हालत देखते हुए इन्हें विश्वास हो गया कि जनता एक योग्य नेता की ताक में है। जब जापान से १८६४ में लड़ाई छिड़ी तब सनयातसेन की आँखें चीन की विवशता और जापान की प्रचुरता पर थीं। दोनों मित्र यह समझते थे कि चीन की हार में उन्हें क्रान्ति करने का अच्छा अवसर है। परन्तु इसके लिये रुपये की जरुरत है। सनयातसेन ने हवाई और अमेरिका से रुपये प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। वह हवाई के लिये रवाना हुए।

१८६४ में सनयातसेन ने हवाई में पहली समिति स्थापित की। जिसका नाम सींग-चूंग हुई (उन्नतिशील

चीनी समाज) पड़ा। इस समिति का ध्येय था उन चीनी लोगों को एक में मिलाना जो चीन की उन्नति में विश्वास करते हैं। चीन की उन्नति के लिये धन और विद्या की आवश्यकता है। इसी समस्या को हल करना था। सनयात-सेन ने बाइबल पर हाथ रख कर कसम खाई कि वह अपने देश के लिये सब कुछ करने पर तैय्यार हैं। आह-मी ने भी समिति का सदस्य होना स्वीकार किया। सभी जगह उसकी शाखाएँ खोली गईं। प्रधान कार्य्यालय चीन में स्थापित करने का प्रबन्ध किया गया।

सनयातसेन होनोलुल में उन्नतिशील समिति की स्थापना कर रहे थे। उसी समय चीन से एक पत्र आया। चीन जापान से युद्ध में हार रहा है। क्रांति के लिये जल्दी लौटो। यह सन्देश एक संघाई के दोस्त ने भेजा था। इनका नाम चार्लस-जौन्स-सूंग था। ये भी ईसाई हो गये थे और सनयातसेन से काफी मित्रता हो गई थी।

सनयातसेन हवाई से अमेरिका जाने की तैय्यारी कर रहे थे परन्तु पत्र देखकर अपने कुछ चुने हुए दोस्तों के साथ चीन को वापस आ गये। जापान से युद्ध समाप्त हो गया था। १८९५ ईस्वी की १७ वीं अप्रैल को शीमोनोशेकी में सन्धि हो गई जिसके द्वारा चीन को फारमोसा छोड़ देना पड़ा तथा कोरिया की स्वतंत्रता स्वीकार कर लेनी पड़ी। कोरिया को जापानी साम्राज्य में मिलाने का यह एक तरीका था। चीन में बगावत शुरू हो गई। जो सिपाही लड़ाई से लौटे थे चीन में इधर उधर घूमने लगे। दक्षिण में भी कई जगहों में

बगावतें हुईं। सनयातसेन अपने साथियों सहित इस राष्ट्रीय अपमान को सहन नहीं करना चाहते थे। इनका मुख्य उद्देश्य था प्रान्तीय सरकारों की राजधानियों पर कब्ज़ा कर लेना। विशेष कर कैंटन की सरकार पर छापा मारना था। कैन्टन में इन लोगों की एक वैज्ञानिक कृषि समिति थी, जो क्रांति का प्रबन्ध करती थी। हांगकांग में एक दूकान खोली गई थी जो दर असल एक आफिस का काम देता था। शस्त्रों के खरीदने का काम तथा लोगों को भर्ती करना इत्यादि शुरू किया गया। हांगकाँग में पिस्तौल, राइफल तथा डाइनामाइट इत्यादि भी खरीदे गये। कैन्टन में ६०० पिस्तौल का एक पार्सल बन्दरगाह पर पकड़ा गया और भेद खुल गया। केन्द्रीय-क्रान्तिकारी कागजों को जलाकर वहां से भाग गये। उनके प्रधान कार्य्यालय पर ६ वी सितम्बर १८६५ को धावा हुआ। सनयातसेन ने अपनी जीवनी में लिखा है कि तीन आदमियों को फांसी हुई, सत्तर आदमी कैद किये गये। इसमें लू-हां-टंग को फांसी हुई।

कैन्टन में सनयातसेन अपने मित्रों के यहाँ छिपे रहे। वहाँ से दक्षिण की ओर नहर के रास्ते कभी पैदल, कभी नावपर इस तरह छिपते २ मकाओ पहुचे। उस शहर में एक विज्ञापन पर नजर गई जिसमें १०००० चीनी सिक्का सनयातसेन के पकड़ने वाले को पुरस्कार घोषित किया गया था। वहाँ से स्टीमर पर हांगकांग पहुँचे और डाक्टर कैन्टली से मिले। डाक्टर कैन्टली के यहाँ भी सुरक्षित स्थान नहीं था। मिस्टर डेनीस नाम के वकील ने सलाह दी कि यहाँ से भाग जाना ही हितकर है। अन्त में मित्रों की आर्थिक सहायता पाकर वहाँ से कोबी के लिये रवाना हुए। कोबी में पहुँच कर

अपनी पोशाक बदल दी। एक जापानी पोशाक तैय्यार करवाई। अपने बालों को जापानी तरीके से कटवाया। मूछें भी जापानियों की तरह रख ली। यों भी और चीनियों की अपेक्षा सनयातसेन कुछ काले थे। लोगों का कहना था कि उनमें मलाया का खून वर्त्तमान है तथा उनका जन्म होनोलुलु में हुआ था इससे वह कुछ काले थे। परन्तु यह बात सत्य नहीं थी। सनयातसेन का जन्म चीन में हुआ था। चीन में उस समय लम्बे बाल रखने की प्रथा माँचू राजवंश ने निकाली थी। प्राय: सभी चीनी ऐसे ही बाल रखा करते थे। उस तरह के बालों को कटवा देना चीन में एक सन्देह उत्पन्न करना था। बाल कटवा कर सनयातसेन ने अपने को छिपा लिया तथा चीन के पुराने रिवाजों से अपना नाता तोड़ लिया।

सनयातसेन की आकृति बिल्कुल बदल गई। अब वह विदेशी अप-टु-डेट चीनी हो गये। वह एक छोटे नाटे कद के साँवले चेहरे पर यूरोपीय वस्त्र तथा कालर और टाई के साथ चमक रहे थे। उनके काले २ बाल उनकी भौहें तक आ जाते थे।

निर्वासन

सनयातसेन हवाई चले गये। वहाँ पर छः महीने तक रहे। कभी २ सीग-चूँग-हुई की भी बैठक हो जाया करती थी। कुछ नये सदस्यों का आगमन हुआ। परन्तु लोगों में उत्साह नहीं था। जब बागियों के पकड़े जाने की खबर चोआय-हंग पहुँची तब लू परिवार और सन् परिवार की हालत क्या हुई होगी? चीन के नियमानुसार परिवार के किसी भी व्यक्ति के दोष के लिये सारे परिवार को सजा दी जाती थी। लू और सन् परिवार अपनी प्राण रक्षा के लिये वहाँ से भागा। सन् परिवार होनोलुलु में पहुँचा। आह-मी

ने चीनी प्रथा के अनुसार उनको अपने यहाँ शरण देना स्वीकार किया।

१८९६ मे संयोगवश डा० कैन्टली को सनयातसेन से होनोलुलु में भेंट हो गई। डाक्टर कैन्टली को उस बागी का कोई ठिकाना मालूम नही था। सनयातसेन ने डाक्टर को होनोलुलु में घुमाया और लण्डन में आने की प्रतिज्ञा की। १८९६ के जून मे सनयातसेन सैन फ्रैंसिसको के लिये रवाना हुए। Great Exclusion Act के अनुसार वहाँ जाने में काफी अड़चन थी। परन्तु जापानी बनकर किसी तरह सनयात सेन सैनफ्रैंसिसको पहुँच ही गये। बागी होने के कारण उन्हें चीनी पासपोर्ट मिलना दुश्वार था। सैन फ्रैंसिसको में एक महीना तक रह चुकने के बाद संयुक्तराष्ट्र अमेरिका मे और तीन महीने तक घूमते रहे। अमेरिका में जहाँ जहाँ सनयातसेन जाते वहाँ वहाँ चीनी लोगों को उत्साहित करते। व्याख्यान देते, समझाते और उन्हें अपने देश को जागृत करने के लिये बढ़ावा देते। चीन की अवनति तथा मांचू राज वंश की अयोग्यता का दिग्दर्शन कराते परन्तु चीनियो पर कुछ असर न होता था। हाँ थोड़े से लोगों का ध्यान अवश्य ही आकर्षित हो जाता था।

वाशिंगटन में रहने वाले चीनी राजदूत को सनयातसेन की खबर लग गई थी। उसने एक फोटो भी प्राप्त कर लिया था जो सनयातसेन ने सैन-फ्रैंसिसको में खिचवाया था। वाशिंगटन के चीनी राजदूत ने लण्डन में रहने वाले चीनी राजदूत को सनयातसेन के जाने की खबर केबुल से बतला दिया था। सनयातसेन १८९६ के २३ वी सितम्बर को मैजेस्टिक नामक जहाज से रवाना हुए और ३० तारीख को

लीवरपुल पहुँचे। १ ली तारीख को लण्डन गये। डाक्टर कैन्टली से मुलाकात की और ग्रे इन में इनके रहने का प्रबन्ध किया गया। डाक्टर कैन्टली के यहाँ सनयातसेन बराबर जाया करते थे।

लण्डन के चीनी राजदूत ने सनयातसेन पर खुफिया पुलिस नियुक्त की थी। अंग्रेजी परराष्ट्र विभाग से चीनी राजदूत ने सनयातसेन को पकड़ने की लिखा-पढ़ी की परन्तु परराष्ट्र विभाग ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। दश दिनों तक लण्डन में कोई घटना नहीं हुई। सनयात डाक्टर कैन्टली के यहाँ प्रति दिन आते जाते थे और डाक्टर की पुस्तकें पढ़ने में अपना समय व्यतीत करते थे। ग्यारह अक्टूबर को सनयातसेन डाक्टर कैन्टली के घर की तरफ जा रहे थे। रास्ते में एक चीनी से भेंट हुई और वह बातें करते २ चीनी राजदूत के घर पर ले गया। यह भी कहा जाता है कि सन-यातसेन राजदूत के घर पर अपना नाम बदलकर आया जाया करते थे। उस दिन वहाँ पर उनका स्वागत हुआ और सभी स्थान दिखाने के बहाने उन्हें ऊपर भी ले जाया गया। जब वह तीसरे मंजिल पर पहुँचे तब तक उनके पीछे का दरवाजा बन्द हो गया। चीनी राजदूत के अंग्रेजी सलाहकार मैकार्टनी ने कहा अमेरिका से खबर आई है कि समवेन नाम का एक राजनीतिक अभियुक्त लण्डन पहुँचा है और निःसन्देह सनवेन तुम्ही हो। जब तक पेकिंग से कोई खबर न आ जाय तब तक तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा। राजदूत ने पेकिंग से सलाह लेना शुरू किया। पेकिंग से खबर आने में काफी देर हो गई और तब तक लण्डर्न की स्थिति बिगड़ने लगी।

सनयातसेन लण्डन के एक चीनी प्रासाद में कैद पड़े

हुये थे। एक अंग्रेजी नौकर उन्हें खाने के लिये दे जाया करता था। राजदूत के नौकरों में से एक कैन्टन निवासी चीनी था जिसने सनयातसेन से उनके चीन भेजे जाने के प्रबन्ध को प्रकट कर दिया था। सनयात सेन बिल्कुल घबड़ा गये। उस समय उनकी दशा बिल्कुल एक डरे हुये कायर की भांति हो गई थी। उनके जीवन में यही एक समय था जब सनयातसेन को कातर होते हुए लोगों ने पाया। परन्तु सचमुच स्थिति भयानक थी। सनयातसेन को अपने देश की अमानुषिक पद्धति से दण्ड देने का चित्र आँखों के सामने नाचने लगा। उन्हें नींद हराम हो गई कई सप्ताह समाप्त हो गये। उन्होंने कई पत्र अपने मित्रों के पास भेजे परन्तु कोई भी न पहुंच सके। खिड़की के बाहर पुर्जे लिख २ कर सिक्कों के साथ गिराते कि कोई भी डाक्टर कैन्टली के पास सन्देश ले जाता परन्तु प्रयत्न विफल रहा। तब एक दिन भाव में आकर सनयातसेन ने अपने अंग्रेज नौकर को धर्म के नाम पर कहा—'जिस तरह टर्की का सुलतान आर्मेनिया के सभी ईसाइयों को मार डालने की इच्छा करता था उसी तरह चीन का सम्राट मुझे मार डालने के लिये प्रस्तुत है क्योंकि मैं एक ईसाई हूँ और चीन में सुव्यवस्थित सरकार स्थापित करने की इच्छा रखता हूँ। मेरा जीवन तुम्हारे हाथ में है। यदि तुम बाहर यह बात प्रकट कर दोगे, तो मैं बच जाऊँगा, नहीं तो मैं फाँसी पर चढ़ा दिया जाऊँगा। इस प्रर्थना से वह नौकर दयार्द्र हो गया और पत्र ले जाने के लिये तैय्यार हुआ। इस समय उनके धर्म ने रक्षा की। Kidnapped in London नामक छोटी पुस्तिका में उनकी हालत यों वर्णन की गई है।

"मैं बिलकुल निराश था। प्रार्थना से मुझे शान्ति मिलती थी। परन्तु दिन और विशेषकर रातें पहाड़ हो जातीं, इस समय यदि प्रार्थना करने को मुझे न मिलती तो शायद मैं पागल हो जाता। छूटने के बाद डाक्टर कैन्टली से मैंने कहा था कि प्रार्थना ही केवल एक आशा रह गई थी। १६ वीं अक्टूबर को प्रातःकाल प्रार्थना करने के बाद मुझे कैसी शान्ति मिली सन्तोष हुआ तथा विश्वास जम गया कि सब कुछ अच्छा ही होगा।"

१७ वीं अक्टूबर की रात को साढ़े ग्यारह बजे डाक्टर कैन्टली के दरवाजे की घंटी बजी। जब तक भीतर से कोई उत्तर मिलता तब तक एक पत्र दरवाजे के अन्दर फेंक कर कोई चलता बना। पत्र में लिखा था—

"आप का एक मित्र चीनी राजदूत गृह में आखिरी रविवार से कैद है। उसको चीन भेजने के लिये तैय्यारी हो रही है वहाँ पर निःसन्देह उसे फाँसी मिलेगी। उस गरीब आदमी के लिये यह बड़े दुख की बात है और यदि कोई कार्य बचाने के लिये शीघ्र न किया गया तो उसे लोग चीन भेज ही देंगे। कोई जानने भी न पायेगा। यह सच्ची बात है। मैं अपना हस्ताक्षर नहीं कर सकता। जो कुछ आप करना चाहें वह जल्दी ही करें। उसका नाम सनयातसेन है।'

डाक्टर कैन्टली उसी रात को स्कौटलैण्ड यार्ड के खुफिया पुलिस के पास गये। परन्तु वहाँ से उत्तर मिला कि इससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। दूसरे दिन सवेरे डाक्टर कैन्टली पैट्रिक मैन्सन के यहाँ गये। वहाँ पर चीनी राजदूत का अंग्रेज नौकर सनयातसेन का पत्र लेकर पहुँचा।

"मैं अन्तिम रविवार को दो चीनी आदमियों के द्वारा

जबर्दस्ती चीनी राजदूत गृह में ले आया गया हूँ। मैं यहाँ कैद हूँ। मुझे दो या एक दिन में चीन भेज देंगे। मुझे फाँसी जरूर हो जायेगी।"

दोनों डाक्टर फिर खुफिया पुलिस के पास पहुँचे। परन्तु पुलिस ने उन्हें इस मामले को चुपचाप दबा देने के लिये कहा। डाक्टर कैन्टली इस पर राजी नहीं थे। उन्होंने इसकी खबर प्रेस में दे दी। टाइम्स अखबार ने भी इस खबर को दबा दिया। सोमवार को डाक्टर कैन्टली परराष्ट्र विभाग में पहुँचे। वहाँ पर मामला धीरे २ चलने लगा। ओल्डवेली के जज ने हबीयस कौरपस रीट जारी करने से भी इन्कार कर दिया। परन्तु 'ग्लोब' का सम्वाददाता डाक्टर के पास पहुँचा और उनसे सभी बातें पूछीं। सोमवार की सन्ध्या को 'ग्लोब' में यह खबर निकली और दूसरे ही दिन चीनी राजदूत गृह को प्रेस के प्रतिनिधियों से फुरसत नहीं मिली। राजदूतगृह के अंग्रेज सलाहकार ने सनयातसेन के छिपा रखने की बात स्वीकार कर ली। दूसरे दिन सभी अखबारों में इसकी खबर निकल गई। चारो तरफ से राजदूतगृह पर बौछार पड़ने लगी।

उस समय तक परराष्ट्र विभाग के द्वारा प्रधान सचिव लार्ड सलिसवेरी को भी पता लग गया। लार्ड सलिसवेरी ने एक सन्देशा चीनी राजदूत के पास भेजा कि सनयातसेन के पकड़ने में गलती की गई है जिससे अंग्रेजी कानून के तोड़ने की बू आती है। इसलिये राजनीतिक सलाह दी जाती है कि सनयातसेन को शीघ्र मुक्त करना ही ठीक है। २३ तारीख दिन शुक्रवार को परराष्ट्र विभाग के सन्देश-वाहक के हाथ सनयातसेन हवाले कर दिये गये। सनयातसेन ने

स्कौटलैण्ड यार्ड को अपना बयान दिया और डाक्टर कैन्टली के घर पहुँचा दिये गये।

इस घटना से सनयातसेन की प्रसिद्धि चारों तरफ हो गई। वह कहीं भी रहें परन्तु लोग उन्हें बागीसमझ जाते थे। प्रवासी-चीनी लोगों में उनके परिचय की जरूरत न रही। मांचू राजवंश का खुफिया बराबर उनके पीछे लगा रहता। सनयातसेन के मन में एक नई बात पैदा हुई। उन्हें ईश्वर के प्रभुत्व पर विश्वास हो गया। उनके दिल में यह बात बैठ गई कि उनका जन्म ईश्वर ने चीन के उत्थान के लिये किया है। वह अपने उद्देश्य को कभी न कभी अवश्य ही पूरा करेंगे। ईश्वर की इच्छा है कि उस कार्य्य को वह पूरा करें अन्यथा इस बार मांचू पंजे से छुटना सहल नही था।

सनयातसेन के क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ २ सुधार वादी आन्दोलन भी चीन में प्रारम्भ हुआ। इसके नेता कांग-यू-वी थे। यह एक विद्वान आदमी थे। १८६१ में कनफू-सियसका नया अर्थ लगाकर लोगों को बतला दिया कि कन-फूसियस सुधारवादी थे। कांग-यू-वी को नये अर्थ से पुराने ख्याल वाले विद्वानों पर काफी चपत लगी। वह पाश्चात्य शिक्षा के पक्ष में थे। कांग-यू-वी ने कैन्टन में एक स्कूल खोल रखा था। उस स्कूल में वहुत लड़के आने लगे थे। लियांग-ची- चाव नाम का एक शिष्य भी वड़ा तेज निकला था। कांग-यू-वी अपने शिष्य के साथ प्रान्तीय परीक्षा में बैठे और स्वयं ही प्रथम आ गये। चीन और जापान की लड़ाई का इन पर भी प्रभाव पड़ा। कांग-यू-वी ने पैम्फलेट पुस्तकें, मैगजिन तथा अखबारों के द्वारा सुधार के लिये आन्दोलन करना प्रारम्भ किया। पढ़े लिखे चीनी विद्वानों ने चारों

तरफ से आवाज उठाई। लियांग-ची-चाव ने १८९६ में संघाई से एक अखबार भी निकालना शुरू किया। कांग-यू-वी ने १८९७ में एक और पुस्तक प्रकाशित की। कनफुसियस-'सुधारवादी'—इस पुस्तक ने चीन की काया पलट कर दी। एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोग इस पुस्तक को पढ़ने लगे और प्रभावित होने लगे। नया सम्राट पाश्चात्य शिक्षा का बड़ा प्रेमी था। कांग यू-वी ने उसके यहाँ प्रवेश पा लिया। सम्राट को सुधार के लिये काफी उत्तेजित किया। सम्राट ने नये २ कानून जारी किये। सिविल और मिलिटरी सभी विभागों में नये २ कानून बने। इससे कनजरवेटिव लोग घबड़ाने लगे। डोवाजर रानी ने एकाएक धावा मार कर सम्राट को कैद कर दिया। सम्राट के सलाहकारों को जेल भिजवा दिया। जितने नये कानून बने थे उन्हें फिर से वापिस ले लिया गया। कांग-यू-वी एक अंग्रेजी गनबोट पर सवार होकर भाग गये। लियांग-ची-चाव ने जापान में आश्रय लिया। १९०४ में सम्राज्ञी की ७० वी वर्षगाँठ पर जब राजनीतिक कैदियों की रिहाई हुई थी तब भी उसने कहा था कि तीन आदमियों को डोवाजर रानी क्षमा प्रदान नहीं कर सकती। उन तीनों में कांग-यू-वी, लियांग-ची-चाव और सनयात सेन थे।

जापान में तैय्यारी

१८९५ से १८९८ तक सनयातसेन यूरोप में इधर उधर घूमते रहे। यह वह समय था जब वह अपने देश से निकाल दिये गये थे। लौटने की कोई आशा नही रह गई थी। उम्र अभी केवल तीस वर्ष से कुछ अधिक थी। वह समय उनके लिये अति कष्टकर था। यूरोप में उस समय चीन के विद्यार्थियों की संख्या इनी गिनी थी। सरकार की तरफ से ३० विद्यार्थी सन् १८ ७०-८० के लगभग विदेश में भेजे गये थे और वे भी शिक्षा समाप्त कर अपने देश लौट चुके थे। अत: डाक्टरी की भी कोई उम्मीद नहीं थी। उन्हें ज़बरन मितव्ययी होना पड़ा था। ऐसे समय में मित्रों ने साथ कभी नहीं छोड़ा।

इनकी आवश्यकतायें थोड़ी थी। हफ्तों यह थोड़े से चावल और पानी पर गुजर कर लेते थे। कई सौ मील इन्होंने पैदल ही चलकर तय किया था। इस तरह कठिनता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। परन्तु इङ्गलैण्ड और यूरोप के जल वायु में केवल चावल और पानी पर रहना मुश्किल था। इतनी कठिनता रहते हुए भी सनयातसेन का काम चल ही जाता था। अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति को आर्थिक उपार्जन में लगाते नही पाया गया। इसके लिये नि.सन्देह हवाई में रहने वाले बड़े भाई को श्रेय था।

अवकाश के समयों में डाक्टर सनयातसेन भिन्न २ विषयों का अध्ययन करते रहते थे। इन्हें प्राय' किताबों को उलटते पुस्तकालय में लोग देखा करते थे। जितना विविध ग्रन्थों के देखने का अवसर इन्हें मिला था उतना बहुत कम लोगों को मिलता है। पुस्तकालयों में उन्हें दूसरे क्रान्तिकारियों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हेनरी जार्ज और कार्लमार्क्स की पुस्तकें पुस्तकालय में लेकर खूब अध्ययन करते थे। साम्यवादी साहित्य के अध्ययन से इनके विचारो में काफी परिवर्तन हुआ। यूरोप में भ्रमण करने के बाद सनयातसेन ने अपनी आत्म जीवनी में लिखा है कि यूरोप धन और ऐश्वर्य्य के रहने पर भी सुखी नही है। वहाँ के उन्नतिशील व्यक्ति किसी नये समाज का निर्माण करना चाहते हैं जिसका अर्थ क्रान्ति है। यूरोप में लोकतन्त्र की माँग पहले हुई थी और उसके बाद साम्यवाद की पुकार हुई। परन्तु सनयातसेन के लिये चीन में लोकतन्त्र और साम्यवाद का आगमन साथ ही साथ चलता दिखाई देता था।

यह ठीक २ पता नहीं कि सनयातसेन किस रास्ते से जापान लौटे। जो हो १८९६ में वह जापान पहुँच गये थे। चीनी सरकार ने वृटिश सरकार से लिखा पढ़ी करा कर सनयातसेन को हांगकांग में रहने न दिया। जापान ही सनयातसेन के लिये अच्छा-सा स्थान था। याकोहामा में चीनी कनसुलेट के पास ही अपने रहने का प्रबन्ध किया। यहीं से मांचू राजवंश के विरुद्ध अपना आन्दोलन करने लगे। याकोहामा में उस समय २५०० चीनी थे। नागासाकी, ओसाका और कोबी में चीनी अत्यधिक संख्या में रहते थे। परन्तु सनयातसेन के कार्य्यक्रम की तरफ बहुत कम लोगों का झुकाव हुआ। जापान में रह कर जापानियों के अध्ययन का अवसर इस बार इनको प्राप्त हुआ। लिबरलदल के नेताओं से इन्हें मित्रता-सी हो गई थी। सनयातसेन ने लिबरल दल के नेता इनुकाई से मित्रता कर ली थी। इनुकाई ने सनयातसेन को याकोहामा से टोकियो बुला लिया था।

सनयातसेन के क्रान्तिकारी आन्दोलन के पहले भी चीन में मांचू राजवंश के विरुद्ध बगावतें हुआ करती थीं। मांचू राजवंश में कांग-शी और चीन लंग नाम के दो सम्राट हुए जिन्होंने मांचू वंश को चीन की प्रजा से मिलाने की बड़ी चेष्टा की थी। कुछ दिनों के बाद आन्दोलनवाले या तो दब गये या चीन के दक्षिण प्रान्तों में भाग गये। इनका सगठन गुप्त रीति से चलने लगा। विशेषतः छोटे लोगों की श्रेणी में यह संगठन मौजूद था। टाई-पींग बगावत इसी संगठन का फल था। इधर सनयातसेन के मित्रों का भी क्रान्तिकारी आन्दोलन चला।

राष्ट्रीय क्रान्ति के लिये धीरे २ सामग्री एकत्रित हो रही थी। सरकार पर आक्षेप तथा आलोचना के लिये काफी मसाले वर्त्तमान थे। विदेशियों की हड़पने की नीति पर कोई रुकावट नहीं थी। रूस ने ट्रांस-साइबेरियन रेलवे के लिये मन्चूरिया में १८९६ में कनसेशन मंजूर करा लिया था। फ्रैंच और बेलजियन की एक सिनडिकेट १९०० में पेकिंग से हांकाऊ तक ट्रैंक लाइन की तैय्यारी में लगा था। जर्मनों के हाथ में शनटंग रेलवे का प्रबन्ध था। रेलवे कनसेशन के साथ २ खानों पर भी अधिकार दिये गये थे। इस तरह विदेशी व्यावसायिक कम्पनियों की वृद्धि से चीन की कनजर-वेटिव वृत्ति भी घबड़ा गई थी। बौक्सर बगावत विदेशियों ही के प्रति आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ था। इस आन्दो-लन में बड़े २ पदाधिकारियों का हाथ था। सम्राज्ञी डोवाजर का भी संकेत था। १९०० ईस्वी के कुछ ही महीनों में दो सौ अमेरिकन और यूरोपीय जनों की हत्या हो गई। आठ राष्ट्रों की एक सम्मिलित सेना पेकिंग पर बौक्सर हत्या का हरजाना लेने के लिये आगे बढ़ी। ज्यों २ सेना पास पहुँची त्यों २ पेकिंग दरबार भागने लगा। अन्त में समझौता होने पर चीन को एक बड़ा भारी कर्ज चुकता करना पड़ा। (३३३०, ०००, ०००) डालरसोना हरजाने के रूप में देना पड़ा। चीन तभी से उस कर्ज के भार से लदा हुआ है।

सनयातसेन ने बौक्सर घटना से लाभ उठाना चाहा। कैन्टन से १०० मील पूरब वाईचो नामक स्थान में बगावत करना निश्चय हुआ। चेन-शीह-लियांग ने सभी प्रबन्ध करना शुरू कर दिया। कहा जाता है कि उसके पास करीब दस हजार आदमी थे। सनयातसेन हांगकांग से चीन में आना

चाहते थे परन्तु अंग्रेजी सरकार ने आने नहीं दिया। तब वह फारमोसा गये और वहाँ पर जापानी गवर्नर ने उनका स्वागत किया और सहायता भी देने का वचन दिया। जापानी तरीके पर मिलिटरी तैय्यार की गई। जापान से शस्त्र भेजने के लिये आर्डर दिया गया। यह सोचकर कि सब कुछ तैय्यार हो गया सनयातसेन ने अपने मित्र को यह आर्डर भेजा कि कागंटन और फूकीन के सामुद्रिक नगरों पर कब्जा कर लो। १९०० में प्रसिद्ध धावा शुरू हुआ परन्तु शस्त्रों के नहीं पहुँचने से सारा प्रयत्न निष्फल हुआ। जापान में नई सरकार के होने से सनयातसेन का सारा कार्य्यक्रम फेल कर गया। नई सरकार ने सहायता देने से इनकार कर दिया। चेंग-शीह लियांग ने अपनी फौज को बर्खास्त कर दिया। सनयातसेन भी जापान लौट आये।

इधर चीन में १९०० ईस्वी के बाद से शिक्षा पद्धति में विशेष परिवर्तन हुआ। पुरानी चीनी प्रथा उठा दी गई। १९०३ में एक चीनी कमीशन यूरोप में शिक्षा पद्धति अध्ययन करने के लिये भेजा गया। १९०५ में राष्ट्रीय मंत्री के आधीन नया शिक्षा विभाग स्थापित हुआ। नये २ स्कूल और कालेज शुरू हुए। टीटसीन के कालेजों की वृद्धि की गई। शंघाई में नान-यांग कालेज निर्माण हुआ। पेकिंग में राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी स्थापित की गई। चीनी विद्यार्थी विदेशों में विशेष शिक्षा प्राप्त करने के लिये जाने लगे। जापान में चीनी विद्यार्थियों की भरमार हो गई। सन् १९०३ में इनकी संख्या बढ़ कर ६०० हो गई थी।

१९०१ और १९०२ में सनयातसेन जापान में क्या कर रहे थे मालूम नहीं। यह तो निश्चित है कि याकोहामा में

रहकर धीरे २ अपना राजनीतिक प्रभाव बढ़ा रहे थे। लोगों की प्रवृति में भी परिवर्तन हो रहा था। सनयातसेन अब एक विश्वासघाती की दृष्टि से नहीं देखे जाते थे परन्तु लोगों की श्रद्धा उनकी तरफ बढ़ने लगी थी। विशेषतः पेकिंग के अन्तर्राष्ट्रीय दण्ड के बाद से लोगों का ध्यान सनयातसेन की तरफ खिंच गया था। लियांग-ची-चावो की तीक्ष्ण लेखनी से भी लोग प्रभावित हो रहे थे। पेकिंग से कई बार हिदायतें आ चुकी थीं कि जापान में रहने वाले चीनी विद्यार्थियों पर नजर रखनी चाहिये। विद्यार्थियों में काफी जागृति हो गई थी। वू-ची-हुई और उसके एक साथी को देश से निकाल दिया गया था। नान-यांग कालेज भी प्रारम्भ से ही देश-प्रेमी विद्यार्थियों का केन्द्र हो रहा था। १६०२ में विद्यार्थियों ने हड़ताल की थी। सहानुभूति देने वालों में प्रोफेसर भी थे। निकाले हुए विद्यार्थी और मास्टर एक पृथक् ही कालेज स्थापित कर लिये थे जिसका नाम 'देश प्रेम करो कालेज' रखा गया था।

—※—

संसार भ्रमण का विचार

सन् १९०३ में सनयातसेन ने संसार भ्रमण करने का फिर विचार किया। फ्रेन्च लीगेशन के निमंत्रण पर अनाम के लिये प्रस्थान किया। हनोई में फ्रेन्च अफसरों से परिचय हुआ तथा कितने धनी चीनी व्यापारियों से भी मित्रता हुई। ये सनयातसेन के संगठन के सदस्य हो गये। वहाँ से लौट कर कुछ दिनों तक याकोहामा में रहे और १६०३ के अक्टूबर महीने में होनोलुलु के लिये प्रस्थान किया। हवाई में छः महीने तक रहे। उनका लड़का अब बारह वर्ष का हो चुका था और दो छोटी २ लड़कियाँ भी थी। हवाई में रहने

वाली चीनी जनता में क्रान्ति का बराबर प्रचार करते रहे तथा धन के लिये प्रार्थना किया करते थे।

उस समय सनयातसेन जहाँ जाते वहीं उनका स्वागत होता। उनके प्रति लोगों की प्रवृत्ति बदल चुकी थी। वह अब एक राष्ट्रीयता के प्रतिबिम्ब समझे जाते थे। उन्हें कहीं २ विरोध का भी सामना करना पड़ता था। कुछ लोग ऐसे भी थे जो क्रान्ति की जगह पर सुधार पसन्द करते थे। सुधारवादियों का प्रचार प्रवासी चीनी जनता में काफी चल रहा था।

कांग यू·वी की हालत भी बुरी हो गई थी। चीन और जापान में शरण नहीं मिली अन्त में कनाडा के प्रशान्त महा· सागर वाले किनारे पर आ बसे। कांग-यू·वी ने संसार का भ्रमण किया। उसका सुधारक दल काफी प्रभावशाली हो गया था। वह जहाँ जाता वहीं उसकी तूती बोलने लगती। धनी चीनी व्यापारियों में उसकी पूरी पूछ होती थी।

१९०३ की तेरहवीं दिसम्बर को सनयातसेन ने होनोलुलु के होटेल स्ट्रीट थियेटर में एक महति सभा में भाषण किया। डाक्टर सनयात का मुख्य विषय चीन की क्रान्ति था। १९०४ में जापान ने रूस से युद्ध छेड़ दिया। उस समय सनयातसेन जापान में नहीं थे। इनका विचार अमेरिका में जाने का था। परन्तु Exclusin Act के अनुसार इन्हें अमेरिका में प्रवेश पाना सहल नहीं था। उनके हवाई दोस्तों ने एक तरीका बतलाया। १८९८ में होनोलुलु संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में मिला लिया गया था। अतः १८९८ के पहले से भी होनोलुलु में रहने वाले चीनी को अमेरिकन नागरिक बनने का अधिकार हो सकता था। यदि इन्हें हवाई में जन्म

लेने का सर्टिफिकेट मिल जाता तो अमेरिका में जाने के लिये कोई रुकावट न होती। सनयातसेन ने १६०४ में एक अफीडेवीट आफिसर के सामने पेश किया जिसके आधार पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में जाने का सम्बन्ध हो गया। उस अफीडेवीट ने लेखकों के लिये एक अजीब समस्या खड़ी कर दी। १६१८ तक यही समझा जाता था कि सनयातसेन अमेरिकन नागरिक हैं। सनयातसेन ३१ मार्च १६०४ को 'कोरिया' जहाज से सर्टिफिकेट के साथ सैनफ्रैंसिसको के लिये रवाना हुए। परन्तु किसी भी पूर्वी देश के आदमी से इमीग्रेशन अफसर पूछ सकता था कि तुम चीनी या जापानी हो। सनयातसेन बड़े फेर में पड़ जाते थे। जापानी कहने में ही कल्याण था। एक वार सन्देह में किसी अफसर ने इन्हें तीन सप्ताह तक रोक रखा था। खैर यह हुई कि ये डिपोर्ट नही किये गये। 'सैन फ्रैसिसको एक्जामिनर' नामक अखबार में इनके आने की खबर छप गई। यों तो यह अपनी सच्ची आकृति छिपाये हुए थे। चीनी व्यापारियों ने विरोध की आवाज उठाई। सनयातसेन जनता की आँखों से छिपे रहे। उसी समय मांचू राजकुमार पू-लून किसी जलसे में चीन की तरफ से आये हुए थे। चीनी व्यापारियों को तरफ से स्वागत किया गया। राजकुमार जब न्यूयार्क की तरफ चले गये तभी सनयातसेन बाहर निकले। मांचू शाहजादे के आने से अमेरिकन सरकार ने ही सनयातसेन को पृथक रोक रखने का इरादा कर लिया था। यों तो लोग दो भागों में विभक्त हो ही चुके थे। एक वह समुदाय था जो कांग-यू-वी के सुधारवाद में विश्वास करता था और दूसरा सनयातसेन के क्रांति के पहलू पर था। सनयातसेन ने सैनफ्रैंसिसको के

वाशिंगटन स्ट्रीट थियेटर में एक ऐसा प्रभावशाली भाषण दिया कि चीनी कौनसल-जेनरल ने चीना टाउन वालों के नाम एक सूचना निकाली।

सनयातसेन जहाँ जाते वहाँ ही अपने मत का प्रचार करते। इनका प्रचार अधिकतर गरीब समुदाय में होता। जहाँ कहीं इनके देश के आदमी रहते वहाँ ये प्रचार करने के लिये पहुँच जाते थे। थोड़े हों या अधिक, इनका काम अवश्य ही होता था। कांग-यू-वी से सनयातसेन का पलड़ा मजबूत था। सनयातसेन ईसाई होने के नाते चीनी ईसाई तथा चीनी मिशनरियों से काफी सहानुभूति पाते थे। फिर भी सनयातसेन का सम्बन्ध गुप्त समितियों से था। अमेरिका में गुप्त समितियाँ काफी थीं। इनका मुख्य ध्येय मांचू राजवंश का विरोध था। समय के अन्तर से इनका संगठन ढीला पड़ गया था तो भी इनका अपना संगठन था ही। सनयातसेन इस तरह गुप्त समिति के सदस्यों से मिलकर क्रान्ति का प्रचार कर रहे थे। इस प्रचार से चीनी कौनसल जेनरल घबड़ा गये। वाशिंगटन के चीनी मंत्री ने यह सूचना निकाली कि जो लोग सनयातसेन के देश प्रेम समिति से सम्बन्ध रखेगा उसके घर वाले व्यक्ति चीन में कैद कर लिये जायेंगे और धन छीन लिया जायगा।

परन्तु इससे डरने वाला कौन था? सनयातसेन ने इस आज्ञा का जोरदार खण्डन किया कि देश प्रेम समिति में अस्सी फीसदी चीनी हैं। डाक्टर सनयातसेन न्यूयार्क में कुछ दिन तक रहे। भ्रमण करते हुए भी सनयातसेन का ध्यान अपनी जनता पर था। इनके लिये एक ही चीज दुनियाँ में दिखाई पड़ती थी। वह जनता थी, जनता के लिये

उत्सर्ग हो जाना तथा जनता के द्वारा ही सरकार की स्थिति सुधारना चाहते थे। सनयात ने जनता के तीन सिद्धान्त लोगों के सामने रखना अपना कर्त्तव्य समझ लिया था। कांग-यू-वी भी सनयातसेन की तरह भ्रमण करते थे। इनका स्वागत बड़े ठाटबाट से होता था। वाशिंगटन में प्रेसिडेन्ट रुजवेल्ट ने इनका सन्मान किया। जहाँ जाते वहाँ इनका बड़ा सन्मान होता। परन्तु भविष्य इनके हाथ में नहीं था।

सनयातसेन का ध्यान लड़कों की तरफ यूरोप में आकर्षित हुआ। पहली बार जब सनयातसेन भ्रमण करने आये थे उस समय लड़कों की संख्या कुछ नहीं थी। इस बार यूरोप के सभी बड़े राष्ट्रों की राजधानियों में चीनी विद्यार्थी मिले। सभी में कौमी ख्यालात पैदा हो गये थे। ब्रुसेल्स में सनयातसेन ने विद्यार्थियों के बीच एक बहुत अच्छा भाषण किया। भाषण का ऐसा प्रभाव पड़ा कि सभी शहरों में जहाँ २ विद्यार्थी थे उन्नतिशील चीना समिति के सदस्य बन गये। ब्रुसेल्स में तीस, बर्लिन में बीस तथा पेरिस में दश विद्यार्थी सदस्य बन गये। सनयातसेन सिंगापुर के रास्ते सन् १९०५ में जापान लौटे। जापान उस समय रूस से जीत चुका था। चीन के नवयुवक अधिकाधिक संख्या में जापान चले आ रहे थे। यहाँ तक कि महीने में हजार की संख्या हो गई थी। जापान की विजय से चीन को बड़ा धैर्य्य मिला। आशा का संचार हुआ। जापान ऐसे छोटे और नये राष्ट्र से यूरोप का एक वृहद्, राष्ट्र नीचा हो जाय कितनी ताज्जुब की बात थी।

जापान उस समय देश निकालों से भर गया था। पोर्टसमाउथ की सन्धि के बाद एक चीनियों की सभा हुई। यह

एक सफलीभूत सभा हुई थी। सभा में सभा के मन्तव्य पढ़े जाने के बाद सनयातसेन का भाषण हुआ।

भाषण समाप्त होने के बाद सभी की राय से एक संगठन कायम हुआ। जिसका नाम क्रांतिकारी भाई बन्दी (Revolutionary Brotherhood) था। क्रान्ति शब्द पीछे हटा दिया गया। उसमें सभी को शपथ लेने की आवश्यकता पड़ती थी। शपथ के बहुत कठिन होते हुए भी कई सौ लोग प्रारम्भ में ही उसके सदस्य हो गये। चीन के अठारह प्रान्तों में सतरह प्रान्तों का प्रतिनिधित्व था। सनयातसेन का यह नया संगठन बिल्कुल क्रांतिकारी था। उन्नतिशील चीना समिति से और प्रस्तुत संगठन में बहुत अन्तर था। इस संगठन के चार मुख्य उद्देश्य थे। मांचू राजवंश को हटाना, चीन को चीनियों के लिये सुरक्षित करना, प्रजातंत्र स्थापित करना तथा जमीन के वितरण में साम्यकरण। इस कार्य्यक्रम में क्रांतिकारी उद्देश्यों को छोड़कर साम्यवादी क्रम को अपनाने के विचार से मालूम पड़ता कि सनयातसेन के ऊपर कार्ल मार्क्स का कितना प्रभाव पड़ा था।
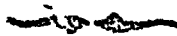
क्रान्ति की असफलता

चीन की राज्य क्रान्ति सैनिक सिपाहियों से नही जीती गई थी। सनयातसेन ने अपनी आत्म जीवनी में कम से कम दश क्रान्तिकारी आन्दोलनों की असफलता के विषय में लिखा है। सनयातसेन का हिस्सा केवल एक ही में था। चीन में न जाने कितनी बार बगावतें हुई। कभी एक हिस्से में तो दूसरी बार दूसरे हिस्से में इन असफलताओं का प्रभाव बहुत दुःखजनक होता था परन्तु इससे एक अप्रत्यक्ष लाभ यह था कि देश से क्रान्ति की लहर शान्ति न होने पाती थी। क्रान्ति का भाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही दिखाई देता था।

१६०६ में हुनन प्रान्त की सीमा पर शपथ लेने वाले दल की तरफ से एक बगावत हुई। प्रधान कार्य्यालय से अभी कोई इन्हें आज्ञा नहीं मिली थी। भाव से प्रेरित होकर इनलोगों ने बगावत कर दी थी। टोकियो के प्रधान कार्य्यालय में सनयातसेन से कितने ही नवयुवक आते और उनसे प्रार्थना करते थे कि उन्हें जाने की आज्ञा मिल जाय। परन्तु कोई प्रबन्ध करने के पहले ही मांचू राजवंश की तरफ से बगावत दबा दी गई। इस असफलता से नवयुवकों को यह ज्ञात हो गया कि संगठन में एकता और केन्द्रीयता की आवश्यकता है। क्रान्तिकारी दलों को एक सूत में बाँधकर केन्द्रीय समिति की आज्ञा से बढ़ना हितकर होगा। प्रधान कार्य्यालय में एक विशेष समिति के आधीन काम सुपुर्द कर दिया गया। चीन के दक्षिण-पश्चिम हिस्से पर जो धावे हो रहे थे उसे बन्द कर देने के लिये आज्ञा हुई। चन्दा एकत्रित करने के लिये भी आयोजन हुआ विशेषकर प्रवासी चीनी जनता से। संगठन के दृढ़ करने में सनयातसेन का ही हाथ था। १६०६ के अन्तिम भागों में चन्दा एकत्रित करने के लिये इन्होंने बहुत परिश्रम किया। कैन्टन में वाइसराय के ऊपर बम फेंकने में भी कुछ इनका इशारा था। यह भी असफल रहा। कैन्टन में स्वयं सनयातसेन गुप्त रूप से कार्य्य का संचालन करते थे। परन्तु सरकार को इस रहस्य का पता लग गया और यह वार भी खाली गया। सनयातसेन को यहाँ से नदी की राह भागना पड़ा। स्त्रियों ने नाव चलाकर सनयातसेन को बचाया था।

सनयातसेन अपने दो मित्रों के साथ जिनके नाम वाग-चोंग-वी और हू-हैनमीन थे अनाम के लिये रवाना हो गये।

हनोई में उनका प्रधान कार्य्यालय स्थापित हुआ। जिस तरह प्रारम्भ में क्रांन्तिकारी आन्दोलन को जापान से सहायता मिली थी उसी तरह इस बार फ्रेन्च से मिलने की आशा थी। यहाँ पर इन्हें फ्रेन्च सैनिक प्रवीण मिले जिनके द्वारा दक्षिण चीन और यांग रीसी के प्रदेशों की जाँच शुरू हुई। वूचंग नामक स्थान में क्रान्तिकारियों की एक चर्च में गुप्त सभा हुई। उसमें एक फ्रेन्च अफसर का भी भाषण हुआ। इस सभा में किसी तरह एक इम्पीरियल सेना का जनरल कमांडिंग अफसर घुस पड़ा था और सभी बातें वाइसराय को रिपोर्ट कर दी। वाइसराय ने फ्रेन्च सरकार के पास इसकी उलाहना भेजी परन्तु इसका कोई असर नहीं हुआ। अनाम में फ्रेन्च सैनिक अफसर चीनी क्रान्तिकारी सेना की शिक्षा में लगे हुए थे। क्रान्तिकारी संगठन के जापानी कार्य्यालय को शस्त्र भेजने के लिये आर्डर भेजे गये। वहाँ प्रधान कार्य्यालय में भी आपस की फूट थी और आर्डर का कोई उत्तर नही मिला। फ्रेन्च राज्य से सनयातसेन का क्रान्तिकारी आन्दोलन खूब अच्छी तरह चल रहा था। १६०७ से १९०८ तक चीन पर धावा मारने का प्रयत्न होता रहा। सनयातसेन का मददगार हुएन सींग था जिसको जापान मे सैनिक शिक्षा मिली थी। हुएन सींग बड़ा साहसी पुरुष था। उसके उद्योग से क्रान्तिकारियों के लिये एक वीरता का नियम चलाया गया था जिसका मतलब केवल 'मरने के लिये साहस करो' था उसी समय दक्षिण चीन में कांगसी प्रान्त के निकट पहाडी लोगों में कर देने के विषय में सरकार से चख चख चल रही थी। सनयातसेन ने इस मौके को भी अपनाने की चेष्टा की। अपने दो प्रवीण नायकों

को मांचू सेना में क्रान्ति फैलाने के लिये भेजा। सनयातसेन को इस बार भी बड़ी आशा थी। १९०७ की जुलाई में सनयातसेन की सेना ने कर-बन्दी आन्दोलन वाले जिलों पर धावा किया पर फिर भी जापान से शस्त्र न पहुँच सका। क्रान्तिकारी सेना पीछे हटी और पहाड़ों में जाकर छिप गई। दूसरी बार भी चढ़ाई करने का प्रयत्न हुआ परन्तु चीन सरकार की अत्यधिक सेना ने क्रान्तिकारियों को मार भगाया। मांचू सरकार ने फ्रेन्च सरकार से सनयातसेन को फ्रेन्च राज्य से निकालने के लिये लिखा पढ़ी की। सनयातसेन स्वयंही सींगापुर के लिये रवाना हो गये। हुपनसींग सीमाप्रान्त पर फिर चढ़ाई के लिये भेज दिये गये। केवल दो सौ क्रान्तिकारियों के साथ कई महीनों तक अपना कार्य्य करते रहे। १९०८ में एक नये क्रान्तिकारी ने जिसने कोई तजुर्बा हासिल नहीं किया था और जो होकूगो यूनन की सीमा पर पड़ता है चढ़ाई कर दी थी। सीमाप्रान्त का सेनापति मार डाला गया और कई हजार सिपाही कैद किये गये। परन्तु क्रांतिकारी बहुत दिन नहीं ठहर सकते थे। उन क्रान्तिकारियों की सहायता के लिये हुपनसींग को भेजने की चेष्टा फ्रेन्च अधिकारियों ने विफल कर दी। क्रान्तिकारी सेनापति को यूनन लौट आना पड़ा। उस समय उसके साथ छः सौ सैनिक सिपाही हो गये थे। यूनन घटना से फ्रेन्च अधिकारी सावधान हो गये। अपने राज्य में इतने क्रान्तिकारियों को ठौर देने तथा उनके कार्य्य क्रम को कार्य्यान्वित होने देना खतरे से खाली नहीं समझा गया। क्रान्तिकारियों के नेताओं तथा छः सौ सैनिक सिपाहियों को सींगापुर भेज दिया गया। सींगापुर के अंग्रेज अधिकारी उन्हें अपने यहाँ उतरने देना नहीं चाहते

थे। जहाज कितने दिन रोक रखा गया और अन्त में उन्हें उतरने को इज़ाजत मिली। इसके बाद दो वार और किये गये। १६१० और १६११ में हुएनसींग ने अपने शपथ वाले साथियों के साथ कैन्टन पर धावा मारने की कोशिश की। इन दोनों चढ़ाइयों में क्रान्तिकारियों की काफी क्षति हुई। इनके अच्छे २ नवयुवक तथा शिक्षित कार्य्यकर्त्ता मारे गये। कैन्टन पर चढ़ाई करते समय इनलोगों ने बड़ी वीरता की थी। पिस्तौल और बम के व्यवहार से पाँच घंटो तक सरकारी फौज का सामना किया। सरकारी इमारत नष्ट कर दी गई। युद्ध समाप्त होने के बाद तैंतालीस क्रान्तिकारी नवयुवक मरे पाये गये। हुएनसीग कुछ बचे हुए क्रान्तिकारियों के साथ भाग गया। यह घटना 'सत्तर शहीद' के नाम से पुकारा जाता है। कैन्टन में इनके त्याग का स्मारक चिन्ह बना हुआ है और राष्ट्रीय चीन २६ मार्च को प्रति वर्ष इस दिन छुट्टी मनाता है।

प्रजातंत्र की स्थापना

१९११ की क्रान्ति के सफल होने के कई कारण थे। प्रवासी चीनी जनता ने सनयातसेन को सदैव अपनी सहानुभूति और पैसे से सहायता पहुँचाई। प्रवासी चीनियों में क्रान्तिकारी संगठन पहले से ही वर्त्तमान था जिसमें सनयातसेन ने दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था। चीन में या चीन के निकटवर्ती स्थानों में क्रान्तिकारियों के कार्य्य क्रम पर कड़ी नजर थी या उन्हें रहने के लिये स्थान न था तौ भी प्रवासी चीनियों में क्रान्ति की लहर पूर्ववत् थी। कैन्टन की हार के बाद कार्य्यकर्त्ता निरुत्साह हो रहे थे और सनयातसेन ने उनको उत्साहित करने के लिये पेनांग में उनकी एक

सभा की सभी लोगों को भविष्य के लिये घूम २ कर चन्दा एकत्रित करने के लिए भेजा। पेनांग में ही एक रात को आठ हजार डालर वसूल हो गये और कुछ ही दिन के बाद पचास हजार इकट्ठा हो गया। वे चारों तरफ स्ट्रेट-स सेटलमेन्ट इत्यादि जगहों में घूम २ कर चन्दा एकत्र करते और सभी जगह उन्हें वचन मिला करता था। सनयातसेन को किसी भी उपनिवेश में जाने का हुक्म नहीं मिला। हांगकांग इन्डो-चीन, तथा जापान किसी भी सरकार ने अपने यहाँ प्रवेश न होने दिया। इस बार जब चीन के इर्दगिर्द कहीं भी जगह न मिली तब यूरोप के लिये रवाना हो गये। यूरोप में बैंकरों के मार्फत १००,००० कर्जा का प्रबन्ध किया। अमेरिका में भी गये और अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा अपने कार्य्य में सफलता प्राप्त करते गये।

सनयातसेन की चतुरता सैन-हो-हुई नामक गुप्त समितियों से मिल जाना था। ये समितियाँ काफी संगठित थी। इनके उद्देश्य और सनयातसेन के उद्देश्य में सामंजस्य हो गया था। बल्कि सनयातसेन के कार्य्यों से वह पुराना भाव नये रूप में पनपने लगा था। सींगापुर, हांगकांग, और स्ट्रेटस सेटलमेंट, इत्यादि स्थान में गुप्त समितियों का संगठन बड़ा दृढ़ था। ये कभी २ उपनिवेशों की सरकार से भी लड़ बैठते थे। दक्षिण चीन में भी गुप्त संगठन मौजूद थे। विशेषतः कागटंग प्रान्त तो इसका जन्म स्थान ही था।

एक दूसरी गुप्त समिति भी थी जिसने क्रान्ति में काफी सहयोग दिया था। इसका नाम को-लाअ-हुई (भाई और बड़ों को समिति) था। इसका प्रधान संगठन हूनन प्रान्त में था। सैनिक सिपाहियों में इसका प्रचार था। इस संगठन

का काम गुप्त रूप से हुआ करता था। हरएक प्रान्त में इसके सदस्य थे। डाक्टरों के रूप में लोग इधर, उधर घूमकर समिति के प्रस्ताव या हुक्म को चारों तरफ पहुँचाया करते थे। सनयातसेन इस संगठन के भी सदस्य थे। इस संगठन का मुख्य काम साम्राज्य की सेना में होता था। सरकार की तरफ से जो विद्यार्थी सैनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये जापान गये थे वे भी क्रान्तिकारी संगठन के सदस्य थे। नानकिंग और वूचंग की सेना में सनयातसेन का दावा था कि कप्तान को छोड़कर नीचे के सभी अफ़सरों से किसी न किसी तरह का समझौता हो चुका था। सनयातसेन को क्रान्ति के सफल होने की आशा और भी बढ़ गई जब चीन का शिक्षित समुदाय भी क्रान्ति की तरफ झुक गया। चीन ही क्या किसी भी देश में शिक्षित वर्ग ही स्वभावतः देश का अगुवा बनता है। सनयातसेन ने जापान में विद्यार्थियों को अपनी तरफ मिलाकर क्रान्तिकारी भाईबन्दी का संगठन कर लिया।

उनदिनों छोटे २ पैमफलेट-पुस्तिकायें, हैन्डबिल इत्यादि खूब बँटा करते थे। प्रचार के लिये सामग्री की कमी नहीं थी। यूरोपीय विज्ञान को सीखने की आवश्यकता, जापान की उन्नति, मांचूराजवंश तथा अधिकारियों की घूसखोरी और निकम्मापन, विदेशी राष्ट्रों से समझौते करने का भद्दा-रूप, युद्धों में चीन का अपमान, चीन देश का विदेशियों के हाथ में धीरे २ जाना इत्यादि बहुत सी चीजें थी।

इतनी सामग्री के रहते हुए भी जनता के हृदय से पुराने विचार को बदलना सहल नहीं है। अतः जातीयता की पवि-

त्रता के नाम पर लोगों के भाव उभाड़े जाते थे। इसमें काफी सफलता मिलती थी।

सन् १९०५ में एक सरकारी कमीशन यूरोप में वैधानिक अध्ययन के लिये भेजा गया। सन् १९०६ में वह कमीशन लौटा और सुधार के लिये सिफारिश की। सुधार का क्रम यह था कि पहले प्रान्तों में प्रान्तीय व्यवस्थापक सभायें स्थापित की जाये जिनका अधिकार प्रस्ताव पेश करना, अपना मत प्रकट करना तथा सलाह देना रहेगा। इसके बाद राष्ट्रीय व्यवस्थापक सभा भी उसी ढंग और अधिकार के साथ स्थापित की जाय। जब सदस्यों को तजुर्बा हो जाय तब उन्हें पूर्ण व्यवस्थापक अधिकार दिये जायें। यह सब कार्य्य नव वर्ष के लिये रखा गया। इन नव वर्षों के अन्दर बहुत से सिविल और सैनिक परिवर्तन के नियम रखे गये थे। १९०८ की ५ वीं नवम्बर को सम्राज्ञी डोवाजर जू-सी मर गई। सम्राट क्वांग-सू भी सम्राज्ञी के मरने के एक दिन पहले मर गये। उसके स्थान पर एक छोटा सा बच्चा चीन का सम्राट घोषित हुआ। उस लड़के का पिता रीजेन्ट घोषित किया गया।

रीजेन्ट ने सबसे पहला काम यह किया कि उस समय के सबसे प्रधान और शक्तिशाली राजनीतिज्ञ यूवान-शीह-काई को बर्खास्त कर दिया। कुछ लोगों ने इस घटना को सुधार कार्य्यक्रम में रोड़ा समझा। परन्तु कांग-यू-वी ने पेनांग से यह खबर भेजी कि यूवान का बर्खास्त होना उपयुक्त है। यूवान-शीह-काई पर यह अपराध लगाया गया कि सम्राज्ञी को इसी ने सम्राट के मरवा देने के लिये उसकाया था। रीजेन्ट ने यह घोषणा की कि यूवान-शीह-काई के

बर्खास्त होने से सुधारों में कोई अड़चन न होगी। अक्टूबर १६०९ में प्रान्तीय व्यवस्थापक सभाओं की बैठकें हुईं। इनके अधिकार केवल सलाहमात्र थे परन्तु आक्षेप विरोध और सिफारिश करने का अधिकार तो दिया ही गया था। १६१० के अक्टूबर में राष्ट्रीय व्यवस्थापक सभा की बैठक हुई। इस सभा का पहला कार्य्य यह था कि नव वर्ष के कार्य्यक्रम को घटा कर पांच वर्ष करा दिया। १६१३ में पूर्ण व्यवस्थापक अधिकारों के राष्ट्रीय पार्लमेण्ट के मिलने का समय निश्चित किया गया। परन्तु लोग इससे सन्तुष्ट नहीं हुए। दूसरे साल राष्ट्रीय असेम्बली की बैठक हुई और रीजेन्ट से खींचातानी शुरू हो गई। इस खींचातानी से क्रांति ने और भी जोर पकड़ लिया। इसी समय एक और घटना घटी जिससे क्रांति को और उत्तेजना मिल गई। सरकार का एक नया कार्य्यक्रम रेलवे का राष्ट्रीय सरकार के संरक्षण में लाने का प्रस्ताव था। चीन में प्रान्तीय भाव ज्यादा प्रकट रहता है। राष्ट्रीय सरकार के हाथ में कोई ऐसा अधिकार शीघ्र देना नहीं पसन्द करेंगे जो उनके अधिकार में कुछ दिनों से हो चुकी हो। पश्चिमी चीन में विशेषतः जेचुवान प्रान्त में रेलवे आन्दोलन ने काफी जोर पकड़ा। यह आन्दोलन और प्रदेशों में फैलने लगा। राष्ट्रीय असेम्बली और शासक दल में इस प्रस्ताव पर विरोध खड़ा हो गया। इसी समय १६११ की ११ वीं अक्टूबर को हैंकाउ में रसोयन कनसेशन क्षेत्र के भीतर गुप्त शस्त्रागार स्थान में बम का विस्फोट हुआ। वूचंग के वाइसराय ने तीस आदमियों को कैद कराया और बहुत से शस्त्र और कागजों पर कब्जा कर लिया।

दूसरी तरफ प्रान्तीय शस्त्रागार से चोरी करने के जुर्म में आठ सैनिक सिपाहियों को फाँसी दी गई। यही सिगनल था। साम्राज्य सेना जिसको क्रान्तिकारियों ने मिला लिया था प्रकट रूप में बगावत कर दी। वाइसराय का राज्य प्रासाद् बोमवार्ड कर दिया गया। वाइसराय भाग खड़े हुए। ११ अक्टूबर को वूचांग क्रान्तिकारियों के हाथ लग गया। ली-यूवान-हंग नामक एक चीनी को लोगों ने अपना सेनापति नियुक्त किया। दूसरे दिन हांगयांग नदी के उस पार लोहे के पुतली घर पर जहाँ शस्त्र तैय्यार होते थे कब्ज़ा कर लिया। हुपे की प्रान्तीय असेम्बली ने उनका साथ दिया। हैंकाऊ भी उनके कब्जे में आ गया। क्रान्तिकारियों ने एक घोषणा निकाली कि सभी प्रान्तों को बगावत कर देना चाहिये। चारो तरफ प्रान्तीय असेम्बलियों की बैठकें हो रही थीं। पेकिंग सरकार ने यूवान-शीह-काई को पुनः वाइसराय के पद पर आसीन किया। परन्तु यूवान-शीह ने सरकार को कोई सहायता नही दी। वह इस बार अपना अधिकार सुदृढ़ करना चाहते थे। उन्हें सेना का सेनापति बना दिया गया। यूवान-शीह-काई क्रान्तिकारियो को दबाना ही नहीं चाहते थे परन्तु उनसे समझौता करके वैधानिक राज-तंत्र कायम रखना चाहते थे। रीजेन्ट ने भी माफी की घोषणा की। छोटे सम्राट की तरफ से राज्य को पूर्ण विधान देने का बचन दे दिया। साम्राज्य सेना वूहन के नगरों को क्रान्तिकारियों से छिनने के लिये एकत्रित की गई। इसमें कुछ सफलता भी मिली। हैंकाऊ जला दिया गया। परन्तु क्रान्ति की लहर यांग-टी-सी प्रदेश मे एक नगर से दूसरे नगर में बिजली की तरह फैल रही थी। जब तक यूवान-

शीह-काई ने प्रधान मंत्री का पद ग्रहण किया तब तक बहुत से प्रान्त कैन्टन के क्रांतिकारियों के हाथ में आ गये। नानकिंग में बड़ी भारी मुठभेड़ हुई। तार्तर नगर जला दिया गया। दूसरी दिसम्बर को नानकिंग भी वागियों के कब्जे में आ गया।

सियानफू और शेंसी में मांचू लोगों की हत्या की गई। यह क्रान्ति का जातीय जोश था। बागी नेताओं ने अन्त में ख्याल किया कि ऐसी क्रूरता से संसार के और राष्ट्र विरोध करने लग जायेंगे। नेताओं ने घोषणा की कि सभी को एक अधिकार है। मांचू लोग यदि बागियों का विरोध नहीं करें तो उनके साथ ज्यादती न की जाय।

यूवान-शीह-काई ने सम्राट को खबर दी कि साम्राज्य से तेरह प्रान्त स्वतंत्र हो गये। दिसम्बर में रीजेन्ट ने पदत्याग दिया और यूवान-शीह-काई को पूर्ण अधिकार मिल गया।

यूवान-शीह-काई ने झगड़े को मिल कर तय करना चाहा। उसने अपना प्रतिनिधि कैन्टन के रहने वाले टांग-शाव-पी को चुना। वागियों का प्रतिनिधि वू-टींग-फैंग था। दिसम्बर १५ को शंघाई में इन लोगों की बैठक हुई। प्रश्न फिर भी प्रजातंत्र और वैधानिक राजतंत्र में था। कुछ वागियों की इच्छा वैधानिक राजतंत्र के स्वीकार कर लेने की थी। परन्तु वू-टींग-फैंग और दक्षिण के चीनी बागियों की इच्छा प्रजातंत्र की थी। टांग-शाव-पी ने देखा कि प्रजातंत्र स्थापित होकर ही रहेगा। तब उसने पेकिंग अपनी सिफारिश भेजी। यूवान-शीह-काई वहाँ का शक्तिशाली पुरुष था। स्थिति को अपने हित के लिये बनाने का यथोचित अधिकार उसके हाथ में था। जिस समय चीन में

क्रांति हो रही थी उस समय सनयातसेन अमेरिका में चन्दा एकत्र कर रहे थे।

सनयातसेन जब संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के किसी पश्चिमी स्टेट में थे तभी उन्हें हैंकाऊ से एक केबुल मिला। केबुल एक विशेष कोड में लिखा था। सनयातसेन ने अपनी उस पुस्तक को जिसमें कोड के नियम दिये हुए थे कहीं सामान के साथ दूसरी जगह भेज दिया था जहाँ उन्हें जाना था। अतः केबुल को बिना उस पुस्तक के पढ़ न सके। पन्द्रहवें दिन जब डेनभर पहुँचे तब उस सन्देश को पढ़ सके। उसमें लिखा था कि पैसे जल्दी भेजिये। वूचंग में बागी लोग तैय्यार हैं। दूसरे दिन के अखबारों से पता लगा कि वूचंग बागियों के हाथ में आ गया। अब उन्हें क्या करना चाहिये? चीन के लिये प्रस्थान करने पर बीस दिन में शंघाई पहुँचते। फिर उन्हें यह ख्याल हुआ कि उनकी जरूरत युद्ध में नहीं है। अतः तुरंत न्यूयार्क के लिये प्रस्थान किया। सेंट-लूई के अखबारों में उन्हें यह समाचार प्राप्त हुआ कि चीन में सनयातसेन की आज्ञा से क्रांति हो गई। बागी प्रजातंत्र स्थापित कर रहे हैं और पहला प्रेसिडेन्ट सनयातसेन निर्वाचित होगा।

सनयातसेन का दिमाग भावी प्रजातंत्र के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में लग गया। राष्ट्रों से मित्रता की जरूरत पड़ेगी। अमेरिका को चीन के प्रति सहानुभूति थी। फ्रांस की सरकार और जनता चीन प्रजातंत्र के साथ थी। जर्मनी और रूस मांचू को चाहते थे। जापान में जनता चीनियों की तरफ थी परन्तु वहाँ की सरकार चीनी क्रांति का विरोध करती थी। इंगलैण्ड को सनयातसेन ने भावी प्रजातंत्र के

लिये राजनीतिक केन्द्र माना। इसलिये वह शीघ्र इंगलैण्ड के लिये रवाना हो गये। वह अमेरिका से चुपचाप निकल भागे। वह अपने चीनी दोस्तों से बराबर सहायता पाते रहे। लण्डन आने पर उन्हें प्रकट होना पड़ा। लण्डन में डाक्टर कैन्टली के यहाँ तार और पत्रों की भरमार हो गई। जब सनयातसेन डाक्टर कैन्टली के यहाँ पहुँचे तब श्रीमती कैन्टली ने तार इत्यादि उन्हें दे दिये। श्रीमती कैन्टली को मालूम हुआ कि तार में उन्हें चीन लौटने का निमंत्रण था। चीनी प्रजातंत्र के प्रेसिडेन्ट होने के लिये बुलाहट थी। सनयातसेन को चिन्ता थी कि फिसकल मामले को इंग-लैण्ड में कुछ सुलझा लें। जापान को मांचूयों की सहायता न देने का भी उन्हें ध्यान था। वह यह भी चाहते थे कि उनसे अंग्रेजी उपनिवेशों में जाने की रुकावट उठा ली जाय। १९११ में रेलवे कर्ज के लिये चार राष्ट्रों का संगठित प्लैन बना था। इसके लिये बौन्ड निकल चुके थे। केवल नक़द की देरी थी।

सनयातसेन ११ नवम्बर को लण्डन से पेरिस पहुँचे। क्लेमेनसियो ने इनका स्वागत किया। पुनः मार्सेलिस से चीन के लिये रवाना हो गये। सींगापुर में जहाज पहुँचते ही बहुत लोगों ने इनका स्वागत किया। जहाज पर से रात भर के लिये वह एक धनी चीनी मित्र के यहाँ ले आये गये। हांगकांग में सोलह वर्ष के बाद स्वतंत्रता पूर्वक जहाज से उतरने पाये। प्रेस प्रतिनिधियों ने चीन के भविष्य के विषय में बातें पूछीं।

२४ दिसम्बर १९११ को सनयातसेन शंघाई पहुँचे। वहाँ

पर बहुत से लोग स्वागतार्थ इकट्ठे हुये थे। वहाँ पर मित्रों सहित उनका फोटो लिया गया। यह तीसरा और अन्तिम संसार-भ्रमण था।

सनयातसेन को समझौते की खबर दे दी गई। पेकिंग से खबर आने के पहले ही नानकिंग में स्वतंत्र प्रान्तों के प्रतिनिधियों को एक असेम्बली की बैठक हुई। सतरह वोटों में सोलह ने सनयातसेन को प्रेसिडेन्ट बनाने का प्रस्ताव पास कर दिया।

१६१३ की पहली जनवरी को सनयातसेन चीनी प्रजातंत्र के प्रेसिडेन्ट घोषित किये गये। सनयातसेन ने पाश्चात्य देश के नियमानुसार शपथ ली। चीनी इतिहास में यह एक नई चीज थी। सनयातसेन ने एक घोषणा निकाली जिसके द्वारा प्रजातंत्र की स्थापना हुई। उस दिन की यादगारी में नया कलेण्डर प्रारम्भ किया गया।

सनयातसेन ने अपनी आत्म जीवनी में लिखा है कि उस दिन उनके जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया जिसके लिये तीस वर्ष से अनवरत परिश्रम किया था। चीन में प्रजातंत्र स्थापित हो गया। जनवरी में एवज-प्रेसिडेन्ट ने अपना मंत्री मंडल निर्माण किया। नानकिंग में कुछ संगठनात्मक कार्य्य भी किया गया। संसार को शान्ति देने के लिये, घोषणा की गई कि विदेशियों की रक्षा का प्रबन्ध यथावत् रहेगा। आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्धों को प्रजातंत्र सरकार पूर्व की नाईं स्वीकार करेगी।

सनयातसेन इस नई सरकार के लिये द्रव्य का प्रबन्ध न कर सके। विदेशियों से कर्ज नहीं मिला क्योंकि सनयातसेन केवल (अस्थायी) प्रेसिडेन्ट नियुक्त हुए थे। जापान से

उन्हें कुछ द्रव्य मिल गये। चैंग-चीह- टंग एक्स-वाइसराय के प्रयास से हैंकाऊ में स्टीलवर्क्स का कारखाना खुल गया था उसी को जापानियों ने मारगेज लिखा लिया। नये प्रजातन्त्र ने धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। धर्म में कोई हस्तक्षेप न होगा। उत्तरी चीन में अभी सम्राट गद्दी पर विराजमान थे। एक राष्ट्रीय असेम्बली ने यूवान-शीह-काई को प्रधान मन्त्री बनाया था। प्रधान मन्त्री ने संघाई में अपना एक प्रतिनिधि समझौते के लिये भेजा। वागियों ने बीच ही में अपना प्रेसिडेन्ट चुनकर प्रजातन्त्र घोषित कर दिया। उत्तरी चीन सनयातसेन को प्रेसिडेन्ट मान कर प्रजातन्त्र के लिये तैय्यार न था। राजवंश के बचे हुए सदस्यों को सनयातसेन की क्रान्तिकारी पद्धति और साम्यवादी सिद्धान्त स्वीकार नहीं थे। वह कैन्टन के रहने वाले थे। चीन में प्रादेशिक विद्वेष काफी तौर से वर्त्तमान था। कुछ लेखकों की राय में सनयातसेन शासन कार्य्य में अनभिज्ञ थे। इस कारण मांचू राजवंश के बड़े २ लोग ऐसे अनभिज्ञ को प्रेसिडेन्ट मानने के लिये तैय्यार न थे। परन्तु बात यह नहीं थी। यूरोप के उदाहरण से यही भली भाँति मालूम है कि ऐसे बहुत कम ही प्रेसिडेन्ट चुने जाते हैं जो पहले प्रेसि-डेन्सी की ट्रेनिंग कहीं पाये रहे हों। कोई भी आदमी जो राज्य के सबसे बड़े ओहदे पर निर्वाचित होता है वह उस पद के लिये कहीं से ट्रेनिंग पाकर नहीं आता। फिर भी सनयातसेन के लिये ऐसी भद्दी बात लिखना उचित नहीं दिखलाई देता।

सनयातसेन का त्याग संसार में आदर्श था। जिसने जीवन पर्य्यन्त जिस उद्देश्य के लिये कौन २ से कष्ट नहीं

सहे उस उद्देश्य की प्राप्ति होने पर उसके सबसे मीठे फल को ठुकरा देना कैसा महत्व का कार्य्य था।

चीन राष्ट्र को एक और सुदृढ़ बनाने के लिये कोई भी त्याग उनके लिये बड़ा नहीं था। सनयातसेन ने यूवान-शीह-काई को तार भेजा कि आपके लिये मैं प्रेसिडेन्सी खाली करता हूँ बशर्ते सम्राट राजगद्दी त्याग दें और आप मांचू राजवंश से सम्बन्ध त्याग कर प्रजातन्त्र की शपथ लें।

यूवान-शीह-काई ने अपना उत्तर कुछ दिनों के लिये रोक रखा जब तक राष्ट्रीय चुनाव का निर्वाचन न हो जाय। परन्तु तब तक साम्राज्य का कोष खाली हो चला और उत्पात चारो तरफ फैलने लगा। २८ जनवरी को साम्राज्य के जेनरल और कमान्डरों की तरफ से एक मेमोरियल सम्राट के यहाँ भेजा गया।

१२ फरवरी को शाही फरमान निकला—

यह प्रतीत होता है कि अधिकांश जनता प्रजातन्त्र के पक्ष में है। प्रजा की राय से ही भगवान की इच्छा प्रकट हो रही है। एक राजवंश की प्रतिष्ठा के लिये हजारों लाखों के मत की अवहेलना किस तरह की जा सकती है। अतः हम सम्राज्ञी डोवाजर और सम्राट जनता को राज्याधिकार सौंपते हैं। यूवान-शीह-काई को पूर्ण अधिकार दिया जाता है कि प्रोविजनल प्रजातन्त्र की स्थापना करें और प्रजातन्त्रवादियों से परामर्श करें कि किस तरह एकता स्थापित की जाय जिससे यह साम्राज्य, मांचू, चीनी, मांगोल मुस्लिम और तिब्बतों की एकता से सुदृढ़ प्रजातन्त्र हो सके।

यूवान शीह-काई ने शीघ्र ही एक तार प्रेसिडेन्ट सनयात-सेन राष्ट्रीय काउन्सिल और मन्त्रीमण्डल के नाम नानकिंग भेजा। उनका तार था—

"प्रजातन्त्र शासन के लिये सबसे श्रेष्ठ रूप है। सारा संसार इसे मानता है। एक दौड़ में एकतन्त्र शासन से हम लोग प्रजातन्त्र स्थापित कर सके हैं यह आप लोगों के अनवरत परिश्रम का फल है जो जनता के लिये सुखकर है। अब हमलोग इस देश में राज-तन्त्र की पुनर्स्थापना न होने देंगे।' शाही फरमान के कुछ शब्द नानकिंग दल को उचित न जँचे। प्रजातन्त्र सम्राट की तरफ से वे पुरस्कार के रूप में नहीं चाहते थे। सम्राट की नियुक्ति से इसका एकसत्ययुक्त्व अधिकार वे पसन्द नहीं करते थे। सनयातसेन ने इस बात पर अपना विरोध प्रदर्शित किया कि प्रजातन्त्र सरकार चींग सम्राट के नियुक्त किये हुए आदमी की तरफ से संगठित नहीं किया जा सकता। इस अधिकार के प्रयोग में आगे चलकर झगड़ा होने का डर था। यूवान-शीह काई ने सनयातसेन को आश्वासन दिया कि शाही फरमान का अर्थ वे उस तरह न लगायेंगे बल्कि प्रजातन्त्रवादियों का अनुसरण करेंगे। सनयातसेन ने १३ वीं फरवरी को नानकिंग काउन्सिल को अपना त्यागपत्र भेजा।—

'आज मैं अपना त्यागपत्र आप के पास भेजता हूँ ताकि आप एक विज्ञ और महानुभाव पुरुष को नया प्रेसिडेन्ट चुनें। चींग सम्राट का त्यागपत्र और उत्तर तथा दक्षिण की एकता का श्रेय श्री यूवान को है। पुनः यूवान ने राष्ट्रीयता में अपना पूर्ण विश्वास प्रकट किया है। यदि वह प्रजातन्त्र के प्रेसिडेंट निर्वाचित किये जायें तो वह बड़े राजभक्त नौकर इस प्रजातन्त्र के होंगे। यूवान एक राजनीति में विज्ञ पुरुष हैं जिनकी क्रियात्मक शक्ति पर सम्पूर्ण राष्ट्र अपनी भलाई के लिये निर्भर करता है।'

दूसरे दिन नानकिंग की राष्ट्रीय काउन्सिल ने यूवान-शीह-काई को प्रजातन्त्र का प्रोविजनल प्रेसिडेंट नियुक्त किया। यूवान का प्रेसिडेंट के पद पर आसीन होना सम्राट के पद-त्याग से हुआ था परन्तु इसका विशेष कारण सन-यात-सेन के पद-त्यागपर अधिक था। बागियों ने स्वयं ही यूवान-शीह-काई को प्रेसिडेंट चुना। बागियों का विश्वास अपने प्रमुख नेता सनयातसेन पर था परन्तु स्थिति ऐसी थी कि सनयातसेन की प्रेरणा से ही यूवान-शीह-काई ऐसा कनजरवेटिव आदमी चीन प्रजातन्त्र का प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ। सनयात-सेन और उनके साथी पद के लिये चीन को लड़ाना नहीं चाहते थे। उन्हें प्रजातन्त्र की आवश्यकता थी। क़िस पद पर कौन रहे, इसकी उन्हें परवाह न थी। फिर भी नये प्रजा-तन्त्र के लिये यूवान-शीह-काई ऐसा आदमी योग्य पुरुष नहीं था। परन्तु गृहयुद्ध के लिये सनयातसेन तैय्यार न थे। उन्हें उत्तर और दक्षिण चीन को पद के लिये आपस में लड़ाना उचित नहीं जँचा। उत्तरी चीन मे मांचू राजवंश के अच्छे २ राजा व नवाब थे। सनयातसेन ऐसे साम्यवादी को प्रजातन्त्र का राष्ट्रपति स्वीकार करना उनके लिये मुश्किल था। ऐसे संकट काल में एक आदमी को सर्व सम्मति से राष्ट्रपति चुन देना चीन ऐसे राष्ट्र के लिये एक बड़ी बात थी।

सनयातसेन का स्वागत

सनयातसेन को अप्रैल तक प्रोविजनल प्रेसिडेण्ट की हैसियत से कार्य्य करना पड़ा। चार्ज देने में कितनी ही रस्म रिवाजों को पूरा करना पड़ता था। यह उचित था कि प्रसिद्ध २ प्रतिनिधि लोग नानकिंग से पेकिंग जाकर यूवान-शीह-काई को राष्ट्रपति चुने जाने की खबर देते। यूवान-शीह-काई को पेकिंग से नानकिंग ले आते। प्रबन्ध तो यही किया गया था कि नानकिंग में ही राष्ट्रपति को पद पर आसीन किया जाय और नानकिंग ही नये प्रजातन्त्र की राजधानी हो। परन्तु पेकिंग में एक वृहद् दंगा हो गया। कहा जाता है कि इस दंगे में यूवान शीह-काई का संकेत था। यूवान-शीह काई

पेकिंग में ही राष्ट्रीय सरकार का स्थान रखना चाहते थे। पेकिंग में यूवान अपने अधिकार को अच्छी तरह सुरक्षित तथा उपयोग कर सकते थे। नानकिंग दक्षिण चीन में है और वह वागियों तथा प्रजातन्त्रवादियों का एक मुख्य स्थान है। दंगे का कारण दिखला कर थोड़े दिनों के लिये पेकिंग में ही राष्ट्रीय सरकार का स्थान बना दिया गया। वहीं पर यूवान-शीह-काई को राष्ट्रपति का अभिषेक किया गया। सनयातसेन और उनके मन्त्रीमंडल ने पहली अप्रेल को आफिस की सील (मोहर) दे दिया। यूवान-शीह-काई पूर्ण रूप से राष्ट्रपति हो गये।

सनयातसेन ने कैन्टन लौटने का विचार कर लिया तथा अपने लिये कार्य्य क्रम तैय्यार कर लिया। १२ मार्च, १९१२ को नानकिंग से सनयातसेन ने श्रीमती कैन्टली को एक पत्र लिखा था—

"टाई-पीग राजवंश भूतकाल की चीज हो गई परन्तु मांचू राजवंश के च्युत होने ही से चीन को मुक्ति मिल गई ऐसा नही है। अभी हमलोगों को वहुत काम करने हैं। और इन कार्य्यों को करना अत्यावश्यक है जिससे चीन अन्तर्राष्ट्रीय परिवार में एक शक्तिशाली अंग वन जाय। मैं कैन्टन जा रहा हूँ और कोशिस करूँगा कि पुराना नगर एक नूतन तथा आधुनिक नगर में परिवर्तित हो जाय।"

यूवान-शीह-काई ने १९१२ के ग्रीष्म ऋतु में सनयातसेन को पेकिंग में निमन्त्रित किया। जेनरल हुएनसींग भी इनके साथ जाने वाले थे परन्तु उसी समय दो क्रान्तिकारियों के फाँसी पर चढ़ा देने के कारण हुएनसींग लौट गये। नये प्रजातन्त्र में दलवन्दी शुरू हो गई थी। वायून-शीह-काई ने

डाक्टर सनयातसेन का शाही रीति से स्वागत किया। एक सरकारी बिलडिंग में काफी खर्च करके इनके ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। बालक-सम्राट की माँ ने डाक्टर सनयातसेन को सन्देश भेजा। सम्राट की माँ के प्रतिनिधि रूप में राजकुमार पुलुन ने सनयातसेन को एक बृहद् प्रीति भोज भी दिया। यह राजकुमार वही थे जिनके संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में जाने पर डाक्टर सनयातसेन को अमेरिकन इमिग्रेशन अफसर ने १६०४ के अप्रैल मास में करीब तीन सप्ताह तक सैनफ्रैंसिसको में रोक रक्खा था। सचमुच ही मांचू दरबार में इस तरह प्रतिष्ठा पाना उस बागी के विजय का चिन्ह था। बहुत सी सोसाइटियों और क्लबों की तरफ से इन्हें मान पत्र दिया गया था।

सनयातसेन ने यूवान-शीह-काई के साथ प्रजातंत्र के संगठन तथा तत्-सम्बन्धी समस्याओं के ऊपर बातें की। यूवान-शीह-काई एक पुराने ढंग के चतुर खेलाड़ी थे। उन्हें आदमियों के पहचानने की कला मालूम थी। इस छोटे कद के क्रांतिकारी और आदर्शवादी को मुग्ध करना जानते थे। सनयातसेन की बातों का समर्थन करके, अपने प्रति उनके मनमें अच्छा-सा भाव पैदा कर दिया।

सनयातसेन के दिमाग में सबसे बड़ी समस्या चीन में रेलवे मार्ग की उन्नति थी। रेलवे-वृद्धि की एक योजना राष्ट्रपति के सामने पेश की। यह योजना ७५००० मील रेलवे दश वर्ष में तीन बिलियन डालर लगा कर तैय्यार करने का था। यूवान-शीह-काई ने योजना को पसन्द किया और सनयातसेन को रेलवे-विभाग का प्रधान नियुक्त किया। सनयातसेन का काम पूरी योजना बना कर विदेशी बैंकरों के

साथ समझौता करके राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिये कार्य्य-क्रम पेश करना था। प्रारम्भ में काम शुरू करने के लिये ३००००० चीनी डालर प्रतिमास स्वीकार हुआ। सनयातसेन के लिये यह पद उनके कार्य्य और प्रसिद्धि के अनुसार बहुत छोटा था परन्तु देश हित के लिये उन्हें छोटे और बड़े पद का ख्याल नहीं था।

सनयातसेन ने दिसम्बर में फिर पेकिंग की यात्रा की। जिससे प्रजातंत्र के बड़े २ अफसरों में कुछ अनबन कम-सी हो गई। यूवान-शीह-काई ने ऐसे ही आदमी को प्रधान-मंत्री बनाया था जो प्रजातंत्रवादियों को स्वीकार हो। टांग शाव-पी प्रधान सचिव थे। राष्ट्रीय काउन्सिल की बैठक पेकिंग मे होती थी। मंत्री-मंडल का कार्यक्रम प्रकाशित हो चुका था। पाँच कौमों की स्मृति रूप में पाँच रंग के राष्ट्रीय झण्डे की घोषणा हुई थी परन्तु राष्ट्रपति और प्रधान सचिव में मतभेद हो गया। यूवान-शीह-काई प्रत्येक पद पर प्रधान सचिव के कारण अपने कार्य्य में रुकावट पाने लगे। राष्ट्रपति एकतंत्र राज्य में स्वच्छन्द रूप से हुकूमत कर चुके थे। पुनः राष्ट्रपति होने पर वह स्वच्छन्दता नहीं रही।

राष्ट्रीय काउन्सिल में तीन दल हो गया। टांग-शाव पी ने इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रपति ने कई आदमियों को मंत्री-मंडल बनाने के लिये निमंत्रित किया परन्तु कोई भी मंत्री-मंडल न बना सका। जो कोई अग्रसर भी होता तो राष्ट्रीय काउन्सिल उसे अस्वीकार कर देती। यूवान-शीह-काई ने अन्त में एक स्वतंत्र आदमी को जो किसी दल का नहीं था प्रधान सचिव नियुक्त किया।

सनयातसेन रेलवे-डेवलेपमेंट विभाग के डायरेक्टर-

जेनरल नियुक्त हो चुके थे। अतः अपने कार्य्यक्रम को प्रारम्भ करने के ख्याल से उन्होंनेचीन में काफी भ्रमण किया। प्रजा-तंत्र स्थापित होने के पहले ही से चीन में रेलवे मार्ग की वृद्धि हो रही थी। एक मास के भ्रमण के बाद सनयातसेन ने शंघाई में रेलवे परामर्श गृह की स्थापना की। सनयातसेन १९१३ के फरवरी में रेलवे-कार्य्यक्रम के सम्बन्ध से ही जापान गये। जापान में भी लोगों ने इनका खूब स्वागत किया। टोकियो रेलवे स्टेशन पर उन्हें ३००० चीनी विद्यार्थियों तथा कई सौ चीनी लड़कियों ने स्वागत किया। जापान के जिस शहर में जाते वहीं इनका पब्लिक स्वागत होता था। बहुत से संगठनों की तरफ से इन्हें मानपत्र, प्रीति भोज इत्यादि मिला करते थे। १८ मार्च को जापान से लौटे। लौटते समय उन्होंने प्रेस को संवाद दिया था कि जापान में इतना स्वागत हुआ कि उन्हें जापानी रेलवे-संगठन का अध्ययन करने का मौका नहीं मिला। सनयातसेन की जापान-यात्रा के उद्देश्य के विषय में उस समय तरह तरह की बातें होती थीं। कुछ लोग सम-झते थे कि डाक्टर सनयातसेन नये प्रजातंत्र के लिये जापान से स्वीकृति तथा व्यापारिक समझौते के लिये आये हुए हैं। यों तो डाक्टर सन भी चीन और जापान के सम्बन्ध में कई बार अपना मत प्रकट कर चुके थे। अखबारों ने यह भी लिखा था कि चीनी रेलवे प्रोग्राम के लिये मुद्रा सम्बन्धी समस्याओं को हल करने आये थे। परन्तु मोजी से चलते समय रूटर के संवाददाता को उन्होंने कहा था कि चीन की रेलवे के लिये चीन से ही कर्ज लेंगे और उस कार्यक्रम को पूरा करेंगे। उनके इस संवाद से उनके जापान में आने का क्या तात्पर्य था नहीं मालूम होता। उनके स्वागत से जापान के

पूँजीवादी और साम्राज्यवादी मन्तव्य से कोई सम्बन्ध नहीं था। लोगों का कथन है कि डाक्टर सनयातसेन जापानियों की प्रवृत्ति का अध्ययन कम करते थे। बात जो कुछ हो परन्तु डाक्टर सनयातसेन का शायद ख्याल रहा हो कि यदि विदेशी सहायता की जरूरत ही हो तो यूरोपीय सहायता के बदले पड़ोसी से लेना अधिक हितकर होगा।

पेकिंग की हालत खराब हो रही थी। वांग-चीग-वी एक क्रांतिकारी जो प्रजातन्त्र के स्थापित होने के बाद मुक्त किया गया अपना क्रांतिकारी कार्य्य पूर्ववत् जारी रखा। पेकिंग सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिये १७ जनवरी १९१२ को पेकिंग में यूवान-शीह-काई पर एक बम फेंका गया।

सनयातसेन की पेकिंग-यात्रा से स्थिति कुछ सुधरने लगी थी। १९१३ के मार्च में राष्ट्रीय असेम्बली की नई बैठक होने वाली थी। देश में निर्वाचन का धूम मच गया था। सनयातसेन उस समय जापान में थे। एकाएक २१ मार्च को कौमीन टांग के प्रधान संगठन-कर्त्ता सुन-चीआव पर संघाई स्टेशन पर पेकिंग जाते समय किसी ने गोली चला दी। कौमीनटांग अखबारों में पेकिंग सरकार के कुछ अफसरों की कार्रवाई पर कड़ी आलोचना निकली। इस हत्याकांड में गृह सचिव के एक अफसर का हाथ था। इसमें कुछ कागजात भी ऐसे मिल गये थे जो प्रकाशित कर दिये गये।

राष्ट्रीय असेम्बली की बैठक ८ अप्रैल को हुई। असेम्बली के सदस्यों की संख्या ८६० थी। कौमिनटांग के पास अत्यधिक सदस्य नहीं थे तो भी और दूसरी पार्टियों की अपेक्षा इसकी संख्या अधिक थी। असेम्बली में सभापति के निर्वाचन पर ही मतभेद हो गया है। इसके बाद सरकारी मंत्री-

मंडल से पंच-राष्ट्रीय कर्ज आयोजन पर झगड़ा शुरू हो गया।

कर्ज आयोजन चीन के लिये एक बड़ी समस्या आरम्भ से ही थी।

साम्राज्य सरकार भी आर्थिक सहायता के लिये विदेशी पूँजी पर अवलम्बित थी। चीनी पाश्चात्य आर्थिक टेकनिक को समझने में प्रवीणता न दिखला सके। अब तक तो मैरीटाइम कसटम्स सर्विस के क्रेडिट पर कर्ज मिलता गया। परन्तु बौक्सर दंगे में विदेशियों ने इतना बोझा लाद दिया था कि मैरीटाइम कसटम्स के क्रेडिट पर कर्ज मिलना मुश्किल था।

कनसोरट्रियम ने नमक-कर के क्रेडिट पर नया कर्ज देना स्वीकार किया था। सनयातसेन और हुएनसींग इस कर्ज का विरोध करने लगे। चीन में ही कर्ज लेने की व्यवस्था की गई।

चीन में नये प्रजातंत्र के लिये जितने कर्ज की आवश्यता थी पूरा होना सहल नहीं था। कनसोरटीयम ऐडवान्स बराबर देता रहा। पर भविष्य के लिये नये २ नियम और भी बना डाले। राष्ट्रीय काउन्सिल ने नये नियम को स्वीकार नहीं किया। अन्त में किसी तरह दबाव देकर यूवान-शीह-काई ने काउन्सिल से स्वीकृति ली।

इस समय सनयातसेन जापान गये हुए थे। प्रेसिडेन्ट विलसन ने घोषणा कर दी कि कनसोरटियम में अमेरिका सम्मिलित नहीं हो सकता क्योंकि कनसोरटीयम के नये नियम चीन की स्वतत्रता के ऊपर दबाव डालने का प्रयत्न है। नई राष्ट्रीय असेम्बली पंच-राष्ट्रीय कर्ज आयोजन पर

प्रस्ताव पेश करना चाहा परन्तु राष्ट्रपति ने कहा कि गत-राष्ट्रीय-काउन्सिल ने इसे स्वीकार कर लिया है। आपस में इस पर कड़ी २ बातें होने लगीं। पबलिक इस कर्ज का विरोध करने लगी। डाक्टर सनयातसेन ने इंगलैण्ड में पंच-राष्ट्रीय बैंकिगदल को तार भेजा कि कर्ज देना रोक दें क्योंकि असेम्बली ने इसे स्वीकार नही किया है। इस तार का फल कुछ नहीं हुआ। २१ मई तक कर्ज की रकम नियत संख्या से भी अधिक एकत्रित हो गई।

कर्ज की आवश्यकता कौमीनटांग से छिपी नही थी। परन्तु कौमीनटांग ने उस कर्ज के ऊपर कोई कन्ट्रोल न रख कर कर्ज के ही ऊपर झगड़ा शुरू किया। फल यह हुआ कि सारा कर्ज बिना हिसाब के इधर उधर समाप्त हो गया। बल्कि आर्थिक अव्यवस्था का एक मार्ग खुल गया। झगड़ा कर्ज के ऊपर हुआ परन्तु वास्तविक रूप मे यूवान-शीह-काई और कौमीनटांग में मतभेद प्रारम्भ हो गया। यह मतभेद प्रजातंत्र के स्थापित होते समय भी प्रकट रूप में था। यूवान शीह-काई के पेकिंग से नानकिंग न जाने के कार्य्य ही में मतभेद प्रकट था। यह तो सनयातसेन के व्यक्तित्व का प्रभाव था कि उस समय कोई ऐसी बात नहीं हुई जिससे नये प्रजातंत्र के शुरू होने ही में विलम्ब हो जाय।

१६१३ के ग्रीष्म ऋतु के पहले ही यांगटीसी प्रदेश में असन्तोष फैल रहा था। जून के अन्त में वूचंग में दंगा हो गया। कौमीनटांग दल के तीन गवर्नर जून और जुलाई में बर्खास्त कर दिये गये। दूसरी जुलाई को डाक्टर सनयातसेन ने यूवान-शीह-काई को एक पबलिक तार भेजा—

'राष्ट्र का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के लिये आप राष्ट्र-

पति के पद पर आसीन हुए थे, उसी राष्ट्र को विपत्ति से बचाने के लिये आप उस पद को त्याग दीजिये। यदि आप मेरी बात पर ध्यान देंगे तो मैं दक्षिण और पूर्व की जनता तथा सैनिक सिपाहियों को विद्रोह करने से मना करूँगा। यदि मेरी बातों को ठुकरायेंगे तो मैं आपके विरुद्ध भी वही कार्य्य करूँगा जो मैंने मांचू राजवंश के साथ किया था।'

इस तार का कोई प्रभाव यूावन-शीह-काई पर न पड़ा। उन्होंने पद त्याग नहीं किया। १२ जुलाई को कीउकियांग में सरकारी गैरिजन पर चढ़ाई हुई। हुएनसींग नानकिंग में पहुँचे जहाँ १४ जुलाई को पेकिंग से स्वतंत्रता की घोषणा कर दी गई। एक जबर्दस्त घोषणा में प्रेसिडेन्ट के विरुद्ध बगावत करने को कहा गया। चार प्रान्तों ने बागियों का साथ दिया—कियांगसू, कियांगसी, आनहुई और कानटंग। २० जुलाई को बागियों ने शंघाई में तार घर पर कब्जा करना चाहा। २३ जुलाई को सनयातसेन रेलवे डायरेक्टर जेनरल के पद से हटा दिये गये। यूवानशीह-काई ने उनके ऊपर अभियोग लगाया कि रेलवे फन्ड से बागियों की सहायता की गई। दूसरी तरफ यूवान-शीह-काई के ऊपर भी कर्ज के मिले हुए रुपये से बागियों को दबाने का अभियोग था। अगस्त में प्रेसिडेंट की सेना आगे बढ़ती गई और बागियों को पीछे हटना पड़ा। सनयातसेन और हुएनसीग के जापान पहुँचने की खबर अखबारों में छप गई। नानकिंग बागियों के हाथ से ले लिया गया।

यूवान-शीह काई ने अपनी विजय का लाभ उठाया। पांच वर्ष के लिये राष्ट्रीय असेम्बली के द्वारा प्रेसिडेंट चुन लिए गये।

१० अक्टूबर को क्रांति की वर्ष गाँठ बड़े उत्सव के साथ मनाई गई। सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधि निमंत्रित थे। राष्ट्रों ने प्रजातंत्र को स्वीकार कर लिया।

यूवान-शीह-काई को अभी कौमींगटांग से छुट्टी नहीं मिली थी। प्रजातंत्र की विधान समिति की बैठक हो रही थी। २६ अक्टूबर को समिति का कार्य्य पूरा हुआ। यूवान-शीह-काई ने विधान के नियमों का विरोध किया जिसके द्वारा प्रेसिडेंट के अधिकार कम किये जा रहे थे। प्रेसिडेंट ने अपना एक प्रतिनिधि समिति के सदस्यों के पास भेजा परन्तु प्रतिनिधि की बातों पर ध्यान भी नही दिया गया। प्रेसिडेंट ने प्रान्त के गवर्नरों तथा बड़े २ अफसरों द्वारा विरोध का तार और पत्र भिजवाया परन्तु इसका कुछ फल नहीं हुआ।

३१ अक्टूबर को राष्ट्रीय असेम्बली के कौमींगटांग सदस्यों की गिरफ्तारी हुई। कौमिंगटांग एक नाजायज संस्था घोषित की गई। तीन सौ सदस्य इस तरह निकाल दिये गये। जनवरी में राष्ट्रीय असेम्बली स्थगित कर दी गई। प्रान्तीय असेम्बली सभायें भी बर्खास्त हो गई। प्रेसिडेंट ने पेकिंग में एक छोटी सलाह कारिणी राजनीतिक समिति स्थापित की। उस समिति ने एक दूसरी कम संस्था वाली प्रतिनिधि सभा का आयोजन किया।

प्रजातंत्र की असफलता के ऊपर इतिहासकारों तथा राजनीतिज्ञों ने अपने २ मत के अनुसार टिप्पणी की है। कौमींगटांग ने यूवान-शीह-काई को प्रजातंत्र का जूडा घोषित किया। जो कुछ हो यूवान दल या कौमींगटांग के ऊपर संसार एक स्वर से कहेगा कि चीनी प्रजातंत्र के जन्म के अवसर पर दोनों दलों में एकता न हो सकी। विशेष कारणों से किसी

भी दल में त्याग का भाव न आ सका। त्याग से महत्व की बात तो राजनीति में स्थिति सम्हालने की क्षमता की आवश्यकता थी। चीनी नेता राष्ट्र के एक संकट मय जीवन में अपनी शक्ति का सदुपयोग न कर सके।

सनयातसेन के व्यक्तित्व में स्थिरता नही थी। उनके चरित्र का एक गुण था कि वह परिवर्तन के बड़े इच्छुक थे। होनोलुलु की शिक्षा से ही उनके हृदय में रूढियों के विरुद्ध भाव अंकुरित होने लगे थे। उनको आधुनिकता की लौ लग गई थी। होनोलुलु में ईसाई धर्म में प्रवृति तथा सहानुभूति, हांगकांग में प्रकटरूप से ईसाई धर्म ग्रहण करना उनके क्रांतिकारी भाव का द्योतक है। अपने जीवन के इस परिवर्तन ने उनमें आत्मबल का भाव पैदा किया था। वह एक तेजस्वी, परिश्रमी और रहस्य-प्रेमी नवयुवक थे। क्वीन्स कालेज में अभी एक स्कूल के विद्यार्थी थे जब उनमें क्रान्ति का भाव अकुरित हुआ था। डाक्टरी करते समय छिपे तौर से क्रान्ति का उपदेश करते थे, थोड़े दिनों के बाद प्रकट रूप में क्रान्ति के उद्देश्य से भ्रमण करने लगे। १८९५ में क्रान्ति की असफलता और कैन्टन से भागने की आवश्यकता ने उन्हें अपने उद्देश्य में पूर्णरूप से लिप्त करा दिया। उन्हें अपने उद्देश्य की पवित्र आकांक्षा में विश्वास हो गया। १८९६ की लण्डन घटना से उनके मस्तिष्क पर एक अजीब प्रभाव पड़ा। ईश्वर की महत्ता का दिग्दर्शन हुआ। उन्हें यह प्रतीत हुआ कि ईश्वर ने उन्हें बचाया क्योंकि ईश्वर को मंजूर है कि सनयातसेन क्रान्ति के द्वारा चीन की आत्मा का उद्धार करें। इस छोटी घटना से संसार ने जान लिया कि वह एक चीनी साम्राज्य का विद्रोही है। एक छोटे से विद्रोही

को संसार ने चीन का उद्धारक समझा। वह एक अत्याचार पूर्ण शक्तिशाली साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिये मनसूबे बाँधकर देश विदेश की खाक छानने लगा। कहीं मान पाता कहीं अपमानित होता, भूखों कई दिन व्यतीत हो जाते, पैदल चलते २ पैरों में छाले पड़ जाते, शीत से रक्षा के लिये पर्याप्त सामग्री नहीं, फिर भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास करके आगे बढ़ने वाले नवयुवक हृदय ने अपने कार्य्यक्रम को आगे बढ़ाया। पग पग पर बाधायें थीं। अपने देश से निकाल दिये गये। एक समय आया जब जापान, फ्रान्स, तथा इंगलैण्ड ने भी अपने यहाँ स्थान देने से इन्कार कर दिया। प्रवासी चीनी जनता को क्रान्ति के संदेश पहुँचाने के लिये इन्हें उपनिवेशों में जिन २ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिन २ अपमानों को चुपचाप सहना पड़ा वह इन्हीं ऐसे कर्मयोगियों के लिये साध्य था। अपने कर्म और उद्देश्य से कभी विचलित नहीं हुए। बार बार की हार ने उन्हें अपने उद्देश्य में और भी पक्का बनाया। उनके लिये बागी बना रहना मान का प्रश्न था। किसी भी मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण कार्य्य में स्वाभाविक रूप से बाधा देने वाली समस्यायें इनके सामने नहीं थीं। इनके बड़े भाई ने चीन की प्रथा के अनुसार इनकी स्त्री और बाल बच्चों के पालने पोषने का भार सहर्ष अपने ऊपर ले लिया था। इससे इनके लिये सोलह वर्ष के वनवास का जीवन (१८९५ से १९११) अति कष्ट कर नहीं हुआ। जब इनके साथी हतोत्साह होते, आशा खो बैठते, पथ से विचलित होने लगते, तब ये ही उनमें आशा का संचार करते, ठीक रास्ता निरूपण करते और उनमें उत्साह भर कर आगे के लिये रास्ता दिख-

लाते उनके आदर्श वादी होने में सोलह वर्ष के बनवास जीवन से सहायता मिली थी। अपनी जन्मभूमि से सोलह वर्ष तक अलग रह कर संसार के अन्य देशों में भ्रमण करते, वहाँ के उन्नतिशील व्यक्तियों, संस्थाओं के स्पर्श में आते, बड़े २ यूरोपीय आदर्श वादियों तथा कार्ल मार्क्स और हेनरी जार्ज ऐसे क्रान्ति के प्रवर्त्तकों के अध्ययन करने की उपयुक्तता से उनके हृदय में भी चीन की समस्याओं के विषय में ऐसे ही विचार उठने लगे। वास्तविक स्थिति के स्पर्श न रहने से उनके विचार और स्थिति से बहुत अन्तर पड जाता था। चीनी जैसे रूढि में विश्वास करने वाले राष्ट्र के लिये पाश्चात्य देश की आधुनिकता का सामंजस्य करना सहज नहीं था। फिर भी सनयातसेन ने उसके लिये चेष्टा की।

मांचू राजवंश की शक्ति तथा उसकी सहायता पाने के ज़रिये देख कर सनयातसेन को अपने उद्देश्य में सफलता पाने की इतनी जल्दी उम्मीद नहीं थी। फिर भी आशा के पहले ही सफलता पाने से सनयातसेन चीन राष्ट्र की आशा के उच्चतम शिखर पर पहुँच गये। जिस उद्देश्य के लिये जीवन भर लड़ते रहे उसके उच्चतम पद को त्याग कर राष्ट्र की एकता स्थापित करने की प्रबल इच्छा से इनका गौरव राष्ट्र की प्रत्येक जनता के हृदय में अङ्कित हो गया। पद-त्याग के बाद पेकिंग में जिस शाही रीति पर इनका स्वागत हुआ तथा जापान में जो भाव इनके प्रति प्रदर्शित हुए वह एक महत्व की बात थी। चीन सनयातसेन के इस महान त्याग को भूल नहीं सकता। दूसरी राज्यक्रान्ति तक सर्व-साधारण के विचार से भी सनयातसेन चीन में अद्वितीय पुरुष थे।

सनयातसेन एक धार्मिक पुरुष थे। इनकी धार्मिकता का परिचय इनके चर्च-सम्बन्ध से ज्ञात होता है। वह चीनी ईसाईयों के साथ भ्रातृत्व का भाव रखते थे और अपने को ईसाई कहने में हिचकते नही थे। बल्कि उन्हें इसका गौरव था कि वे ईसाई हैं। चर्च इत्यादि के निमंत्रण बड़ी खुशी के साथ ग्रहण करते थे। विदेशी मिशनरियों के साथ इनके जीवन का सुन्दर समय व्यतीत हुआ था। चीनी जनता की अपेक्षा विदेशी मिशनरियों के पास डाक्टर सनयात की जीवन-गाथा का सुन्दर इतिहास मिल सकता है। डाक्टर हेजर सनयात के धर्म गुरु थे। डाक्टर कैन्टली और श्रीमती कैन्टली के ये अनन्य भक्त थे। उन दोनों जोड़ी ने भी इनको किस प्रेम से अपनाया था वह इनके लिखे हुए जीवन चरित्र की घटनाओं या आपस के पत्र-व्यवहार से पता चलता है।

ईसाई धर्म से जिस स्वतंत्रता का सन्देश इन्हें मिला था उसे डाक्टर सनयातसेन ने चिल्ला २ कर घोषित किया था। १९१३ में यूवान-शीह-काई के विरुद्ध बगावत हुई। इस बगावत में डाक्टर सनयात ने सहयोग दिया। इतिहासकारों व इनके जीवनी-लेखकों और राजनीतिज्ञों का कहना है कि सनयातसेन ने दूसरी क्रांति में भाग लेकर अपने को राष्ट्र की आँखों से गिरा दिया। कहा जाता है कि इतिहास में कोई ऐसा राष्ट्रीय वीर नही है जिसका पतन इतने उच्चतम शिखर से एक टूटते हुए नक्षत्र की नाईं हुआ हो। जनता की आँखों में गिरने के बाद उनमें एक अहंकार या गर्व का भाव उत्पन्न हो गया जो उनमें कभी छू नहीं गया था। यह गर्व व्यक्तिगत द्वेष के रूप में परिणत हो गया था। उन दिनों सनयातसेन की क्या हालत थी? यूवान-शीह-काई के विरुद्ध कितने ही

उनके सहयोगियों ने साथ नहीं दिया। सरकारी पदों पर आसीन उनके मित्रों में कम नहीं थे। चीन में उनके बहुत से पूर्व के सहयोगियों को व्यक्तिगत रक्षा के लिये उनके और क्रान्ति के प्रति घृणा का भाव प्रकट करना पड़ा था। अधिकांश जनता का भाव उनके प्रति विरोधात्मक हो गया था। ईसाईयों ने भी आक्षेप किया था। मिशनरियों ने जिस श्रद्धा का स्थान इनको दिया था वह भी जाता रहा। अन्तर्राष्ट्रीय सुधार मण्डल के पादरी श्री थर्वींग ने लिखा है—'एक वर्ष के पहले उन्हें वह स्थान प्राप्त हुआ था जो संसार में किसी दूसरे चीनी का नहीं था। परन्तु जापान के यात्रा के बाद से उनमें अजीब परिवर्तन का समावेश हुआ। चीन के प्रति उनके भाव बदल गये हैं। प्रेसिडेंट यूवान-शीह काई और उनकी नीति के ये घोर विरोधी और शत्रु हो गये हैं। उन्होंने प्रेसिडेंट के हटाने की शपथ ले ली है। उनका चीन के लिये वह आदर्श—एक सूत्र में वंधा हुआ—सदा के लिये चला गया, उन्होंने कहा है—यदि चीन दश भागों में विभक्त हो गया तो कोई अन्तर नहीं है—प्रत्येक भाग जापान से बड़ा ही होगा।'

पेकिंग गजट में डाक्टर सनयातसेन और एक ईसाई मित्र की कुछ आपस की बातें छपी थीं। सनयातसेन ने अपने मित्र को धार्मिक दृष्टि से अपने जीवन का रहस्य वतलाया था कि सन १८९६ में लण्डन चीनी लीगेशन से बचने का श्रेय किसी भाग्य या मौका पर नही था। वल्कि ईश्वर की दया से उनकी रक्षा हुई थी।

कनाडा तथा संयुक्तराष्ट्र अमेरिका इत्यादि जगहों में खतरे से ईश्वर ने ही बचाया। ईश्वर की सत्ता में उन्हें

विश्वास था जो सर्वश्रेष्ठ और अदृष्ट है। उन्होंने अपने बालक पन की कथायें बतलाई हैं कि किस तरह वे रात को जग जाते थे और गरीबों के दुख पर कातर होते, उन्हें बचाने की तरकीबें सोचते थे। उन्हें आशा थी कि बगावत के कारण यूवान-शीह-काई अपने नेपोलियन कार्य्यक्रम को न करेंगे।

१६१३ में सनयातसेन की स्त्री उनके साथ जापान नहीं गई थी। वह नानकिंग में ही थी। उसमें अपने क्रांति-कारी पति के साथ घूमने की शक्ति नहीं थी। चीनी प्रथा के अनुसार वह परिवार के साथ रहनेवाली गृह-लक्ष्मी थी। जब सनयातसेन हांगकांग में पढ़ रहे थे तब अपनी सास के साथ चोआव-हंग में रहती थी। वहीं पर तीन बच्चे पैदा हुए थे। दो लड़कियाँ थीं और एक लड़का था। पुत्र का नाम सुन-फो था। सनयातसेन की पहली क्रांति १८९५ में जब असफल हो गई तब ये अपनी रक्षा के लिये आह-मी चले गये थे। सुन-फो ने हवाई में शिक्षा-प्राप्त की। सेंट-लूई कालेज से वह ग्रेजुएट हुआ था। १६११ में कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में दाखिल हुआ था। परन्तु चीन की क्रान्ति सुन कर वह भी देश में लौट आया।

सनयात के बड़े भाई आह-मी साठ वर्ष की उम्र होने के बाद अपनी जायदाद बेच कर १६०६ में स्वदेश लौट आये। अपने साथ सारे परिवार को जिसमें माता, सनयातसेन की स्त्री और उनकी लड़कियाँ भी थीं ले आये। वे काउलून में हांगकांग के नजदीक जा बसे। वहाँ क्रांतिकारियों के आने जाने की सख्या इतनी अधिक हो गई कि अंग्रेजी अधिकारियों ने उन्हें चले जाने के लिये कहा। फिर वे फ्रेन्च कनशेसन में कांग चाउवान स्थान में गये वहाँ से भी धीरे २ मकावो की

तरफ बढ़ गये।

जब सनयातसेन ने शंघाई में रेलवे आफिस स्थापित किया तब श्रीमती सनयात उस समय उनके साथ थी। सनयातसेन जापान की यात्रा में अकेले थे। इनकी स्त्री कुमारी सुंग के साथ भेष बदल कर जापान में गई थीं। डाक्टर सनयात के विशद स्वागत समूह को श्रीमती सनयात ने देखा था। श्रीमती सनयात को अपनी बड़ी लड़की के बीमार पड़ जाने के कारण चीन लौटना पड़ा। जब सनयातसेन दूसरी बार चीन से निर्वासित हुए उस समय श्रीमती सनयात को सरकारी अफसरों ने सनयातसेन के पता लगाने के लिये विशेष तंग किया। श्रीमती सनयात उसके बाद मकावो चली आईं। दूसरे निर्वासन के समय पत्रकारों को सनयातसेन के गुप्त-स्थान का पता नहीं लगा। १९१४ के जून में न्यूयार्क के ट्रीब्युन में छपा था कि टोकियो के किसी कोने में टूटी सी कुटिया में रहते थे। वहाँ पर उस निर्वासित आत्मा से संवाददाता ने बातें की थीं। उनके कमरे में मेज पर बहुत सी सामयिक पत्रिकायें तथा पत्र रखे हुए थे। दीवारें पुस्तकों से सजी हुई थीं।

उस समय सनयातसेन वह सनयातसेन नहीं थे। इस बार उनमें अपनेपन की झलक थी, क्रोध से जले हुए, और हृदय में शत्रुओं के प्रति घृणा का भाव रखे हुए थे। यह क्रोध यूवान-शीह काई के विरुद्ध ही नहीं बरन् विदेशी पूँजीवादियों के प्रति भी पर्य्याप्त रूप में वर्तमान था जो कर्ज देकर चीन की पवित्र भूमि पर अपना कब्जा जमाने का सुख-स्वप्न देख रहे थे। उनकी घृणा विदेशी साम्राज्यवाद से थी।

उन्हीं के शब्दों में 'चीन से हम लोगों के निर्वासन का

कारण हम लोगों की भूल नहीं, हमारी जनता का दोष नहीं वरन् विदेशी सोना को चकमकाहट थी। विदेशी पूंजीवादियों ने कनसोरटीयम बना कर अपनी इच्छानुसार चीन से कन-सेशन लेने के लिये उत्तर और दक्षिण की क्षणिक कमजोरी को उत्तेजित किया। कनजरवेटिव दल को अपनी तरफ मिला लेने की क्षमता विदेशी पूंजीवादियों में खूब थी। जब प्रजा-तंत्रवादी आफिस में थे तब क्रेडिट के नाम पर हमलोगों को कर्ज देने से इन्कार किया गया। फिर वही यूवान-शीह-काई को व्यक्तिगत कर्ज देकर उन्हें बलवान बना कर हम लोगों पर अत्याचार कराया।

दूसरी स्त्री

सनयातसेन के लिये सोलह वर्ष के निर्वासित जीवन के बाद दूसरा निर्वासन अधिक कष्टकर हुआ। इस बार इनका उत्साह जाता रहा। परन्तु इस अवसर पर भी उन्हें एकाएक सान्त्वना मिली। उनकी आँखों के सामने एक चित्त को आकर्षित करनेवाली एक चीनी ग्रेजुएट नवयुवती आ पहुँची। उसका नाम सूंग-चींग लींग था। वह चार्लस सूंग की दूसरी लड़की थी। वह मैकोन के वेसलेन कालेज में पाँच वर्ष पढ़ चुकी थी। उसके पिता सनयातसेन के सहयोगी थे। १८९५ की क्रांति में इन्होंने द्रव्य की सहायता की थी। चार्लस सूंग ने अपने बच्चों को पाश्चात्य शिक्षा के लिये अमेरिका भेजा था।

अमेरिका में चीग-लीग विद्यार्थिनी के रूप में अध्ययन करते समय चीन में प्रजातंत्रवादियों की राज्यक्रांति की सफलता का समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्न हुई थी। हृदय के भाव को व्यक्त करने के लिये उसने कालेज मैगेजिन में एक लेख प्रकाशित कराया था। लेख में किसी क्रांतिकारी नेताओं का उल्लेख नहीं था, सनयातसेन का भी नाम नहीं था। परन्तु चीनी जनता की शक्ति में विश्वास था। मांचू राजवंश के च्युत होने पर हर्ष था। जब चीग-लीग १९१३ में चीन लौटी, उस समय प्रजातंत्र की जड़ हिल गई थी। उसके पिता जापान में शरण ले चुके थे। चीग-लीग की बड़ी वहन, ए-लीग टोकियो में अपने पिता के साथ रहती थी। चींग-लीग भी अपने परिवार के साथ टोकियो में मिल गई। ए-लीग उन दिनों सनयातसेन की सेक्रेटरी का काम कर रही थी। क्रिश्चियन तरुण संघ के सेक्रेटरी श्री कुंग से ए-लीग की शादी हो गई। चीग-लीग अपनी बहन के स्थान पर सनयातसेन को सहायता देने लगी। जिस समय सनयात-सेन जापान में अकेला जीवन व्यतीत कर रहे थे और हतोत्साह का भाव उनमें भर रहा था उस समय सूंग-चीग-लींग ने उन्हें काफी सहारा दिया।

सूंग-चीग एक नवयुवती, आधुनिकता के रंग में रँगी हुई जीवन की उच्च प्रेरणाओं से भरी हुई, सनयातसेन के भाव में अपनी भाव मिलाती हुई उनके हृदय को अपनी तरफ आकर्षित करने लगी।

सनयातसेन की पहली स्त्री जीवित थी। उसने तीन २ बच्चे पैदा किये थे। सून फो उनका लड़का था जो पाश्चात्य देश की उच्चतम शिक्षा पाया था। पहली स्त्री चीनी प्रथा

के अनुसार अपने पति की भक्त और पूरी भक्त थी। सनयात सेन चीन की प्रथा के अनुसार तलाक करा सकते थे परन्तु उनके लिये यह सम्भव नहीं था। अमेरिकन रीति के अनुसार भी यदि तलाक कोर्ट के जरिये कराया होता तो पश्चिमी जनता के लिये क्रिश्चियन धर्म के विरुद्ध न होता। परन्तु सनयात ने तलाक की सारी क्रिया जापान में करली थी। शादी कब हुई, इसका पता लोगों को नहीं। कुछ १६१४ मानते हैं, दूसरे १६१५ ईस्वी रखते हैं। सनयातसेन की दूसरी शादी के विषय में जनता को तभी खबर मिली जब सनयातसेन ने यूवान-शीह-काई का विरोध प्रकट रूप से करना शुरू कर दिया क्योंकि यूवान-शीह-काई ने राजतंत्र फिर से कायम कर दिया था। सून-फू की माँ चीनी प्रथा के अनुसार सनयातसेन से पृथक होने पर भी सनयातसेन के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखती थी। आज भी अपने हृदय में उन्हें सनयातसेन की पहली स्त्री होने का गर्व है और अपने को उसी स्थान पर मानती है जहाँ पहले थी। सनयात ने छोड़ दिया परन्तु श्रीमती सनयातसेन के हृदय में पूर्वभाव ही भरे हैं। श्रीमती सनयातसेन जहाँ रहती हैं वहाँ एक सनयातसेन का चित्र टँगा हुआ है। अपने पुत्र के दिये हुए मकान में रहती हैं। वृद्ध, दुखी और गरीबों की सेवा ही उनका धर्म है। स्त्रियों को शिक्षित बनाने का सतत उपयोग करती रहती हैं।

जनता ने पहले पहल कैन्टन में चींग-लींग को सनयातसेन के साथ देखा। जनता की आँखों में चींग-लींग को वह स्थान नहीं मिल सकता था जिसकी वह इच्छुक थीं। मिशनरी सोसाइटी ने भी दोनों युगल जोड़ी पर धार्मिक श्रद्धा

नहीं दिखाई। मिशनरी सोसाइटी से दोनों का सम्बन्ध था, केवल चर्च से ही नहीं बल्कि मिशनरी स्कूल में दोनों की शिक्षा हुई थी। सनयातसेन के इस कार्य से उनके चर्च-सम्बन्ध में परिवर्तन आ गया। किसी ने इस मामले को चर्च-कोर्ट या न्यायालय के सामने नहीं लाया। हांगकांग चर्च ने भी जहाँ इन्होंने ईसाई धर्म ग्रहण किया था इनके क्रांतिकारी कार्य्यों के कारण सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था कोई भी जाँच करने की आवश्यकता न समझी। सोलह वर्ष के निर्वासन से इन्हें हांग-कांग रहने का अवसर नहीं मिला था। मांचू राजवंश ने बृटिश अधिकारियों से मिलकर हांगकांग से भी निर्वासित करा दिया था। विद्रोही होने के कारण चर्च वाले इन्हें अपना सदस्य रखने में अपमान समझते थे। रजिस्टर रौल में इनके नाम के सामने निर्वासित लिखा हुआ था। हांगकांग चर्च से इनका सम्बन्ध ठीक नहीं चला। कुछ लोगों ने यह भी लिखा था कि क्रिश्चियन चर्च ने इन्हें जाति-च्युत कर दिया है पर यह एक झूठा अपवाद और किंवदन्ती के अतिरिक्त कुछ नहीं है। चर्च के रौल से इनका नाम कभी काटा नहीं गया जिसमें इनकी बपतिस्मा हुई थी।

सनयातसेन के दूसरे ब्याह से चीनी और विदेशी चर्च वालों ने जो कुछ भी आक्षेप किया हो परन्तु कोई धार्मिक अनुशासन के रूप में नहीं किया गया था। सनयातसेन और सूंग-चींग-लींग को उनके सम्बन्ध की टिप्पणियाँ अवश्य ही मालूम हुई होंगी। क्रिश्चियन सोसाइटी से गोलमाल तो होना अवश्यम्भावी था। फिर भी चर्चों में सनयात की जरूरत भी न रह गई थी। चर्चवाले इन्हें भाषण देने, उपदेश

देने के लिये बुलाने की आवश्यकता न समझते थे। इनके नाम की चर्चा मिशनरी जनरल में न थी।

अखबारों ने प्रसिद्ध कर दिया था कि सनयातसेन का विचार मिशनरी ईसाइयों की तरफ से बदल गया था। सनयातसेन ने अपने भाषण में भी कितनी बार कहा था कि मिशनरी ईसाई साम्राज्यवाद के अग्रिम एजेन्ट हैं।

सनयातसेन अपने जीवन के अन्तिम समय में पाश्चात्य-साम्राज्यवाद के कट्टर विरोधी हो गये थे। इसे घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। मिशनरी सोसाइटी को विदेशी लुटेरों का सहायक समझने लगे थे। उनके इन्हीं भावों को लोगों ने ईसाई मत का विरोधी समझा। परन्तु उनमें ईसाई धर्म के प्रति कोई ऐसा भाव नहीं था। ईसाई धर्म को वे बराबर उन्नति की सीढ़ी और मनुष्य चरित्र को विकासमय बनाने वाला समझते थे। सनयातसेन और चींग-लींग दोनों ने व्यक्तिगत मित्रता मिशनरियों के साथ रखा था। जीवन के पिछले गत में उन्हें कई बार क्रिश्चियन प्लैटफार्म से बोलने का निमंत्रण मिल चुका था। अक्टूबर १६२३ में क्रिश्चियन तरुण संघ के राष्ट्रीय कनवेनशन में उन्होंने भाषण दिया था।

चींग-लींग स्त्री होने के नाते कुछ शर्मिन्दा तो अवश्य हो जाती थी परन्तु वह पूरी आधुनिक ख्याल की स्त्री थी। उसके कारण सनयातसेन के पारिवारिक जीवन में भी आधुनिकता आ गई जिसमें कुछ विदेशीपन की भी झलक आ जाती थी। वह जापान में रहने वाले क्रान्तिकारियों के कार्य्यक्रम में दिलचस्पी लेने लगी थी, कार्य्यों में हिस्सा भी बटाने लगी थी। वह अपने पति की एक सच्ची विश्वासी सेक्रेटरी थी। जब सनयातसेन चीन के पबलिक जीवन में

आ गये उस समय चीग-लीग ने भी उनका साथ दिया। किसी भी पबलिक जलसे में जहाँ सनयातसेन जाते वहाँ यह भी मौजूद रहती। जहाँ इनका भाषण होता वहाँ यह उनके बगल में जाकर बैठती थी। उसने स्वयं भी कितने कार्य्य शुरू किये थे। वह सनयातसेन और नवयुवक आन्दोलन के बीच लेशन-अफसर का काम करती थी। सनयातसेन के जीवन के पिछले कार्य्यों में उसका भाग सदैव रहता था इसमें सन्देह नहीं।

जापान की लोलुपता

जब चीन में मांचू राजवंश च्युत कर दिया गया और आधुनिकता की तरफ प्रवृति बढ़ चली तब जापान को बड़ी आशा हुई कि अपने पश्चिमी विशाल पड़ोसी के साथ व्यावसायिक आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्ध का अवसर मिलेगा। जब सनयातसेन हतोत्साह हो गये थे और दूसरी क्रान्ति का प्रयास कर रहे थे तब भी जापान सनयातसेन की तरफ आशा लगाये हुए था। १९१३ के फरवरी और मार्च में सनयातसेन की यात्रा से आर्थिक समझौते की आशा हुई थी।

१९१३ के एक 'जापानमैगेज़िन' में निकला था—'रैडिकल

राजनीतिज्ञ जापान में गवर्नमेन्ट को उत्तर और दक्षिण के झगड़े में दक्षिण की सहायता के लिये चेष्टा करते थे क्योंकि दक्षिण चीन जापान का सबसे अच्छा गाहक है।

चीन का ¾ निर्यात दक्षिण में ही जाता है। परन्तु जापानी सरकार ने उत्तर दक्षिण के झगड़े में निष्पक्ष रहने का विचार किया था और अन्त तक उसी पर अटल रही।

१९१३ के नवम्बर में भी उसी मैगेजिन में निकला था—'चीन की क्रान्ति वाले दक्षिणी नेता जापान में ही शरण पाये परन्तु उनके रहने का कोई पता नहीं है। पेकिंग सरकार ने उनके शिर के लिये काफी इनाम घोषित किया है अतः उनके रहने का स्थान अज्ञात रहे तो अच्छा है डाक्टर सनयातसेन और उनके सहयोगी जापानी दोस्तों पर इतना विश्वास रखते हैं कि अपनो जान को उनके हाथों में अर्पण कर दिया है। कुछ विदेशी प्रेसवालों को सन्देह है कि जापान इस तरह अपने यहाँ वागियों को शरण देकर निष्पक्षता की घोषणा करता है। उन्हें जापान इंगलैण्ड और अमेरिका की याद दिलाता है कि वहाँ भी सरकार निष्पक्षता घोषित करके शरण चाहने वाले निर्वासितों को शरण देती है। जापानियों की सहानुभूति दक्षिण चीन के प्रति देखकर भी जापानी सरकार ने जिस निष्पक्षता का भाव रखा है वह सराहनीय है।

यूवान-शीह-काई ने कौमींगटांग को नाजायज घोषित कर दिया। इसको देखकर सनयातसेनने जापान में पुन के-मींग-टांग का संगठन किया। यह संगठन पूर्ण क्रान्तिकारी रखा गया। कौमींगटांग का राजनीतिक पार्टी के रूप में परिवर्तित होना सनयातसेन को अच्छा नहीं लगा था। इस नये संग-

ठन में सनयातसेन ने बड़े कड़े नियम रखे थे। अतः यह उतना सर्व-प्रिय न हो सका। सनयात स्वयं ही इस पार्टी के प्रधान थे। दूसरे अफसरों को उनके प्रति उत्तरदायी होना पड़ता था। उनके पुराने और सच्चे साथी वांग-चीग-वी और हुएन-सीग भी अँगुलियों के निशान लेने के विरोधी थे अतः वे जापान से एक फ्रांस के लिये और दूसरा अमेरिका के लिये रवाना हो गए। इस बार सनयातसेन ने सहायता के लिये प्रवासी चीनियों के नाम प्रार्थना और अपीलें न निकाली। जापान से ही जो कुछ सहायता मिल सकती थी उसी पर सन्तुष्ट थे।

उनका उद्देश्य जापान से सन्धि करने का था। इससे यूवान-शीह-काई की शक्ति कम होगी और सनयातसेन की पार्टी मजबूत होगी। जापान एक पूर्वी मजबूत पड़ोसी है, इसके साथ सम्बन्ध रखना हितकर होगा।

परन्तु जापान की चतुरता सनयातसेन के समझ में न आई। कुछ और भी चीनी अंधे हो गये थे। जापान ने यांग-टीसी प्रदेश में लोहे के व्यवसाय पर अपना अधिकार कर्ज के आड़ में सनयातसेन के समय में ही जमा लिया था। हूनन प्रान्त ने भी १९१३ में पेकिंग में स्वतंत्रता की घोषणा करके एक जापानी सिन्डीकेट से १५,०००,००० येन कर्जा ले लिया था परन्तु पेकिंग सरकार ने हूनन को फिर जीत लिया अतः वह कर्जा हवा हो गया। चीनी क्रांतिकारी नेता अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते थे। उधर जापानी अपनी कुशल बुद्धि से अपने राष्ट्र हित के लिये चीनी गल्तियों को लाभदायक बना लेते थे। यहाँ तक कि जापानी सनयातसेन को अपनी तरफ मिलाकर उनसे उस निर्वासित

अवस्था में बहुत कड़ी २ शर्तों पर अपना काम निकालने की चेष्टा में रहा करते थे।

सनयातसेन भी उनकी पहली सहायता और कृपा का ख्याल करके तथा वर्तमान निराशा में अपना अपमान देख कर उनकी तरफ झुक जाया करते थे। सनयातसेन उस निराशा की दशा में कभी यह ध्यान में नहीं लाते थे कि जापान चीन की कोई भी बुराई कर सकता है। उनका सिद्धान्त था कि जापान चीन का स्वाभाविक मित्र है और दोनों के हित में सामंजस्य है। इससे बढ़कर क्या होगा कि जापानी चीन की मुद्रा चीन को कर्ज देवें और अपनी व्याव-सायिक उन्नति करें। पाश्चात्य देश चीन का बँटवारा कर सकते हैं परन्तु उनका ख्याल था कि जापान चीन की स्वतं-त्रता के लिये खड़ा हो सकता है। इसलिये उनकी इच्छा थी कि जापान और चीन आर्थिक-संगठन से बंध जायँ और पुन. राजनीतिक संगठन से एक सूत्र में व्यवस्थित होकर सारे संसार से स्वतंत्र रह सकते हैं। अतः सनयातसेन जापानी जाल में रुपये के लिये नहीं फंसे बल्कि अपने अन्तर्राष्ट्रीय आदर्श के भाव से प्रेरित होकर जापानियों के साथ समझौता करने को तैय्यार थे।

लोगों का कहना है कि अब तक दो ऐसे कागज मिले जिसे यदि सनयातसेन ने सचमुच लिखा हो तो चीन के प्रति उनका विचार बदल जाने का प्रमाण होता है। १९१४ के जून में एक गुप्त पत्र प्रेसवालों को मिल गया। शंघाई में यह पत्र प्रकाशित किया गया था। परन्तु यह पत्र सनयात-सेन का है समझना गल्ति है। पत्र के लिखने का ढंग या विचार ही सनयातसेन से नहीं मिलता। परन्तु सनयातसेन

ने इसमें स्वीकृति दे दी हो सन्देह भी नहीं किया जा सकता। उस पत्र में चीन के क्रान्तिकारियों को सहायता देने की प्रार्थना थी जिसके बदले जापान को चीन में व्यावसायिक और व्यापारिक सुविधायें बिना रोक टोक दी जायेंगी। इस पत्र की सच्चाई और झुठाई का प्रमाण अब तक नही मिला।

एक गुप्त समझौता सनयातसेन और उनके साथियों ने जापानियों के साथ किया था जिसके आधार पर जापान ने चीन पर २१ मांगें १९१५ के अप्रेल में की थीं। इस गुप्त समझौते की सत्यता को जांचने के लिये इसकी तारीख का पता लगाना उपयुक्त होगा। १९१५ में जापानियों के प्रति चीन में असन्तोष का भाव फैल रहा था। सनयातसेन ऐसी दशा में जापान से गुप्त समझौता नहीं कर सकते थे। इस-लिये इस गुप्त समझौते के लिये १९१४ का फरवरी महीना दिया जा सकता है। सनयातसेन से जापानियों ने क्या २ चीजें माँगीं थीं उसका पता इस इक्कीस माँगों से मालूम होता है। सचमुच ही दक्षिण चीन पर आर्थिक अधिकार पाने की चेष्टा थी और इसके बदले में क्रान्तिकारियों को सहायता देने की बात थी।

'सुदूर पूर्व में शान्ति स्थापित करने के लिये चीन और जापान का सन्धि कर लेना नितान्त आवश्यक है ताकि किसी युद्ध छिड़ने के अवसर पर जापान सैनिक शक्ति के लिये जिम्मेवार रहेगा और चीन आर्थिक सहायता करेगा। वर्तमान चीनी सरकार से जापानी सरकार का समझौता होना असम्भव है और जापानी सरकार इससे सहयोग करने के लिये तैय्यार भी नहीं है।'

पत्र में किसी जापानी व्यापारी ने १,५००,००० येन कर्ज

और १००००६ राइफल देने की प्रतिज्ञा की है। सनयातसेन इस कर्ज के लिये १०,००००००० येन के वौन्ड देने के लिये तैय्यार होंगे। यह कर्ज जीते हुए प्रान्तों की चल-जायदादों से वसूल किया जायगा। जापानी केवल सैनिक शिक्षक ही नहीं बल्कि एक स्वयंसेवक सेना भी देंगे। मुद्रा के खर्च करने का प्रबन्ध भी वही करेंगे। पीली नदी के दक्षिण प्रान्तों में सैनिक प्रबन्ध में ही कर्ज की मुद्रा खर्च होगी। इसके लिये जीते हुए प्रान्तों में व्यावसायिक कार्य्य और रेलवे डेवलपमेंट जो दूसरे राष्ट्रों के हवाले न कर दिये गये हों वे जापानी और चीनी लोगों की सम्मिलित पूँजी से किये जायेंगे। नई सरकार के स्थापित होने पर जापान की सभी माँगें स्वीकृत और मान्य समझी जायेंगी। इसके अन्त में सनयातसेन इत्यादि के हस्ताक्षर भी हैं।

यह समझौता सनयातसेन के परामर्श और हस्ताक्षर से हुआ था कि नहीं, ऐतिहासिक अन्वेषण पर अवलम्बित करता है। १९१३-१६ तक की जीवनी का हाल ठीक २ पता नहीं चलता। क्या यह कागज सनयातसेन का अपमान करने के लिये निकाला गया था? परन्तु सनयातसेन की प्रसिद्धि सारे संसार में हो चुकी थी। उनको जाल में फँसाना सहल नहीं था। फिर भी अपमान करने के लिये किया गया हो तो अपमानित हो ही चुके थे। यूवान-शीह-काई के गुप्तचरों की करतूत हो यह भी विश्वास करना बिना प्रमाण के इस समझौते की सच्चाई पर ही विश्वास करना है। चीनियों के मस्तिष्क में जापान की गुप्त आकांक्षा को समझना भी सम्भव नहीं है। जापानी भी सनयातसेन की तरफ मित्रता का भाव रखते थे। किसी दूसरे मतलब

से सनयातसेन के विरुद्ध समझौते को प्रकाशित न करते।

सनयातसेन को उस स्थिति में देख कर भी यह समझना कि उनके लिये यह कार्य्य सम्भाव्य था। तो क्या इस समझौते पर इसीलिये विश्वास किया जा सकता है कि जापान को २१ मांग के कुछ दिन पहले यह निर्णय हुआ होगा। जापानियों के प्रति असन्तोष का भाव देख कर सनयातसेन किस तरह ऐसे समझौते के लिये सहमत हुए होंगे। उस अवस्था में उनके समझौते के अनुसार कोई कार्य्य नहीं हो सकता था। यदि ऐसे अवसर पर क्रान्तिकारी जापानी सेना की सहायता से चीन पर आक्रमण करते तो यूवानशीह-काई राष्ट्रीय-योद्धा होकर सर्व-प्रिय बन जाते। कोई आपस में समझौता हुआ भी होगा तो उसे लोग छोड़ कर हट गये होंगे।

सनयातसेन १९१४ के दंगों तथा बगावतों में बराबर हाथ बँटाया करते जो प्रेसिडेन्ट के मैनडेट से प्रकट होता है। सरकारी-संवाद एक प्रेस में जुलाई १८, १९१४ को प्रकाशित हुआ था—प्रेसिडेन्ट का हुक्म है कि जो कोई भी सनयातसेन हुएनसींग या चेन-ची-मी के हस्ताक्षर या चित्रवाला नोट लेगा और उसे भुनाने की चेष्टा करेगा उसे उसी समय प्राण-दण्ड दिया जायगा।

ये नोट विशेषत. सैनिक सिपाहियों में बांटे गये हैं तथा उन्हें सरकार के विरुद्ध बगावत करने के लिये उत्साहित किया जा रहा है।

नोटों का वितरण पूर्व समझौते के कार्यक्रम के अनुसार कुछ मिलता-सा मालूम होता है। सितम्बर १९१४ में टोकियो

से भी सनयातसेन ने एक स्टेटमेंट यूवान-शीह्-काई की कर्ज पालिसी पर निकाला था—

'कौमीगटांग ने अपनी कई बैठकों के बाद निश्चित कर लिया है कि कोई कर्ज-बौन्ड केन्द्रीय सरकार या प्रान्तों से अथवा इनके बैंकों और करेन्सी आफिसों से निकलने वाले नोट को नई सरकार स्वीकार नही करेगी।'

१६१४ में यूरोपीय महायुद्ध के छिड़ने पर जापान की लोलुपता चीन के प्रति बढ़ गई। यूरोपीय राष्ट्रों को महायुद्ध में संलग्न देखकर चीन से मनमाना कनशेसन लेने का मौका देखकर जापानी आगे बढ़ने की इच्छा कर रहे थे। जापान में कुछ राजनीतिज्ञों का गुट था जो चीन के सम्बन्ध में दिलचस्पी रखता था। और एक ब्लैक ड्रैगोन सोसाइटी भी स्थापित हुई। महायुद्ध के शुरू होने के कुछ महीने बाद ही इनलोगों ने एक मेमोरेन्डम तैय्यार किया था। आगे चलने पर पता मिलता है कि वह मेमोरेन्डम सरकार को स्वीकार था। यह मेमोरेन्डम ऐसी बुद्धिमता से तैय्यार किया गया था कि इसके प्रभाव को कम नहीं किया जा सकता। चीनी क्रांतिकारियों को उत्साहित करने के लिये इनका क्या कार्यक्रम था इसको जानना अति आवश्यक है—

जब यूरोपीय महायुद्ध समाप्त हो जायगा, अमेरिका को छोड़ कर जो किसी तौर के लाभ की चेष्टा न करेगा, चीन को कोई भी राष्ट्र कर्ज देने पर तैय्यार न होगा। चीन का दिवालिया सरकारी कोष अपने अफसरों और सिपाहियों को तनख़ाह न दे सकेगा। स्थानीय लुटेरे गरीब जनता को बगावत करने के लिये अवश्य ही उकसायेंगे। क्रान्तिकारी भी अपना मौका देखकर आगे बढ़ेंगे। यदि ऐसी अवस्था

सचमुच चीन की हो जाय और कोई बाहरी सहायता न मिले तो यूवान-शीह-काई को अकेले स्थिति सम्हालना अति-दुष्कर ही नहीं बल्कि असम्भव हो जायगा। नतीजा यह होगा कि चीन राष्ट्र कई भागों में टुकड़े २ बँट जायगा और स्थिति सुधरने के बिल्कुल विपरीत हो जायेगी।...

जापान के लिये चीनी जनता के भावों को ख्याल न करना और यूवान-शीह-काई को इस आशा से सहायता देना कि उनसे चीनी-प्रश्न पर समझौता हो जायगा एक वृहद् भूल होगी। हमलोगों को चाहिये कि चीनी क्रान्तिकारियों, साम्राज्यवादियों तथा और असन्तुष्ट चीनी जनता को उभाड़ने की चेष्टा करें ताकि सारे देश में गोलमाल हो जाय और यूवान-शीह-काई की सरकार खत्म हो जाय। तब हमलोग ४००,००० ००० चीनी जनता में से एक प्रभावशाली व्यक्ति को चीन की सरकार संगठित करने के लिये चुनेंगे और उसे नई सरकार का निर्माण करने के लिये सहायता देंगे ताकि वह सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध सके।

ब्लैक ड्रैगोन सोसाइटी को विश्वास था कि चीनी क्रान्तिकारियों तथा असन्तोषी लोगों को उभाड़ने का इससे अच्छा मौका नहीं मिल सकता। ये लोग अपना कार्य्य पूर्ण रूप से नही कर सकते क्योंकि इनके पास धन पर्य्याप्त रूप में नहीं है। यदि साम्राज्य सरकार इस स्थिति का लाभ उठाना चाहे तो इन क्रान्तिकारियों को धन देकर इन्हें बगावत करने के लिये तैय्यार कर सकती है। चीन में इस समय बगावत होना असम्भव नहीं है। हमलोग हस्तक्षेप करके मामला सुलझाने का हक प्राप्त कर सकते हैं। यह लाभ का अवसर सर्वदा नहीं

आया करता। हमलोग उनके बगावत करने के लिये उन्हीं के ऊपर कब तक ठहरेंगे? क्यों नहीं हमलोग एक प्लैन तैय्यार करके सामने रखें? जब हमलोग वर्त्तमान चीनी प्रजातन्त्र का अध्ययन करें तो अवश्य देखें कि वर्त्तमान सरकार चीन की आकांक्षा को कहाँ तक पूर्ण करने में सफलीभूत है। जिस समय से प्रजातन्त्र सरकार चीन में स्थापित हुई तब से मौजूदा सरकार ने क्या २ कार्य्य किये, और एकता तथा शासन के वनिस्बत क्या २ होना चाहिये था इसकी तुलना की जाय तो असफलता ही असफलता नजर आती है। क्रान्तिकारी भी जिन्होंने प्रजातन्त्र-सरकार स्थापित करने की चेष्टा की थी प्रकट रूप में कहते है कि उन्होंने गल्ती की। चीन में प्रजातन्त्र सरकार को क़ायम रखने से भविष्य में चीन जापान संघ स्थापित होने में बड़ी २ वाधायें उपस्थित होंगी। वर्त्तमान अवसर का लाभ उठाकर जापान को चाहिये कि प्रजातन्त्र सरकार को वैधानिक राजतन्त्र की स्थापना करने में सहायक हो और जापान के राजतन्त्र की नाईं ही नया राजतन्त्र स्थापित हो। नये शासक के चुनने में हमलोग सम्राट हुए न-टंग को गद्दी पर बिठा दें या राज-वंश में किसी शक्तिशाली व्यक्ति को चुन लें अथवा किसी क्रान्तिकारी ही नेता को अवसर दे दें।'

यह सोचा जा सकता है कि यदि १६१४ या १६१५ के प्रारम्भ में सनयातसेन को यह प्रकट हो होता तो वह कितने क्रुद्ध हुए होते। जापानियों के प्रति उनके मन में घृणा का संचार होता। वे किस तरह जापानियों के प्लाट में क्रान्तिकारी की हैसियत से जापानियों को राज-तन्त्र स्थापित करने में सहायक होना पसन्द करते। वह कितना भी

हतोत्साह हुए होते परन्तु वह इस बात को नहीं सुन सकते थे कि जिन क्रान्तिकारियों ने प्रजातन्त्र सरकार स्थापित करने की चेष्टा की वही इस तन्त्र के विरोधी हैं। सनयातसेन ने ब्लैक-ड्रैगोन-सोसाइटी के मेमोरेन्डम को कभी नहीं देखा था नहीं तो इस भ्रम को वह उठने नहीं देते। एक आश्चर्य्य की बात है कि उन्हें इस बात पर सन्देह हुआ था, कि नहीं कि उनको जबर्दस्ती सहायता देने का यह ढंग केवल एक राजनीतिक चाल है जिसके द्वारा एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को अपने लिये हड़पना चाहता है। सनयातसेन ने देखा हो अथवा नहीं। जापान का हाथ चीन के पीठ पर था, इसका रहस्य १९१५ के १८ वी जनवरी को लग गया जब जापानी राजदूत ने स्वयं ही पेकिंग में यूवान-शीह काई को जापान की २१ मांगें दी थी।

चीन ने जापान की २१ माँगें स्वीकार नहीं की। इसका श्रेय दूसरे देशभक्तों को है न कि सनयातसेन को। लियांग-ची-चाव की लेखनी जापान की तलवार से भी प्रभावशाली थी। कुछ लोगों का कहना है कि यूवान-शीह-काई की राजनीतिज्ञता इस संकट काल में सबसे बढ़कर सराहनीय थी। चीन की स्वतन्त्रता बच गई यद्यपि सन्धि के अनुसार जापान को हस्तक्षेप करने का एक जरिया मिल गया। १९१५ की पचीसवी मई को चार महीने के जबर्दस्त आन्दोलन के बाद सन्धि पर हस्ताक्षर हुए।

दोनों पुरुषों के चरित्र में भिन्नता यहीं पर नजर आती है। यूवान-शीह-काई जानते थे कि चीन के साथ बलात् हो रहा है। सनयातसेन समझते थे कि चीन और जापान की मैत्री के दिन नजदीक आ रहे हैं। यूवान-शीह-काई के साथ देश की

सारी शक्ति थी। सनयातसेन की आँखें तब तक नहीं खुलीं जब तक उन्हें यह नहीं मालूम हुआ कि यूवान-शीह काई के साथ क्या हो रहा है।

१६१५ के शुरू में चीनी निर्वासित जनता जो जापान में रहती थी उन पर चीनी जनता की तरफ से लांछन लगाये जा रहे थे। उन पर आक्षेप हो रहे थे। क्रान्तिकारियों को यह बात लगी और कुछ लोगों ने अपने हस्ताक्षर करके एक स्टेटमेंट निकाला। इस पर सनयातसेन का दस्तखत नहीं था।

'हमलोग चीन की वर्त्तमान सरकार को बुरा मानते हैं और इसके लिये हमलोगों को हार्दिक दुःख है। परन्तु ऐसा कौन होगा जो अपने देश के विरोध में दूसरे देश की शक्ति की सहायता से लडने के लिये अग्रसर होगा, एक भेड़िए को भगाने के लिये दूसरा भेड़िया निमंत्रित करेगा? इस संकटकाल में हमलोग देश हित को आगे और पार्टी-मतभेद को पीछे रखते हैं। हमलोग सरकार का परिवर्तन करना चाहते हैं परन्तु कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे राष्ट्र की स्थिति में किसी प्रकार का खतरा हो। जापान के झगड़े के सम्बन्ध में यह कहना अत्युक्ति नही है कि हमलोगों का देश कमजोर है क्योंकि आपस में बुरी तरह से विभाजित है। हमलोगों का विश्वास है कि इस स्थिति के लिये वर्त्तमान सरकार उत्तरदायी है। इसलिये हमलोग उन्हें अपनी सफाई के लिये छोड देते हैं।' यह स्टेटमेंट फरवरी में प्रकाशित हुआ। इसके बाद अप्रेल में सनयातसेन और कुछ जापा-नियों का समझौता भी निकला। तब सनयातसेन को अप-मानित करने का उपयोग होने लगा। इसी समय यूवान-शीह-

काई के अफसरों ने सनयातसेन की दो भद्दी और द्रोही जीवनियाँ प्रकाशित कराईं। इन पुस्तकों का चीन में मिलना दुश्वार है। यदि होंगी भी तो गुप्त रूप से एक दूसरे के हाथ में दी जाती होंगी। ये पुस्तकें जब्त हैं। पहली पुस्तक 'सन-चेन का छोटा इतिहास' जो ३३०० शब्दों की पुस्तक है। दूसरी पुस्तक जो १०००० शब्दों की थी जिसका नाम 'सन-चेन, राष्ट्र का चोर' था। कहा जाता है कि ये पुस्तकें चीन के बड़े प्रतिष्ठित आदमियों की लिखी हुई हैं।

इन घटनाओं का क्या असर हुआ होगा कोई भी समझ सकता है। कुछ योग्य जापानी एजेन्टों ने सनयातसेन को उसकाया कि आप में और हमलोगों में चीन-जापान-सम्बन्ध में एक मत है। आर्थिक और राजनीतिक सहयोग। जापानियों ने एक ड्राफ्ट बनाया जिसमें चीनी क्रान्तिकारियों की सहायता और उसके एवज में जापान को व्यवसाय और व्यापार के लिये कनसेशन इत्यादि लिखा गया था। सनयातसेन से दस्तखत कराया गया और उसको जापान के बड़े अफसर के पास भेजा गया।

उसके बाद गुप्त समझौता सनयातसेन के साथ १९१४ की फरवरी में हुआ। सनयातसेन ने बौन्ड प्रकाशित किये। ४०००० येन कर्ज के रूप में भी ले चुके। क्रान्तिकारी नोटों का भी प्रकाशन हुआ जिसे प्रेसिडेंट यूवान-शीह-काई ने लेना जुर्म ठहराया।

१९१५ की जनवरी में जो मांग जापान ने चीन से की थी और उसके ऊपर दोनों तरफ से जो भाव प्रदर्शित हो रहे थे उससे चीन तथा सारे संसार को मालूम हो गया कि जापान चीन की राजनीतिक परिस्थिति का लाभ उठाकर

अपने लिये बिना रोक टोक के ज्यादा से ज्यादा आर्थिक, व्यापारिक कनसेशन चाहता है। अब तो यह इतिहास का विषय हो गया कि जापान ने अपनी इच्छा पूर्ति के लिये किस तरह से राजनीति दबाव दूसरे राष्ट्रों पर दिये थे ऐसे समय में जब वे यूरोपीय महायुद्ध में लगे हुए थे। उन राष्ट्रों को कोई दूसरा रास्ता नहीं था। जापान की इच्छा में बाधा डालने से शत्रु का साथ देने के लिये जापान तैय्यार हो जाता। जापानियों के दिमाग किस तरह कार्य्य करते हैं वह ब्लैक ड्रैगोन सोसाइटी के मेमोरेन्डम से पता लग जाता है। जापानियों के कुछ राजनीतिज्ञों का दल इन्हीं बातों की उधेड़ बुन में लगा रहता है। कूटनीति और राजनीति की परस्पर चालों को परखने में इनकी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन हो जाता है। जापानी सरकार को मेमोरेन्डम भेजा गया था। सरकार यदि कोई काम करने में हिचकती भी हो तो जनता में प्रभावशाली व्यक्ति उसे कराने के लिये वाध्य करते हैं। उन्हें नीति और अनीति का कोई डर नहीं।

सनयातसेन और जापानियों से मित्रता हो गई थी इसमें सन्देह नहीं है। १९१३ में सनयातसेन का जो स्वागत जापानियों ने किया था उसी से पता चल गया था कि जापानी रेलवे प्रोजेक्ट के लिये द्रव्य देने को तैय्यार हैं। २१ माँगों में व्यावसायिक और व्यापारिक उन्नति के लिये विशेष चेष्टा थी। इन्ही कारणों से सनयातसेन को जापानी, द्रव्य से सहायता किया करते और सनयातसेन यूवान-शीह-काई को अपने क्रान्तिकारी दल के द्वारा हराकर प्रजातंत्रवादियों की विजय कराते।
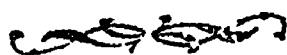
पुनरागमन

यूवान-शीह-काई ने कौमींगटांग को नाजायज कर दिया। उनके कार्य्यों में हस्तक्षेप करने के लिये न कौमींगटांग मंत्री मंडल था न कौमींगटांग पार्लीमेण्टरी सदस्य थे। कौमींग-टांग गवर्नर भी हटा दिये गये। दूसरी राज्य-क्रान्ति में कौमींगटांग सेना या उससे सहानुभूति रखने वाले सिपाही समाप्त हो चुके थे। सनयातसेन या हुएन-सींग निर्वासित कर दिये गये थे।

यूवान-शीह-काई स्वयं भी जापान छोड़कर सभी विदेशियों में काफी प्रिय थे। उनके विदेशी सलाहकारों ने ही उनके जाने की अवधि जल्दी कर दी। उनका एक कनसटीस्यु

शनल एडवाइज़र अमेरिकन था जिसका नाम डाक्टर गुड-नाउ था। उसने यूवान-शीह्-काई के लिये एक नया विधान तैय्यार किया था जिसको कनसटीस्युशनल कमपैक्ट कहते हैं जिसके द्वारा प्रेसिडेंट के हाथ में अत्यधिक अधिकार आ जाते थे। वह एक छोटे नेपोलियन से कम शक्तिशाली नही होते। यूवान-शोह्-काई ने प्रान्तीय गवर्नरों को अपनी तरफ मिलाकर शासन पर पूरा अधिकार जमाया था। प्रान्तीय गवर्नरों को यूवान-शीह्-काई ने नियुक्त किया था। उत्तर में शांटग इत्यादि स्थानों में आधुनिक ढंग पर सैनिक संगठन किया था जिससे प्रजातंत्रवादियों को दूसरी क्रांति के समय दबाने में आसानी हुई। यूवान शोह्-काई ने अपने प्रेसिडेंटशिप में कोमीगटांग को दबाकर केन्द्रीय शासन को सुदृढ़ बनाये रखा। प्रारम्भ में यूवान-शीह भी प्रजातंत्र के भाव स प्रभावित होकर प्रजातंत्र की तरफ झुके थे। परन्तु पीछे की घटनाओ और, अपनी मनोवृत्ति की प्रतिकूलता से उनका दिमाग प्रजातंत्र के विरुद्ध हो गया। १९१४ के शीत में प्रेसिडेन्ट न 'स्वर्ग के चबूतरे' पर ऐसा शाही उत्सव मनाया जैसा सम्राट लोग किया करते थे। इससे जनता में खलबली-सी पैदा हुई। लोगों को उनके साम्राज्य लिप्सा की भावन मिल गई। जनता का ध्यान जापान के अलटीमेटम से खिन्न गया था। इस बीच में क्या २ हुआ कोई नही कह सकता

१९१५ के अगस्त मास में एक पूर्ण विकसित संगठन का निर्माण हुआ जिसका उद्देश्य चीन में राज तंत्र स्थापित करने का था। एक पैमफ्लेट भी प्रकाशित हुआ जिसका नाम 'वैधानिक राजतंत्र-ही चीन की मुक्ति है' था। एक दूसरी बात यह हुई कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से प्रोफेसर गुडनाउ

का मेमोरियल यूवान-शीह-काई के पास आया। उसमें चीन की परम्परा और संस्कृति का ख्याल करके राज-तंत्र का लाभ दिखलाया गया था।

जनता में तरह २ की अफवाहें फैलने लगीं। यूवान-शीह काई के शत्रु और सहयोगियों को उनकी आकांक्षा पर संदेह होने लगा। मेमोरियल, प्रार्थना पत्र, रिफरेनडम इत्यादि के द्वारा राज तंत्र आन्दोलन आगे बढ़ने लगा। स्थिति ऐसी पहुँच गई कि यूवान शीह काई को अपने सलाहकारों की बात माननी पड़ी। दिसम्बर में यह घोषणा की गई कि सन् १९१६ की पहली जनवरी को नये राजवंश का प्रारम्भ होगा और यूवान शीह काई को प्रथम सम्राट बनाना होगा। परन्तु उस दिन के पहुँचने के पहले ही बगावत हो गई।

जापान से सनयातसेन ने प्रेसिडेन्ट के ऊपर बौछार छोड़ना आरम्भ कर दिया। दिसम्बर ५ को शंघाई में शस्त्रागार पर कब्जा कर लेने की चेष्टा भी हुई। लोगों के पकड़े जाने पर जो कागजात मिले उन पर सनयातसेन का दस्तखत था। १९१६ में खबरें उडीं कि क्रांतिकारी नेता शंघाई में पहुँच रहे हैं। जबर्दस्त क्रांतिकारी बगावत सनयातसेन से नहीं शुरू हुई। लियांग-ची-चाव के नेतृत्व में यूनन प्रान्त ने बगावत की। लियांग-ची-चाव पहले राज-तंत्र के पक्षपाती थे और सनयातसेन से जापान में निर्वासनकाल के समय काफी परस्पर वार्तायें हुई थी। लियांग-ची-चाव की लेखनी में बड़ा जोर था। जापान से इसने एक जरनल निकाला था। फिर प्रजातंत्र स्थापित हो जाने पर चीन लौट आया। उत्तर में जाकर कुछ दिन पत्रों में काम किया, कई पदों पर रहा, और यूवान-शीह-काई को जापान का विरोध करने में बड़ी

सहायता की थी। परन्तु जब यूवान-शीह-काई सम्राट बनने की चेष्टा करने लगा तब उसने उनका विरोध करना शुरू किया। यूनन में जाकर शरण ली वहाँ पर एक प्रभावशाली जेनरल को मिलाकर जो उसका शिष्य रह चुका था, बगावत कराई। यूनन के यूवान-शीह काई से स्वतंत्रता की घोषणा करने पर छः और प्रान्तों ने बगावत की।

यह तीसरी क्रांति थी।

यूवान-शीह काई पर राजनीतिक दबाव पड़ने लगा। पहले पहल उनके शत्रु जापान ने दबाव दिया। उसके बाद और भी राष्ट्रों ने समझाया। जनमत को राजतंत्र के विरुद्ध समझ कर, राज्याभिषेक का विचार छोड़ दिया, राजतंत्र को तलाक दिया और २३ मार्च १६१६ को पुनः प्रजातंत्र स्थापित हुआ।

नवीं मई को टोकियो से खबर मिली कि हुएन-सींग कैंटन पहुँच रहे हैं परन्तु अमेरिका से आकर बीमार पड़ गये, तथा एकाएक उनकी मृत्यु भी हो गई। सनयातसेन ने १५ मई को एक घोषणा प्रकाशित की जिसके द्वारा राष्ट्र से क्षमा माँगी तथा यूवान-शीह-काई पर आक्षेप किये।

"मैं विदेश में था परन्तु मेरा प्रेम देश के प्रति जैसा था वैसा ही है। स्थिति ऐसी निराशा जनक और उत्साह रहित हो गई कि मैंने अकेले ही लड़ने का विचार किया। मैंने चूंग-हू-के-मींग-टांग का संगठन किया। जिससे आर्थिक और राजनीतिक दोष दूर हो जायँ और कानूनी राज्य की सत्ता कायम हो। मैंने दो वर्ष के अन्दर अपना सहयोगी चीन के भीतरी भागों में भी खोजने की चेष्टा की। सभी अपना काम कर रहे हैं। हम लोग किसी दूसरे की सहायता

का भरोसा नहीं करते बल्कि अपने उद्देश्य की सत्ता पर विश्वास है। यूनन और कीचाउ की स्वतंत्रता से मुझे सान्त्वना मिली है कि इस उद्देश्य के लिये हम ही लोग केवल लड़ने वालों में से नहीं हैं।

पूरा विचार करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि यूवान की गलती राजतन्त्र के पुनः स्थापित करने के पहले ही से प्रारम्भ हुई थी और केवल उन्हें पद-च्युत करने ही से प्रजातन्त्र की स्थिरता नहीं हो जायेगी। विश्वासघाती को दण्ड देना आवश्यक है। प्रजातन्त्र का विरोध यूवान ने विधान की अवज्ञा करके प्रारम्भ किया। प्रजातन्त्र की स्थिरता विधान की रक्षा पर ही निर्भर है। यूवान गलत रास्ते पर हैं और हमलोग सही इसमें कोई सन्देह नहीं। यूवान के प्रति हमलोगों को दृढ़ होने की जरूरत है। यूवान ने प्रजातन्त्र की अवहेलना की और अपने परिवार के गौरव के लिये जनता को गुलाम बनाने से न डिगा। इसी से यूवान को शत्रु समझते हैं और इन्हें हटाना अत्यन्त आवश्यक है।'

सनयातसेन को तकलीफ नहीं उठानी पडी क्योंकि जून ६, १९१६ को यूवान-शीह-काई की मृत्यु हो गई। उनका समय अभी पूरा नही हुआ था इसलिये अमेरिकन नियम की तरह वाइस-प्रेसिडेंट प्रेसिडेंट के पद पर आरूढ़ हुए। इनका नाम ली-यूवन-हंग था। यूवान-शीह-काई की मृत्यु से सनयातसेन को फिर चीन में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। वह शंघाई में जा बसे। वहाँ पर एक बड़ी सभा में दो घंटों तक 'प्रजातन्त्र सरकार' के ऊपर भाषण दिया उस समय सनयातसेन बड़े अच्छे भाव में आ गये थे। इनके विचार में वही ताजगी दिखलाई पड़ती थी जो पहले थी। भाग्य ने

पलटा खाया। सनयातसेन का जापानी जीवन उन्हे इतिहास में कलंक लगाता परन्तु यूवान-शीह-काई ने अपनी गलती से सनयातसेन को फिर रंगमंच पर ला पटका। यूवान-शीह-काई की मृत्यु हो गई परन्तु वह एक कलंक अपने साथ लेता गया कि मरते समय प्रजातन्त्र को तोड़कर अपने को सम्राट बनाना चाहा था। सनयातसेन को चीन आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ नहीं तो उनकी कहीं अस्वाभाविक मृत्यु हो जाती।

यूवान-शीह-काई के मरने के बाद कोई वैसा मजबूत आदमी प्रेसिडेन्ट के योग्य नहीं था। सिविल और मिलिटरी विभाग में जितना यूवान का प्रभाव था उतना किसी दूसरे का होना कठिन था। विधान-राज्य का अवसर प्राप्त हुआ। नये प्रेसिडेन्ट में यूवान के चरित्र-बल और चतुरता की तरह कुछ नहीं था। वह विधान का अनुसरण करना चाहते थे। पुरानी पार्लीयामेंट फिर बुलाई गई और उसे मौका दिया गया कि अपने अधिकार का सदुपयोग करे। कुछ समय तक ऐसा मालूम हुआ कि कार्य्य सुचारु रूप से चलेगा। १९१२ के स्वर्ग मन्दिर के विधान पर काम हो रहा था। यदि इस समय कोई बड़ी समस्या चीन के सामने न आती तो थे अपना काम निकाल लेते।

फरवरी ४, १९१७ को प्रेसिडेंट विलसन का यह समाचार सभी निष्पक्ष राज्यों को आया कि अपना राजनीतिक सम्बन्ध जर्मनी से हटा लें क्योंकि जर्मनी ने सबमेरिन का प्रयोग मनमाने तौर पर करने का विचार किया है। चीन ने जर्मनी और आस्ट्रिया के लीगेशन को पासपोर्ट तक मार्च में दे दिया। परन्तु उसके बाद पाँच महीने पर भी सरकार

इस नतीजे पर न आ सकी कि चीन को युद्ध में भाग लेना चाहिये वा नहीं। प्रधान सचिव-टूआन् ची-नुई युद्ध में सम्मिलित होने के पक्ष में थे। पार्लीयामेंट विधान इत्यादि तैय्यार करने के पक्ष में था। प्रधान सचिव ने प्रान्तों के मिलिटरी गवर्नरों को एक कानफ्रेंस के लिये बुलाया। गवर्नरों को प्रधान मन्त्री ने अपनी तरफ मिला लिया। मंत्रीमंडल ने भी युद्ध में सम्मिलित होने के लिये सम्मति दे दी। जब पार्लीयामेंट के सामने यह बात पेश हुई तब कुछ लोग पार्लीयामेंट हाल के सामने प्रदर्शन करने के लिये आ गये ताकि पार्लीयामेंट युद्ध प्रस्ताव स्वीकार कर ले।

इसमें प्रधान सचिव की चाल थी। सभी को मालूम हो गया। मंत्रीमंडल ने त्यागपत्र दे दिया। पार्लीयामेंट तथा जनमत प्रधान सचिव से त्यागपत्र चाहने लगी। वह त्यागपत्र देने के लिये तैय्यार नहीं थे। प्रेसिडेंट ने उन्हें प्रथक कर दिया।

३० मई को वागन (विधान समिति के प्रधान) विधान का एक जेनरल स्टेटमेंट प्रकाशित कराया। इसके विरोध में उत्तरी चीन के कुछ मिलिटरी गवर्नर ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। इन मिलिटरी गवर्नरों की एक बैठक हुई और पार्लीयामेंट को विसर्जित करने के लिये प्रस्ताव किया। यदि प्रेसिडेंट उनके प्रस्ताव को स्वीकार न करेंगे तो वे पेकिंग पर चढ़ाई करने के लिये तैय्यारी में लगे हुए थे। प्रेसिडेंट ने डर कर पार्लीयामैंट को बर्खास्त कर दिया। सदस्य भाग खड़े हुए, कुछ अपना वेष बदल कर शंघाई पहुँचे फिर प्रजातंत्र असफल हुआ। इस बार मिलिटरी ने पार्लीयामेंट को दबा दिया।

मिलिटरी पार्टी के प्रतिनिधि १५ जून को पेकिंग पहुँचे।

महोना समाप्त होते २ कांग-यू-बी जो सबसे बड़ा राज-तंत्र-वादी था पेकिंग में चुपचाप आ घुसा। दूसरे दिन राजधानी में गरम खबर फैल गई कि बच्चा-सम्राट गद्दी पर बैठा दिया गया। यह बात कहाँ तक सत्य है नही कहा जा सकता।

चीन की घटनायें इसी तरह हुआ करती हैं। यदि सम्राट का पुनरागमन हुआ भी होगा तो वह दो सप्ताह से ज्यादा न रहा होगा। प्रजातंत्र की पुन: स्थापना हुई। इस बार मिलिटरी पार्टी ने हान-ची-जूई के नेतृत्व में १४ जुलाई को पेकिंग पर कब्जा कर लिया। प्रेसिडेंट ली नें त्यागपत्र दे दिया। उनकी जगह पर वाइस-प्रेसिडेंट पहली अगस्त को प्रेसिडेंट घोषित हुआ। १४ अगस्त, १९१७ को चीन ने जरमनी और आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। चीन के युद्ध में भाग लेने का मतलब कुछ तो अविश्वास और कुछ युद्ध के समाप्त के बाद युद्ध पुरस्कार के ख्याल से था। चीन की मिलिटरी पार्टी में स्वार्थ भरा था। चीन के शासन में अपना दृढ़ आधिपत्य जमाने का भाव नहीं था।

सैनिकवाद की बढ़ती देखकर कोमींगटांग पार्टी डरने लगी। उसके कुछ नेता युद्ध में चीन का भाग लेना ठीक नहीं समझते थे अतएव उन्होंने विरोध करना शुरू किया। युद्ध में चीन के सम्मिलित हाने से युद्ध के लिये कर्ज की आवश्यकता पड़ेगी। पदाधिकारी कर्ज के रुपयों का सुप्रबन्ध न कर सकेंगे। इन नेताओं ने चील को अपना भीतरी सगठन मजबूत करने के लिये लोगों को आह्वान किया। चीन की स्वतंत्रता पर जापानी आघात रोकने के लिये चीनी लोग युद्ध में शामिल हो रहे थे। जापान ने शांटग प्रान्त में जर्मन होल्डींग पर अपना कब्जा कर लिया था। टीगटावो का

बन्दरगाह दखल कर लिया और शांटुंग रेलवे को भी न छोड़ा। जापान युद्ध के बाद इसको पुरस्कार रूप में प्राप्त करने की चेष्टा करता। चीन की इच्छा थी कि युद्ध में भाग लेने से युद्ध समाप्त होने पर सन्धि-निर्माण में उन्हें भी कुछ हिस्सा रहेगा और तब जापान की चाल को रोकने में सफलीभूत होंगे। चीन किसी तरह से जापान को जर्मन अधिकार पर कब्जा देना नहीं चाहता था। सनयातसेन उस पार्टी में थे जो चीन की भीतरी व्यवस्था ठीक करने के पक्ष में थी। वे भी युद्ध में भाग लेने के विरोधी थे। उनकी सहानुभूति वांग पार्टी के साथ थी जो पेकिंग में प्रजातंत्र सिद्धान्त के लिये लड़ रहे थे। जब मिलिटरी और प्रजातंत्र पार्टी से खूब कसमकश चल रहा था तब ब्रिटेन और उसके मित्र लोग अपनी शक्ति चीन को युद्ध में खींचने के लिये लगा रहे थे। उस समय सनयातसेन ने एक पत्र लायड जार्ज को लिखा था—

'इंगलैण्ड ने मेरे जीवन की रक्षा की थी। इसके लिये मैं उसका ऋणी हूँ। मैं चीनी देशभक्त तथा इंगलैण्ड के मित्र की हैसियत से कह रहा हूँ कि आपके एजेन्ट चीन को युद्ध में भाग लेने की जो कोशिश कर रहे हैं वह चीन और इंगलैण्ड दोनों के लिये हानिकारक होगा।'

चीन को इंगलैण्ड की पूरी शक्ति पर विश्वास था कि अन्त में उसकी विजय होगी परन्तु अंग्रेजों की सतत चेष्टा जो चीनी सेना को युद्ध में भेजने की हो रही है वह भी विशेषकर मेसोपोटामिया में, हमारे विश्वास को कम कर रहा है। यह इंगलैण्ड के मान को क्षीण कर रहा है क्योंकि चीनी

जनता यह नही जानती कि जरमनी को हराने के लिये चोनी लोगों की क्यों जरूरत पड़ रही है।

सनयातसेन के विचार से चीन के युद्ध में भाग लेने से आपस में ही गृह युद्ध हो जाने का डर होता था। चीन में रहने वाले बहुत विदेशी बिना दोष के मारे जायेंगे। उनकी हत्या होगी। मुसलमानों की कट्टरता से दंगे और बगावतें हो सकती हैं। जिसका एक नतीजा यह होगा कि चीन की शक्तियां विखर जायेंगी।

चीन के यूरोपीय महायुद्ध में भाग लेने की जरूरत विशेषतया मजदूरों के लिये थी। चीन एक ऐसा देश है जहाँ असंख्यों की तादाद में मजदूर मिल सकते हैं। इससे चीन में मिलिटरी बाद को पूरा प्रोत्साहन मिला। यूरोपीय महायुद्ध में प्रवेश करने के बाद से चीन का इतिहास आपस की फूट और वैर का इतिहास है। सैनिकवाद देश के ऊपर अपना प्रभुत्व जमा लेता है, परन्तु उत्तर में भी यूवान-शीह-काई की मृत्यु के बाद कोई ऐशा शक्तिशाली पुरुष नहीं हुआ जो सैनिक वाद की बढ़ती हुई शक्ति को ही संगठित करता। चीनी-युद्ध के कारण आपस में ही एक दूसरे से लड़ने लगे, पेकिंग सरकार पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिये प्लाट और गुप्त चालों का कोई ठिकाना नही था। ये ही प्रेसिडेंट और मंत्री मंडल को चुनते और उतारते थे। १९२३ में यहाँ तक हालत हो गई थी कि एक सैनिक सरदार जिसका नाम टावोकुन था अपने राष्ट्रपति चुने जाने के लिये एक २ वोट के लिये पाँच-पाँच हजार डालर देने को तैय्यार था। यह पार्लीयामेंट वही थी जो १९१३ में यूवान-शीह-काई ने विसर्जन किया था। पार्लीयामेंट की इस अवदशा को देखकर सनयातसेन ने भी कड़ी

आलोचना की थी। प्रजातंत्र चीन में असफल हो गया। विधान के अनुसार शासन करने की पद्धति से लोग विमुख होते गये और सन १९२७ में चांग-सी-लीन चीन के अधि-नायक के रूप में प्रकट हुए।

१९१७ के जून में जब प्रेसिडेन्ट ली-यूवान-हंग को सैनिक सरदारों ने दबाव देना शुरू किया और पार्लीयामेंट को बर्खास्त कर देने के लिये मजबूर कर दिया तब कोमींगटांग के देश भक्त सदस्यों ने अपनी रक्षा के लिये पेकिंग को छोड़ दिया। उनमें कितने ही शंघाई में आकर सनयातसेन से मिल गये। आपस में बातें हुईं। उन्हें यह विश्वास हो गए कि पेकिंग देशभक्तों के लिये अप्राप्य है। पुरानी नौकर शाही तथा नया सैनिक-वाद के गुट से प्रजातंत्र का हित हो नहीं सकेगा। शंघाई से सदस्यों ने एक घोषणा निकाली जिसके द्वारा पार्लीयामेंट का विसर्जन करना नाजायज ठहराया गया। नई पार्लीयामेंट को बुलाना भी नाजायज माना गया। पेकिंग छोड़ कर किसी दूसरी जगह पार्लीयामेंट की बैठक करने की इच्छा प्रकट की गई थी। राजतंत्र के स्थापित करने की चेष्टा को विश्वासघात तथा साम्राज्य परिवार के साथ १९१२ में जो पारिवारिक आर्थिक समझौता हुआ था उसे जब्त करने की भी घोषणा की गई।

सनयातसेन अपने सहयोगियों के साथ एक दूसरी प्रजातंत्र सरकार स्थापित करने की इच्छा से कैन्टन गये। नगर के बाहर जनता ने इनका स्वागत किया। वह उस समय 'विधान के रक्षक' बन कर कैन्टन में पहुँचे थे। रम्प पार्लीयामेंट को कैन्टन में फिर बुलाया गया। १९१७ के अगस्त में काफी सदस्यों की संख्या एकत्र हुई। कोरम भी पूरा हो

गया। ५ वीं अगस्त को मिलिटरी पार्टी से अलग होकर कुछ चीनी जहाजों के बेड़े कैन्टन में आकर क्रांतिकारी दल से मिल गए। लोगों को आशा थी कि ली-यूवान-हंग दक्षिण चीन का साथ देकर राष्ट्रपति का पद ग्रहण करेंगे। पार्लीयामेंट ने एक प्रोविजनल गवर्नमेंट स्थापित किया जिसके सनयातसेन मिलिटरी-सरदार नियुक्त हुए। सनयातसेन ने उत्तरी सैनिक सरदारों की आलोचना की और इरादा भी प्रकट किया कि उन्हें दबाने के लिये सेना भी भेजी जायेगी। सिविल शासन के संगठन करने के लिये उनके साथ क्रान्ति के योग्य नेताओं का दल मौजूद था। वू-टींग-फैंग और टांग-शाव-यी ने सनयातसेन का साथ दिया।

सनयातसेन का लड़का सून फो कैन्टन राष्ट्रीय असेम्बली का सेक्रेटरी हुआ। कुछ दिनों तक इन लोगों को और प्रान्तों से सहानुभूति मिली। परन्तु पेकिंग की दशा कैन्टन में भी नजर आने लगी। असेम्बली के छोटे २ दल इस तरह निर्मित थे कि उनका आपस में सहयोग करना सरल नहीं था। शासन में अड़चने आने लगीं और सैनिक अधिकार पर आक्षेप होने लगा। यहाँ भी पुरानी राजनीतिक चालें होने लगीं। हत्यायें भी शुरू हो गईं। सनयातसेन ने देखा कि कांगसी-दल ही उनके कार्य्यों में हस्तक्षेप करता है। सनयातसेन में यूवान-शीह-काई की तरह पुरानी राजनीतिज्ञता नहीं थी। न उनमें प्रजातंत्र में सहयोग प्राप्त करने की व्यवस्था थी। एक साधारण मनुष्य की तरह भी वह दूसरों के साथ सहयोग करने में अयोग्य पाये गये। उनकी क्रान्तिकारी पद्धति तथा बहुत दिनों से उस सिद्धान्त के प्रतिपादन करते रहने से दूसरों के साथ मिलकर काम करने की प्रवृत्ति भी मर

चुकी थी। सहयोग त्याग कर वह दिनोदिन स्वेच्छाचारी होते जा रहे हैं। उनके सैनिक अधिनायकत्व को विरोधी पक्ष वालों ने असेम्बली में एक कानून पास कराकर तोड़ दिया। एक समिति स्थापित की गई। उसमें सात सदस्य रखे गये थे। सनयातसेन उसमें एक साधारण सदस्य की तरह चुने गये। उन्हें यह अनुभव हुआ कि समिति में उनका प्रभाव नहीं जमता और अपनी हार समझ कर धीरे २ सहयोग हटाने लगे। कुछ दिनो के बाद शंघाई चले आये। १९२० में सनयातसेन ने अपने एक क्वांगटंग साथी को जिसका नाम चेन-चींग-मींग था कैंटन से क्वांगसीदल को मार भगाने को कहा। उसने क्वांगटंग वालो के लिये भाव जागृत किया और १९२० के नवम्बर में अपना कार्य्य पूरा कर डाला। सनयातसेन कैन्टन लौट आये। पुरानी रम्प पार्लीयामेंट १९२१ के अप्रेल में फिर आई और सनयातसेन को चीन का 'राष्ट्र-पति' चुना। चेन-चींग-मींग क्वांगटंग का गवर्नर और सेना का सेनापति बनाया गया। सनयातसेन का 'प्रजातंत्र' केवल एक प्रान्त का था और चेन भी उसी प्रान्त का गवर्नर था।

क्रान्तिकारी सनयातसेन प्रजातंत्र के उस छोटे प्रजातंत्र से सन्तुष्ट कैसे होते। चेन-चींग-मींग को १९२१ की जुलाई में क्वांगसी प्रान्त जीतने के लिये भेजा। क्वांगसी राज-तंत्र के समय भी क्वांगटंग प्रान्त में सम्मिलित था। चेन ने उसे जीत लिया। उसके बाद सनयातसेन उत्तर की तरफ धावा करने की इच्छा करने लगे। चेन को यह ठीक नही जंचा परन्तु सनयातसेन ने बड़ी घोषणा करके स्वयं ही सेना लेकर आगे बढ़े। वह हार गये, सनयातसेन ने कहा कि चेन चींग-मींग

के द्रव्य और शस्त्र न देने से चढ़ाई विफल हो गई। अप्रेल में सनयातसेन कैन्टन लौट आये और चेन को गवर्नर के पद से हटा दिया। पुराने मित्र वू-टींग-फैंग को उस पद पर नियुक्त किया चेन उनका शत्रु बन गया।

कैन्टन में सनयातसेन के शासन की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित हो रहा था। सनयातसेन ने कुछ सुधार प्रारम्भ किया था। कैन्टन का म्युनिसिपल शासन बड़े अच्छे ढंग से हो रहा था। नगर की आधुनिक ढंग पर उन्नति होने लगी। क्वांगटंग प्रान्त का पुन' संगठन हुआ। आर्थिक व्यवस्था भी ठीक चल रही थी। कौमींगटांग दल का भी नया संगठन किया गया। १९०२ में पेकिंग सरकार में वू-पी-फू नाम का युद्ध-सरदार काफी प्रभावशाली हो गया था। उसने विधान को फिर से कार्यान्वित करने की चेष्टा की। प्रेसिडेंट ली-यूवान हग को पुनः पद पर आसीन कराया। लोगों में एक स्फूर्ति का सचार हुआ कि चीन पुन. एक हो जायगा।

सनयातसेन को निमंत्रण दिया गया कि पेकिंग में आकर चीन के पुनर्संगठन में भाग लें। सनयात ने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। इससे लोगों ने आलोचना शुरू कर दी।

चेन-चींग-मींग को मौका मिला। उसने यह घोषणा की कि उत्तरी चीन मे विधान की पुनर्स्थापना हो गई। दक्षिण में पृथक शासन की आवश्यकता नहीं है। सनयातसेन को इस्तीफा देना अनिवार्य्य है।

परन्तु सनयातसेन ने त्याग-पत्र नहीं दिया। चेन ने अपनी सेना लेकर कैन्टन की प्रेसिडेन्सी पर चढ़ाई कर दी। सनयातसेन भाग खड़े हुए और एक जहाज में जा छिपे। ५६ दिनों तक उसी में गुप्त रहना पड़ा। उन्हें यह ख्याल हुआ

कि इसमें उत्तरी चीन का कुछ हाथ है। इससे उत्तरी चीन के प्रति उनकी आग तेज हो गई। इस संकट काल में उनका साथ देने वाला एक नवयुवक सैनिक सरदार था। जिसका नाम चीयांग-काई-शेक था। चीयांग-काई-शेक ने उन दिनों की हालत एक पुस्तक में लिखी है। यह पुस्तक उसी जहाज में लिखी गई। जब सहायता मिलने की कोई आशा न रह गई तब सनयातसेन शंघाई चले गये।

राज्यक्रान्ति से चीन में प्रजातंत्र की स्थापना न हो सकी। केवल नाम का भेद था। क्रान्ति ने राजतंत्र च्युत कर दिया। इसके बाद ऐसे २ राजनीतिक कार्य्यक्रम का विश्लेषण होने लगा जिसका फल चीन के लिये अत्यन्त खराब हुआ। कौमींगटांग की तरफ से प्रकाशित पुस्तकों में असफलता के विशेषतः दो कारण बतलाये गये हैं। चीन में संगठित राजनीतिक पार्टी का अभाव था। दूसरा क्रान्तिकारियों का विरोधी दल से समझौता कर लेना। समझौता करने से राजतंत्र के सभी पुराने ओहदेदार अपने अधिकार सहित पदों पर आरूढ़ रहे। राजतंत्र काल का पुराना नौकरशाही ढंग जारी रहा। उनके लिये प्रजातंत्र की बू खराब थी। जब क्रान्तिकारियों के हाथ से अधिकार उनके हाथ में गया तब उसका दुरुपयोग करके चीन की राज्यक्रान्ति का प्रभाव समाप्त कर दिया।

सनयातसेन ने स्वयं भी एक पुस्तक 'चीन की राज्य-क्रान्ति' १९-३ में तैय्यार की थी। उसमें उन्होंने स्वीकार किया है कि क्रान्ति से प्रजातंत्र स्थापित नहीं हो सका। उनके विचार से असफलता का कारण क्रान्ति का क्रमविकास को छोड़कर

एकाएक प्रजातंत्र स्थापित कर देना था। क्रान्ति के बाद सैनिक क्रान्ति की आवश्यकता थी। इसके बाद एक वह समय आता जब लोगों में विधान और प्रजातंत्र के पाठ पढ़ाने का आन्दोलन होता। तब अन्त में पूर्ण प्रजातंत्र की स्थापना होनी चाहिये थी।

नवयुवकों में जागृति

चीन के राजनीतिज्ञों का द्वन्द्व और आपस की चख-चख से प्रजातंत्र जड़ न पकड़ सका। परन्तु इस अंधकार में ज्योति की झलक दिखलाई देने लगी थी। चीन के नवयुवक दल में राष्ट्रीयता की सुगन्धि आ चुकी थी। देश-प्रेम के भाव से स्फुरण आ गया था। प्रान्तीय और जातीय द्वेष के परे हो चुके थे। उनमें चीनी राष्ट्र के लिये एक सूत्र का भाव पैदा हो रहा था। उनमें उत्तर और दक्षिण का भाव नहीं था। विशेषतः दक्षिण चीन में नवयुवकों संगठन दृढ़ हो रहा था। उस समय के कुछ नवयुवक अब चीन के उत्तरदायी नेता बन चुके थे। वांग-चींग-वी और चीयांग-काई-शेक नवयुवकों

के प्रमुख थे। सुन-फो आधुनिकता के विकास के लिये सतत-प्रयत्न करता था। नवयुवकों को उत्साह से भरने के लिये, उनके भाव को जगाने के लिये, संघटन की शक्ति का उपयोग करने के लिये, सनयातसेन की दूसरी स्त्री सदा तैय्यार रहती थी ।

जब सनयातसेन शंघाई में रहते थे तब उनके नवयुवक प्रशंसकों ने ही 'चीन का अन्तर्राष्ट्रीय विकास' १९२० में सनयात से लिखवाकर प्रकाशित कराया था। जब सनयातसेन कैन्टन में प्रेसिडेंट घोषित किये गये तब उन्हीं नवयुवकों के आन्दोलन से कैन्टन में म्युनिसिपल सुधार हुआ। कैन्टन एक नया और सुन्दर आधुनिक नगर बन गया । स्थानीय स्वायत्त शासन का नया संघटन किया गया । सुन-फो कैन्टन के मेयर नियुक्त हुए। पुरानी पत्थर की नगर दीवार तोड़ दी गई और उन पत्थर के टुकड़ों से पक्की सड़कें बनी। अमेरिकन एक्स प्रौप्रियेशन के तरीक़े पर बांध और नगर के व्यावसायिक केन्द्र की उन्नति की गई । सर्वसाधारण के व्यवहार की चीजें शुरू हुईं। पार्क और खेलने के लिये सुन्दर सुन्दर क्षेत्र तैय्यार किये गये । कैन्टन के विषय में लोग कहने लगे थे कि चीन में भी आधुनिक रीति पर कार्य्य हो सकता है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण कैन्टन की आधुनिकता है। इसका श्रेय नवयुवकों का उत्साह और अपनी शक्ति का विश्वास था।

सबसे बड़ा परिवर्तन नवयुवकों की मानसिक दशा में हुआ। चीन के नवयुवक विदेशों से शिक्षा प्राप्त करके अपने स्वदेश को लौट रहे थे। इनकी संख्या काफी थी। वे रूस की क्रान्ति में खूब दिलचस्पी ले रहे थे। १९१७ की

रूस क्रान्ति के बाद चीन का शिक्षित नवयुवक वर्ग मास्को की तरफ आकर्षित हो गया था। वे रूस की क्रान्ति तथा उनके नये कार्य्यक्रम को बड़े चाव से अध्ययन करने लगे। उन्हें कुछ २ आशा थी कि शायद उनके देश की निराशाजनक स्थिति में रूस के तरीके काम कर सकें।

जब नवयुवकों को मालूम हुआ कि सनयातसेन लेनिन को धन्यवाद का तार भेजने में सफलीभूत हो गये तब उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। १६२० में बोलशेविकों का आगमन चीन में हुआ। चीनी नवयुवकदल उनकी प्रतीक्षा में ही था। तरुण समाज का केन्द्र पेकिंग था। १६१५ में यूवान-शीह-काई के मरने के बाद पेकिंग से 'नवयुवक' नामक पत्रिका निकलने लगी। इस पत्रिका का सम्पादक चेन-तू-सीउ जन्म से ही उग्र विचार का था। उसमें प्रकाशकों की प्रतिभा थी। जब १६२० के लगभग चीन मे कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन हुआ तब चेन-तू इसका पहला और प्रमुख सदस्य हुआ। पेकिंग राष्ट्रीय यूनीवर्सिटी के थोड़े दिनों के लिये डीन ऑफ लेटर्स के पद पर रहने से उसके प्रकाशन और लेखों का महत्व बढ़ गया था। इस पत्रिका ने लोकतंत्रिक पुस्तकों के प्रचार के लिये काफी जोर दिया था। अन्त तक इसके लिये प्रयत्न करता रहा। यह आन्दोलन पहले पहल संयुक्तराष्ट्र के चीनी विद्यार्थियों ने प्रारम्भ किया था और हू-शीह के लेख के द्वारा 'नवयुवक' में प्रकाशित हुआ। इसके बाद पेकिंग में यह आन्दोलन खूब जोर पकड़ गया। इस पत्रिका में जनता में बोले जाने वाली भाषा के प्रयोग पर जोर दिया गया था। पुरानी शैली केवल पुराने-विद्वानों के लिये रह गई थी। उसको सर्वसाधारण जनता समझने में असमर्थ थी।

पत्रकारों ने हू-शीह का ही साथ दिया। विद्यार्थियों ने आम जनता की भाषा का ही प्रयोग १९१९ के जापानीमाल-निषेध के आन्दोलन में किया था।

उस समय के कुछ लोगों का ख्याल है कि चीन में ४०० पत्र-पत्रिकायें जनता की आम भाषा में निकलने लगी थी। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक और गम्भीर विषयों पर पुस्तकें आम-भाषा में प्रकाशित होने लगी। इस विजय के कारण चीन के प्राइमरी स्कूलों में पुरानी पद्धति शब्दों के रटने की नही रह गई जो सनयातसेन के समय में थी। अब उन्हें राष्ट्रीय भाषा में शिक्षा दी जाती है जिस भाषा का व्यवहार शिक्षित जनता करती है।

सनयातसेन का नवयुवकों में बड़ा प्रभाव था। उनको तरुण-समुदाय आदर्श मानता था। उन्ही के द्वारा उनमें भाव जागृत हुए थे। सनयातसेन ने एक पुस्तक सन् १९२३ में प्रकाशित की थी जो पुरानी भाषा में ही लिखी थी। इस कारण नवयुवकों में उनकी पुस्तक का मान नही हुआ। सनयातसेन के भाषणों का जो संग्रह प्रकाशित हुआ था काफी सर्व-प्रिय था। भाषा मे क्रान्ति के साथ भावो में भी नवीनता आने लगी। पेकिंग राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी में हू-शीह ने कुछ और नवयुवकों के साथ पुरातन चीनी संस्कृति, कला, धर्म, नीति और प्रथा का सुन्दर विवेचन करना प्रारम्भ किया।

वरसाई की सन्धि से चीनी विद्यार्थियों की आँखें खुल गईं। वे अपनी शक्ति की थाह लगाने लगे। अपने अधिकार को समझने लगे। अपने राष्ट्र की कमजोरी उनकी नजरों के सामने प्रतीत हुई। राष्ट्रीय संस्था के भाव से उद्रेक होने लगे। गुप्त समझौते के अनुसार मित्र-राष्ट्रों ने चीन में जर्मन

उपनिवेश तथा प्रभाव क्षेत्र को जापानियों की मांग के अनुसार देने का वचन दिया। जापान ने शाटंग पर कब्जा भी कर लिया था। चीनी जनता इस जबर्दस्ती का विरोध कर रही थी। इसी आशा से चीन ने युद्ध में हाथ बंटाया था। पेरिस कान्फ्रेन्स ने जापान को जर्मनी के कब्जे पर बिठाना चाहा।

चीनो विद्यार्थियों ने अपना अध्ययन छोड़कर आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। पेकिंग में पहिले २ यह आग प्रारम्भ हुई। उसके बाद धीरे धीरे सारे देश में व्याप्त होने लगी। जुलूस निकलने लगे। जापान के विरुद्ध नारे लगने लगे। मिलिटरी से कहीं २ विद्यार्थियों का संघर्ष भी हो गया। आन्दोलन ने और भी जोर पकड़ा जब यह मालूम हो गया कि चीनी सरकार जापानियों की तरफ झुकाव रखती है तथा सन्धि करने के लिये तैय्यार है। अपने देश के नेताओं की काली करतूत को सारे देश में फैलाने लगे। जिस बात के लिये पेकिंग में प्रधान सचिव ट्वान-ची-जीड ने बगावत की और अन्त में चीन को युद्ध में घसीटा। मित्र-राष्ट्रों का साथ देने का यह युद्ध पुरस्कार है।

सारे देश में सभायें हुईं। कितनी पुस्तकें लिखी गईं। पैमफ्लेट बांटे गये। जुलूस निकाले गये। पोस्टर और प्लेकार्डों से शहर भर दिया गया। जहाँ देखिये वहाँ जापान का वहिष्कार करो के नारे लग रहे थे। पत्रों में जापान के वहिष्कार का बड़ा भारी आन्दोलन चला। इसका बड़ा जबर्दस्त प्रभाव जनता के ऊपर पडा। इन नवयुवकों के उत्साह और भाव को जनता ने बड़े ध्यान से देखा। जापानी माल का वहिष्कार होने लगा। थोड़े दिनों में जापानी

व्यापार मंदा पड़ गया। मंत्रियों को त्याग पत्र देना पड़ा। वरसाई में चीनी प्रतिनिधि ने हस्ताक्षर करने से इन्कार किया।

चीन उन दिनों तरुण समुदाय की वीरता और साहस का पिटारा था। सम्पूर्ण राष्ट्र के चीनी विद्यार्थी एक राजनीतिक संगठन में बँध गये थे। इनका संघठन बड़ा दृढ़ था। वे अपनी शक्ति का अन्दाजा पा चुके थे। उन्हें अपने पर विश्वास हो गया। वे अभी अध्ययन करने वाले विद्यार्थी थे। जो कार्य्य उनके बुजुर्ग नेता धन और जन का नाश करके न कर सके वह इन नवयुवकों ने संगठित शक्ति की पुकार से करके दिखला दिया।

सनयातसेन उस समय शंघाई में रहते थे। जब विद्यार्थियों ने विजय प्राप्त कर लिया तब सनयातसेन ने भी चीन को जापानी बाजार बनाने के विरोध में आवाज उठाई।

चीन में शिक्षा-प्रचार का भी आन्दोलन चल रहा था। सम्राज्ञी डोवाजर का नव वर्ष का कार्य्यक्रम चलता था। उसके अनुसार १९१७ तक चीन जनता का पाँचवाँ हिस्सा शिक्षित कहलाने का अधिकारी हो जाता।

प्रजातन्त्र शिक्षित जनता के लिये ठहर नहीं सकती थी। परन्तु शिक्षा के विना वोटर अपने राजनीतिक अधिकार का सदुपयोग नहीं कर सकता। उसे राष्ट्रीय समस्याओं के समझने की क्षमता न रहेगी। अत. राष्ट्रीयता से सम्बन्ध रखने वाले भाव की जागृति नही होगी। जब तक जनता में अपने जीवन और राष्ट्र के जीवन से सम्बद्धता का भाव नहीं आता तब तक प्रजातन्त्र या पार्लीयामेंट के चुनाव उसके लिये केवल दो या तीन दलों की लड़ाई है। उस पर वैसी

हालत में नाजायज दबाव पड़ते हैं। सिद्धान्त के बदले सामयिक दृष्टि अधिक काम करती है। चीन में मिलिटरी राज का उद्गम चीन की जनता की अनभिज्ञता के कारण हुआ था। यदि चीन मांचूराज वंश के विरोध में क्रान्ति कर सकता है तो उसे प्रजातन्त्र के सिद्धान्त समझने में क्या अड़चन थी ? मांचूराज वंश का विरोध उनके विदेशीपन के कारण था। अतः चीन में प्रजातन्त्र की सफलता के लिये चीनी जनता का शिक्षित होना अत्यावश्यक था। चीन के नवयुवकों की जागृति चीनी राजनीतिज्ञों के लिये एक उदाहरण थी। चीनी राजनीतिज्ञों की असफलता उनके पुराने राजशाही प्रथा के कारण थी। चीनी नवयुवक दल आधुनिक संसार के सन्देश को समझने में सफलीभूत हुआ और अपनी संगठित शक्ति से जापान और यूरोपीय राष्ट्रों को दिखला दिया कि उनके बिना चाहे कोई भी विदेशी चीन में नहीं रह सकता है।

सनयातसेन पत्रकार के रूप में

जिस समय चीन नई विचार धारा की लहर से सरा-बोर हो रहा था सनयातसेन कैन्टन और शंघाई में परिस्थिति के कारण समय बिता रहे थे। इनका अधिक समय अधिकतर लिखने में व्यतीत होता था। १९१८ से १९२५ तक का समय लिखने में ही कटा। चीनी भाषा में शंघाई से 'पुनसंगठन' नामक पत्रिका का सम्पादन करते थे। इनके लेखो से पता चलता है कि सनयातसेन अभी भी चीन में प्रजातन्त्र की सफ-लता के कारणों पर विचार किया करते थे। यद्यपि राज्य-क्रान्ति से राजवंश हटा दिया गया परन्तु प्रजातन्त्र असफल रहा। सनयातसेन ने प्रजातन्त्र के संगठन को राजवंश के पद-

च्युत से सरल समझा था। वह कहा करते थे कि जब विध्वंस-कारी युग समाप्त होगा तब क्रान्तिकारी संगठन सहज ही में सफलीभूत हो जायेगा। 'पहले तो यह प्रतीत हुआ कि मैं क्रान्तिकारी दल के प्रधान संचालक होने की हैसियत से राष्ट्रीय कार्य्य-क्रम को कार्य्यान्वित कर लूँगा। राष्ट्रीयता प्रजा-तन्त्र, साम्यवाद और विधान के पंच-सिद्धान्तों के पूर्ण करने में कोई वाधा न होगी। यदि मैं इस कार्य्यक्रम के पूर्ण करने में सफल होता तो अवश्य ही चीन अन्तर्राष्ट्रीय परिवार का एक सुदृढ़ अंग बन जाता और विकास तथा समृद्धि के पथ की ओर अग्रसर होता। परन्तु राज्य क्रान्ति अभी पूर्ण भी नही हुई थी कि मुझसे और दूसरे सदस्यों से मतभेद हो गया। वे मेरे कार्यक्रम को निकम्मा और असम्भव समझने लगे। उनके सन्देह पक्के हो गये तथा मेरे उद्देश्य प्राप्ति को असम्भव कहने लगे। जब मैं राष्ट्रपति के पद पर आसोन हुआ तब कार्य्यक्रम और भी कार्य्यान्वित नहीं हुआ। राष्ट्रीय संगठन का कार्य्य पूरा नहीं हुआ और बीच ही में छोड़ दिया गया यही प्रजातन्त्र की असफलता का कारण है।

चीन की राज्य क्रान्ति के पूर्व उद्देश्यों का विश्लेषण किया जाय तो मालूम हो जायगा कि चीनी जनता की मुक्ति का ही ध्येय रखा गया था परन्तु क्रान्ति के बाद चीन की जनता और भी पीड़ित हो गई है और देश अधिक विपदग्रस्त हो गया है। इसमें मेरी भी अयोग्यता शामिल है कि मैं अपनी पार्टी को अपने कार्य्यक्रम के लिये तैय्यार न कर सका। फिर भी क्रान्तिकारी सदस्यों को कार्य्यक्रम और उद्देश्यों में पूर्ण विश्वास न रखने का भी दोष है।'

सनयातसेन ने अपने देशवासियों के सामने कितनी बार

कहा था कि प्रजातंत्र की असफलता का कारण उनके कार्य-क्रम की अवज्ञा थी। वह इस बात को मानने के लिये तैय्यार नहीं थे कि उनका कार्य्यक्रम कार्यरूप में परिणत करने लायक चीन की उस अर्द्ध विकसित आधुनिकता में नहीं था। उन्हें बड़ा दुख होता था यदि कोई उन्हें आदर्शवादी कहता था।

अपने एक लेख में सनयातसेन ने लिखा है कि चीन का राजनीतिक विकास फ्रांस की राज्यक्रांति के समय फ्रेन्च जनता के राजनीतिक विकास से बहुत कम है। परन्तु इस कमी की पूर्ति के लिये उन्होंने ६ वर्ष में शिक्षा का कार्यक्रम पूरा करने का प्रबन्ध किया था। इसी कार्यक्रम के छोड़ देने का फल प्रजातंत्र की असफलता है।

यदि उनसे यह कहा जाता कि चीन को पूर्ण आधुनिक राज्य बनाने में चीन की सारी जनता को शिक्षित बनाना पड़ेगा और इसके लिये कितने समयों की आवश्यकता पड़ेगी। उसके लिये साफ शब्दों में उत्तर देते कि विद्यार्थी पहले पढ़ना सीखता है तब उसके बाद कार्य करता है। परंतु राष्ट्र-निर्माण में यदि पुनर्संगठन क्रांति के द्वारा करने की इच्छा हो तब समझने के पहले भाव से प्रेरित होकर कार्य्य करना पड़ता है। यह अवसर की बात नहीं बल्कि आवश्य-कता की चीज है। प्रायः सभी बड़े २ राष्ट्रों की यही हालत रही है अपनी शक्ति का संघठन कर चुकने के बाद ही जनता को शिक्षित करने का कार्य आगे बढ़ाया है। चीन के लिये कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी कि थोड़े समय ही में एक बड़े राष्ट्र के रूप में परिणत हो जाता। अयोग्यता तो सरकार और उसके पदाधिकारियों में है। यहाँ के पदाधिकारी बड़े बड़े अत्याचार करते हैं। अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगे रहते हैं। लूट

और घूसखोरी से पदाधिकारी थोड़े ही दिनों में असीम धन जमा कर लेते हैं। यदि ये चीजें बन्द हो जायँ तो सन्देह नहीं कि चीन को आगे बढ़ने में कोई रुकावट न होगी।

सनयातसेन ने अपने लेखों में यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि राष्ट्रीय उद्देश्य को प्राप्त करने में केवल शिक्षा ही नहीं वरन् आर्थिक स्थिति भी उतनीही प्रधान है। चीन की आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिये विदेशी पूँजी और वैज्ञानिकों की सहायता की आवश्यकता है इस उद्देश्य में भी इनकी असफलता हुई। सनयातसेन के लिये विदेशी आर्थिक सहायता को सन्देह की दृष्टि से देखने, का मतलब अपनी ही उन्नति का बाधक बनना है।

चीन की इच्छा पूर्ति के लिये यह समझ लेना आवश्यक है कि राज्य के पुनर्संगठन तथा राष्ट्र को नाश होने से बचाने के लिये अधिक से अधिक विदेशी पूँजी और विदेशी वैज्ञानिकों की सहायता लेनी पड़ेगी। तब इस तरह दस वर्ष के बादही चीन अपना वृहद् आधुनिक ढंग का व्यवसाय कर सकने में योग्य होगा। स्वयं भी उसके पास वैज्ञानिक जानकारी हो जायेगी।

उसके बाद धीरे २ विदेशी पूँजी को चुकता करके आर्थिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त कर लेंगे। आर्थिक संघटन और शक्ति हो जाने पर राजनीतिक अधिकार और स्वतंत्रता की पूर्ण रक्षा हो सकेगी। तब चीनी संस्कृति चीनी जनता के लिये गौरव की वस्तु होगी।

एक दूसरे लेख में सनयातसेन ने 'शपथ' Public Oath लेने के महत्व को अङ्कित किया है। सनयातसेन ने स्वयं विधान की रक्षा तथा विधान के अनुसार कार्य करने की

शपथ ली थी। परन्तु यूवान-शीह-काई के बाद से किसी बड़े अफ़सर ने इसका महत्व नहीं समझा वे इसको केवल एक प्रथा समझते थे। शपथ लेकर उसे तोड़ने ही में अपना बड़प्पन समझे हुये थे।

सनयातसेन के उस समय के कुछ लेख बड़े दार्शनिक थे। उनके मस्तिष्क में प्रजातंत्र की असफलता के ऊपर हर समय कुछ न कुछ तूफान उठता ही रहता था। जीवन भर न जाने किन किन कठिनाइयों को सहकर जब अपने उद्देश्य को पूरा करने का अवसर प्राप्त हुआ तभी भाग्य या स्थिति के कारण उन्हें उस अवसर से हाथ धोना पड़ा। जिस कार्यक्रम को लेकर अब तक आगे बढ़े थे वही उस कार्यक्रम को आगे बढ़ा सकते थे। इसमें सन्देह नहीं। इसका उनके दिमाग पर बड़ा असर पड़ा।

इस प्रश्न को लेकर कितने दार्शनिक लेख लिख डाले थे। मनोवैज्ञानिक भाव से प्रजातन्त्र की असफलता पर उन्होंने लिखा है—

प्रथम क्रान्तिकारी लहर ने जब चीन को व्याप्त कर दिया था और राष्ट्र संगठन का प्रबन्ध होने लगा था तब मेरे मन में कैसा आन्दोलन हुआ था, कितनी खुशी हुई थी। मैंने समझा कि जिस उद्देश्य के लिये इतने दिनों से दिमाग ने न जाने कितने मनसूबे बाँधे हैं, क्या २ कार्यक्रम तैयार किए हैं वह अब शुरू होने वाले हैं। मैंने अपने कार्यक्रम के अनुसार चीन को आधुनिक वैज्ञानिक विकास की तरफ ले जाने का साहस किया। मेरे मित्रों ने क्या कहा—हम लोग मानते हैं कि आप का उद्देश्य महान तथा विशेषताओं से भरा हुआ है। कार्यक्रम सर्वदेशीय और पूर्ण मालूम होता

है। परन्तु कार्य करना कठिन होता है और कहना सरल होता है। जब मैंने सुना तो मुझे आश्चर्य होने लगा। मैं भी दूसरे चीनियों की तरह इस सिद्धान्त में विश्वास करता था। यह सिद्धान्त चीन में दो हजार वर्षों से चला आ रहा है। सभी लोगों ने इसे स्वीकार भी किया था। चीन की विशाल जनता के हृदय में यह सदियों से गुथा हुआ है। इसको हटा देना सहल नहीं है।

यह सिद्धान्त मेरा शत्रु है। मांचू राजवंश जबर्दस्त शत्रु है। मांचू राज-वंश हमारे शरीर का नाश कर सकता था परन्तु हमारे भाव को मिटा नहीं सकता था।

जब क्रान्ति करने की चेष्टा हो रही थी तब तो अपने कार्यक्रम की सफलता को सोच सकता था परन्तु प्रजातंत्र की स्थापना के बाद चीन के पुनर्संगठन का कार्यक्रम आगे नहीं बढ़ सका। तीस वर्षों का मेरा भाव कुचल दिया गया। मेरी दृढ़ इच्छा शक्ति का हनन हो गया। यह भयानक और घृणित था।

यदि मस्तिष्क में किसी भी कार्य्य को पूरा करने का भाव दृढ़ हो जाय चाहे वह कार्य्य पहाड़ को हटा देना हो या समुद्र को भर देना हो वह मनुष्य अवश्य कर डालता है। मनुष्य की इच्छा शक्ति बड़ी बलवान् होती है। असम्भव को सम्भव में परिणत किया जा सकता है परन्तु यदि आत्मा में किसी कार्य्य के पूर्ण न होने की भावना मस्तिष्क में बैठ भरजाय और वह कार्य्य चाहे केवल हाथ उठाना याएक पतला उंठल ही तोड़ना क्यों न हो तो वह कदापि नहीं हो सकता। यही मस्तिष्क की शक्ति है। चीन की क्रान्ति में विजय पाने के बाद क्रान्तिकारियों का दिमाग 'कार्य्य कठिन

और कहना सरल' के सिद्धान्त से भरा हुआ था। वे उस सिद्धान्त के शिकार हो गये। मेरे कार्य्यक्रम को आदर्श और खोखला कह कर चीन के संघटन का उत्तरदायित्व फेंकने लगे। चीन प्रजातंत्र स्थापित हुए सात वर्ष समाप्त हो गये परन्तु संघटन की ओर अभी कुछ नहीं हुआ। बल्कि दिनो दिन चीन समस्या उलझती जा रही है और चीनी जनता की कठिनाई प्रतिदिन बढ़ती जाती है। जब मैं इन बातों को हर दिन सोचता हूँ तो मेरा हृदय दुखित होने लगता है।......

जब मैने देखा कि मेरे उपदेश फिर से आधुनिक विचार के ढंग से लोगों के दिमाग में आने लगे है तब मैंने एक पुस्तक 'चीन के राष्ट्रीय संघटन के लिये एक कार्य्यक्रम' तैय्यार किया। शायद अब भी चीनियों के दिमाग में कहना आसान और करना कठिन' मौजुद है। तब तो मेरे कार्य्यक्रम को आदर्श कहेंगे ही। परन्तु मैं पुस्तक को चीनी जनता के सामने रखूँगा ताकि उनका दिमाग अन्ध विश्वासों से दूर हो जाय। वे मेरी बातों पर ध्यान देकर राष्ट्रीय संघटन के लिये तैय्यार होंगे।

'यदि जनता को उनके व्यक्तित्व के अनुसार विभाजित किया जाय, तो प्रायः तीन तरह के आदमी मिलेंगे। पहला— वे लोग जो सोचते और विचारते है (अग्रगामी और आवि· ष्कारक) दूसरा—जो नये विचार या आविष्कार को दूसरे में प्रचार करते हैं (शिष्य), और तीसरा—पहले दो प्रकार के आदमियों से जो सुनते या पाते हैं उसे विश्वास के साथ विना सोचे विचारे कार्य्यान्वित करते हैं। ये तीनों प्रकार के आदमी एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं।'

इस विभाग में सनयातसेन अपने को प्रथम श्रेणी में

रखते होंगे इसमें सन्देह नहीं है। चीन के राष्ट्रीय उत्थान की आवाज उठाने वालों में ये ही प्रधान थे। क्रान्ति के नेता यही थे। उसके पिता भी यही थे। जनता अपनी आवश्यकता के लिये उनके कार्य्यक्रम को कार्य्यरूप में परिणत करना चाहती थी।

सनयातसेन इन्हीं विचारों से अपने को सान्त्वना देते थे। सनयातसेन को स्वयं भी Coustruetive कार्य्य करने का मौका नहीं मिला। इनका राष्ट्रपतित्व काल विल्कुल सूक्ष्म ही रहा। कैन्टन में इन्हें कुछ मौका मिला था परन्तु संघर्ष के बहुत बढ़ जाने से वह भी अवसर हाथ से जाता रहा।

सनयातसेन ने तीस वर्ष की उम्र से ही कार्य्यक्रम तैय्यार करना शुरू कर दिया था संसार भ्रमण करने से इनका मस्तिष्क हर तरह की चीजों को गौरपूर्वक देख सका था। अतः विना रोक टोक के ये प्रोग्राम बनाने मे दत्तचित्त रहा करते थे। उनका रेलवे-प्रोग्राम भी एक बृहद् जंजाल था। जीवन के अन्तिम काल में तो केवल प्रोग्राम ही प्रोग्राम की भरमार थी। उनके लेख कार्य्यक्रम से भरे रहते थे। उनका भाषण राष्ट्रीय संघटन के कार्य्यक्रम पर ही होता था। संसार ने अब तक सनयातसेन से बड़ा कार्य्यक्रम बनाने वाला पैदा नहीं किया।

उनके कार्य्यक्रमों की कुछ पुस्तकें उल्लेखनीय हैं :— राष्ट्रीय संघटन के मुख्य सिद्धान्त (चीन कूआ फैंग लूह), जनता के तीन सिद्धान्त, चीन का अन्तर्राष्ट्रीय विकास। सनयातसेन ने लेनिन की सफलता पर अपना हर्ष प्रकट किया तथा सहानुभूति का तार बड़ी मिहनत के साथ भेजा। क्रान्तिकारी लेनिन ने सनयातसेन के तार का उत्तर दिया।

लेनिन ने देखा कि चीन उनके सिद्धन्तों को अपनाने के लिये तैयार है।

कुछ लोगों का कथन है कि सनयातसेन और लेनिन की यूरोप में कभी भेंट हुई थी। परन्तु सनयातसेन ने अपनी पुस्तकों में लेनन से मिलने की बात नहीं लिखी है।

एक बार सनयातसेन जब लण्डन के किसी पुस्तकालय में बैठ कर पढ़ रहे थे तो कुछ रूसी क्रान्तिकारियों से भेंट हुई थी। एक दूसरे के परिचय होने के बाद यही मालूम हुआ कि सभी लोग क्रान्तिकारी हैं। रूसी क्रान्तिकारियों ने पूछा—'चीनी क्रान्ति की सफलता में कितने दिन लगेंगे?' इस प्रश्न का उत्तर बड़ा कठिन था। परन्तु सनयातसेन ने कहा—शायद तीस वर्ष लगेंगे। रूसी क्रान्तिकारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगे—'क्या चीन ऐसे बड़े देश में तीस वर्ष के अन्दर क्रान्ति सफल हो जायेगी?' सनयातसेन ने पूछा—'आप लोगों के देश में कितने दिन लगेंगे?' उत्तर मिला—'यदि हम लोगों को सौ वर्ष में भी सफलता मिल जाय तो बहुत है। परन्तु हम लोग संघर्ष में लगे हुए है।'

१९१७ के रूसी राज्यक्रान्ति से चीन के शिक्षित वर्ग में एक खलबली सी मच गई थी। लेनिन ने क्रान्तिकारी तरीके से एक भिन्न प्रकार के लोकतंत्र की स्थापना की। फ्रान्स और संयुक्त राष्ट्र के आधार पर स्थापित चीनी प्रजातंत्र की असफलता से चीनियों के हृदय में यह भाव आने लगे कि शायद रूसी तरीका यहाँ भी सफल हो जाय। इस समय कितने ही अधिकार-च्युत तथा दुखित रूसी-चीन में आ पहुँचे। १९:९ में एक बोलशेविक चीन की दशा निरीक्षण

करने के लिये आया। १६१६ की २५ वीं जुलाई को मास्को से एक घोषणा चीनी जनता के नाम निकाली।

'यदि चीनी जनता रूसियों की तरह स्वतंत्र होना चाहती है और अपने को वरसाई में मित्र-राष्ट्रों के द्वारा किये गये अत्याचार से बचाना चाहती है ताकि वह एक दूसरा कोरिया या हिन्दुस्थान न हो जाय तो वह यह समझ ले कि उसके स्वातंत्र्य संग्राम में सहायता देने के लिये केवल रूस के किसान और मजदूर तथा उनकी लाल सेना तैय्यार है।'

१६२७ की २७वी सितम्बर को ये प्रस्ताव फिर से दुहराये गये। इसके द्वारा चीन और जार के बीच जो सन्धि या समझौते हुए थे वे रद्द कर दिये गये। चीन में रूसी कनसेशन और रूसी उपनिवेश चीन को लौटा दिये गये। बोलशेविक रूस अपना अधिकार उठा लेती है।

चीन में रहने वाली रूसी जनता पर चीनी अदालत का ही अधिकार रहेगा। रूस के द्वारा निर्माण किये गये चीन पूर्वी रेलवे का प्रबन्ध नई सन्धि के द्वारा होगा। इन अधिकारों के छोड़ देने के पुरस्कार में चीन ने रूस के साथ नई सन्धि के द्वारा व्यापारिक सम्बन्ध जोड़े।

१९२० में बोलशेविक प्रतिनिधियों का एक दल चीन में पहुँचा। उसी समय चीन में कौम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। सनयातसेन से रूसी प्रतिनिधियों ने भेंट की। सनयात सेन के दूसरे शासन काल में कैन्टन के कुछ कार्यों में रूसी प्रभाव का संमिश्रण अच्छी तरह प्रतीत होता है। १६२० की २० वीं अक्टूबर को चीचेरीन ने सनयातसेन के पास एक पत्र भी भेजा था। इउजीनचेन ने लिखा है:—'इन दोनों आदमियों की भेंट पेरिस में हुई थी जिस समय दोनों भूखों

मर रहे थे किन्तु वे दोनों एक ही भाव से भरे हुए थे। एक जार के नाश की कामना करता था और दूसरा मांचू राजवंश के नाश के दिन गिनता था।

पत्र में सनयात सेन की दिलचस्पी रूस की तरफ थी इसको मानते हुए तथा चीन के साथ मित्रता के भाव को बढ़ते हुए देखकर सन्तोष प्रकट किया गया था। चीचेरिन ने लिखा है:—'अब आप का देश दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ रहा है। आप की जनता संसार-व्याप्त साम्राज्यवाद से संघर्ष करने के लिये पूर्ण रूप से तैय्यार है। हमलोगों को आपस के व्यापारिक सम्बन्ध शीघ्र जारी कर' देने चाहिये। समय व्यतीत करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चीन को हम लोगों के साथ मित्रता कर लेनी चाहिये।

१९२१ की ६ ठी मार्च को सनयातसेन ने अपने साम्य-वादी सिद्धान्त की घोषणा की। 'जनता के तीन सिद्धान्त, पर उनका व्याख्यान कौमींगटांगपार्टी में हो रहा था।

भाषण में सनयातसेन ने अपने साम्यवादी सिद्धान्त का पूर्ण विश्लेषण किया था। सामाजिक क्रान्ति में अपना विश्वास करते हुए कहा—कि ब्रिटिश और अमेरिकन जाति बड़ी चालाक होती है। परन्तु इन देशों में भी सामाजिक क्रान्ति की लहर फैली हुई है। उन देशों में भी सामाजिक सिद्धांत की वृद्धि नहीं हुई है।

सामाजिक क्रांति के लिये राजनीतिक क्रान्ति से अधिक त्याग की आवश्यकता है. कैन्टन मे कौमींगटांग की एक समिति स्थापित की गई थी जिसका काम सामाजिक क्रांति का प्रचार था 'शीघ्र ही कांगटंग प्रान्त में इस सिद्धांत के अनुसार कार्य प्रारम्भ करने की योजना वनाई गई जहाँ

से सच्चा और नया लोकतंत्र का प्रादुर्भाव देश में प्रवरित हो। और यहीं से सम्पूर्ण चीन देश में समाजवाद का सन्देश फैलाने की योजना कार्यान्वित की जायगी।

'समाजवाद, लोकतंत्र तथा राष्ट्रीयता के सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करने का समय आ गया है। इन्हीं सिद्धान्तों को कार्य्यरूप में परिणत करने से जनता की उन्नति होगी। परन्तु इस कार्य को सफलता के लिये जितना ही जबर्दस्त प्रचार होगा उतनी ही जल्दी सफलता मिलेगी।'

जिस समय दूसरी बार सनयातसेन कैन्टन में शासन की बागडोर अपने हाथ में ले चुके थे। एक रूसी प्रतिनिधि उनके यहाँ आया था। उसके आने का प्रधान अभिप्राय कैन्टन की हालत मास्को में देना तथा रूस की आर्थिक और राजनीतिक हालत से सनयातसेन को परिचय कराना था।

सोवियट रूस से मित्रता

१६२२ में एडोल्फ जौफे नाम का रूसी राजनीतिज्ञ उत्तरी चीन में आया था। वहाँ उसका स्वागत बड़ी शान के साथ किया गया।

'पूँजीवादी शक्ति' तथा 'साम्राज्यवादी राष्ट्रों' के ऊपर व्याख्यान भी हुए जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। एक जगह जौफे ने सर्वसाधारण के सामने यह प्रकट किया कि चीन की सहायता करने के लिये रूस तैय्यार है। जब चीन समझ जाय कि विदेशी साम्राज्यवादियों को मार भगाने का अवसर आ गया तब रूस को अपनी मदद के लिये याद कर सकता है।

कुछ लोगों को रूस के इस मित्रता पूर्ण व्यवहार पर सन्देह होने लगा। इस सन्देह को दूसरी यूरोपीय जातियाँ भी भय की दृष्टि से देखती थी। अपने अधिकारों के छोड़ने का मतलब लोगों ने यह लगाया कि उसके हाथों से वे अधिकार छिन गये हैं अतः जिन वस्तुओं पर अधिकार ही नही तो उसे छोड़ देने में क्या रखा है। परन्तु चीन के आदर्शवादी नवयुवक रूस की तरफ आकर्षित हो चुके थे। उन्हें रूस से आशा होने लगी। रूस के संगठन में अपनी रक्षा का अवसर देखने लगे।

यद्यपि रूस के हाथ से अधिकार छीन लिये गये थे। जिस पर बोलशेविक रूस ने अपने अधिकार की घोषणा भी न की बल्कि उसे नाजायज कह दिया यह कम बात नही थी। यह उदाहरण चीन के लिये शायद आगे चलकर और देशों से निबटने में कुछ सहायक हो।

१६२३ की जनवरी में एडोलफ जौफे, उत्तरी चीन का भ्रमण करने के बाद शंघाई पहुँचा। वहाँ सनयातसेन से मिला और परस्पर राजनीतिक विषयों पर खूब बातें की। सनयातसेन के मन में जो कुछ आशंका रूसियों के प्रति रह गई थी वह जौफे के मिलने के बाद जाती रही। दोनों ने एक वक्तव्य प्रेस में प्रकाशित कराया:—

'डाक्टर सनयातसेन का विचार है कि, चीन में बोलशेविक संगठन का निर्माण सफलता पूर्वक नहीं हो सकता है क्योंकि कम्युनिजम के स्थापित करने के लिये चीन तैय्यार अभी नही है, एडोलफ जौफे भी इस विचार से सहमत हैं तथा इस बात को मानते है कि चीन के लिये सबसे आवश्यकीय समस्या एकता तथा पूर्ण स्वतंत्रता की है। जौफे ने डाक्टर सनयातसेन

को विश्वास दिलाया कि रूस की चीन के साथ हार्दिक सहानुभूति है और रूस की सहायता पर चीन विश्वास कर सकता है।'

जौफे को अपने स्वास्थ्य के लिये कुछ दिन जापान में रहना पड़ा। वहाँ पर सनयातसेन के मित्र लीयावो-चीग-काई को किसान और मजदूर आन्दोलन के सिद्धान्त और संगठन में दीक्षा दी। जब लीयावो कैन्टन लौटा तो रूसी सिद्धान्त के प्रचार में खूब काम करने लगा। उसके कांग-टंग प्रान्त के गवर्नर के पद पर हो जाने से उसके कम्युनिस्टिक कार्य्यों के कारण कुछ शत्रु हो गये थे। कुछ ही महीनों बाद लीयावो की हत्या कर दी गई। सनयातसेन को जौफे की भेंट के बाद १९२३ की फरवरी में कैन्टन चला आना पड़ा। हांगकांग यूनिवर्सिटी में कुछ दिन इन्हें आगन्तुक की हैसियत से ठहरना पड़ा था। यूनिवर्सिटी के प्रवेश द्वार पर विद्यार्थियों ने इनका स्वागत किया। इनको कंधे पर बैठा कर हाल में ले आये जहाँ पर व्याख्यान हुआ।

सनयातसेन अन्तिम बार फिर पद पर आसीन हुए। इस बार सैनिक अधिकार भी इन्हीं के हाथ में था। वह प्रेसिडेंट नही बल्कि गेरनलीसीमो नियुक्त हुए थे। नवयुवक चीयांग काई शेक को अपना प्रधान सेक्रेटरी नियुक्त किया। चीयांग काई शेक ने सनयातसेन का कभी साथ नहीं छोड़ा था। १९२३ में चीयांग काई शेक को सनयातसेन ने बोलशेविक संगठन और सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिये भेजा।

डाक्टर सनयातसेन अब वृद्ध हो गये थे। उनकी शक्ति

क्षीण हो चली थी। वे निरुत्साह भी हो गये थे। निरुत्साह में आकर कभी २ ऐसे वक्तव्य निकाल देते थे जिनसे उनकी मानसिक वृत्तियों के हलचल का पता लग जाता था। जौफे से मिलने के बाद उनके मन में धैर्य्य और आशा का समागम हुआ। परन्तु वह आशा कितनी गहरी और स्थायी थी उसका अन्दाजा उनके एक दूसरे वक्तव्य से मालूम हो जाता है। १९२३ के बसन्त में अमेरिकन राजदूत सूरमन कैन्टन में आये थे और सनयातसेन से भी मिले। सनयातसेन ने उनसे प्रस्ताव किया था कि संयुक्तराष्ट्र पांच बड़े राष्ट्रों की एक संयुक्तबोर्ड तैय्यार करे जिसके द्वारा पाँच वर्षों तक चीन के प्रान्तीय शासनों पर अधिकार जमाकर इन्हें सिविल और मिलिटरी शिक्षा दी जाय। पाँच वर्ष के बाद एक निर्वाचन हो और उसके बाद प्रजातंत्र शासन का प्रबन्ध उचित रूप में शुरू हो। विदेशी आफिसर चीनी आफिसरों को शासन व्यवस्था की शिक्षा देंगे।

इस प्रस्ताव से उनके मनोवैज्ञानिक हलचल और मानसिक हतोत्साह का पता चलता है।

उन्हें विश्वास था कि विदेशी राष्ट्रों के पंजों में चीन जकड़ा हुआ है। पेकिंग की राष्ट्रीय सरकार को विदेशी राष्ट्रों ने सहयोग प्रदान कर चीन पर एक ऐसी सरकार का बोझ लाद दिया है जिस सरकार के ऊपर चीनियों का विश्वास नहीं रह गया है।

चीन का कस्टम रेवेन्यू विदेशियों के प्रबन्ध में था। चीनी व्यापार की उन्नति से कस्टम रेवेन्यू में काफी आमदनी हो रही थी। विदेशी एजेन्ट वसूल करके पेकिंग सरकार के पास भेजते थे। वह कहा करते थे:—'चीन एक स्वतंत्र देश नहीं

है। इसकी दशा कोरिया और फार्मोसा से भी बदतर है। इन देशों का मालिक एक है परन्तु हम लोगों के मालिक कई हैं। उनके मालिकों का प्रभुत्व उनके ऊपर है परन्तु साथ २ उत्तरदायित्व भी है। चीन के ऊपर बाहर वालों का अधिकार है परन्तु ये अपने अधिकार के उपभोग में कोई जिम्मेदारी नहीं लेते। यदि विदेशी राष्ट्र हम लोगों को छोड़ दें तो चीनी राष्ट्र अपनी हालत छः महीनों में सुधार लेगा। पेकिंग सरकार चौबीस घंटे भी बिना विदेशी राष्ट्रों की सहायता के नहीं ठहर सकती। राष्ट्रीय सरकार के पैसे केवल कस्टम रेवेन्यू और नमक कर से आते हैं। यह प्रान्तों में कोई कर वसूल नहीं कर सकती। वह केवल विदेशियों के द्वारा वसूल किये गये करों पर बसर करती है।

सनयातसेन पेकिंग सरकार के इतने विरुद्ध हो गये थे कि उस सरकार को पदच्युत करने के लिये चांग-सो-लीन ऐसे एक तन्त्रवादी की सहायता में विश्वास करने लगे थे। जेनरल चांग मेरा एक ही शत्रु है। मैं चांग को या और भी किसी को जो मेरी सहायता करेगा पेकींग सरकार को च्युत करने के लिये ले जा सकता हूँ। अमेरिका, इंगलैंड, फ्रांस या कोई भी राष्ट्र हमलोगों की सहायता करने के लिये तैय्यार नहीं है। यदि कोई भी सरकार जो सहायता करने को तैय्यार है वह रूसी सरकार है।

इउजीनचेन लिखते हैं—'कैन्टन में एक विलक्षण पुरुष रूस से आ पहुँचा। उसका नाम बोरोदीन था। डाक्टर सेन उस नये आगन्तुक को अपना प्रधान सलाहकार नियुक्त कर रहे थे। यह नियुक्ति डाक्टर सनयात के सोवियट सिद्धान्तों का फल था। डाक्टर सेन ने समझ लिया था कि उन्हें

विदेशी सहायता की जरूरत है। उन्होंने इंगलैण्ड और अमेरिका की तरफ ध्यान खींचा था। परन्तु ये राष्ट्र उनके साथ सहयोग करने को तैय्यार न थे। उन्हें दूसरी जगह सहायता के लिये ढूंढ़नी पड़ी। अपनी मृत्यु के पहले उन्हें यह जानकर बडा सन्तोष हुआ कि बोरोडीन एक योग्य और सच्चा आदमी है। बोरोडीन रोस्टान्यूज एजेन्सी के प्रतिनिधि होकर चीन आये थे। यों तो वह सभी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि थे। इसी उद्देश्य से बोरोडीन-टर्की और फारस भी जा चुके थे।

बोरोडीन का प्रभाव सनयातसेन तथा कौमींगटांग पर कितना था वह संसार प्रसिद्ध बात हो गई है। परन्तु उस समय चीनी या विदेशी यह नही समझते थे कि रूसियों ने चीन के द्वारा साम्राज्यवाद पर कैसा धावा किया है। १९२३ में लोग यह नही समझते थे कि राष्ट्रीय आन्दोलन का कैसा प्रभाव होगा या सचमुच ही इसकी सफलता होगी।

सनयातसेन की शक्ति धीरे धीरे कम हो रही थी परन्तु रूसी सिद्धान्त के अनुसार सनयातसेन से बढ़कर रूसी कार्य्यक्रम को आगे बढ़ाने वाला, पुरुष चीन में नही था। सनयातसेन में नवयुवकों तथा जनता को भावों में भर देने की अद्भुत शक्ति थी। सनयातसेन किसी के हाथ की कठपुतली नही हो सकते थे यह बोरोडीन से छिपा नहीं रहा। सनयातसेन से अपना मतभेद छिपाते हुए उन पर अपना विश्वास पूर्णतया जमा लिया। सनयातसेन के आदर्शवादी कार्य्यक्रम की निःसारता को बोरोडीन समझता था। सनयातसेन एक क्रान्तिकारी थे। यही बोरोडीन के लिये काफी था।

कौमींगटांग की सदस्यता कम्युनिस्टों के लिये भी खोल

दी गई। कुछ लोगों ने कम्युनिस्टों को सदस्य बनाने की प्रणाली में सन्देह उत्पन्न किया परन्तु सनयातसेन ने सभी के लिये मार्ग खोल दिया।

सोवियट सिद्धान्त पर नई सेना का संघटन होने लगा। चीयांग-काई-शेक भी सोवियट में शिक्षा पाकर लौट आये। गैलेनब्लूचर एक आस्ट्रीया का सैनिक अफसर जो सोवियट सिद्धान्त का पारंगत था ह्वामयोना मिलिटरी स्कूल में शिक्षा देने के लिये नियुक्त हुआ। छः महीने में और भी रूस से सैनिक आफिसर आ पहुँचे। १९२४ के जून में कम से कम चौवीस सैनिक आफिसर सनयातसेन की सेना में काम कर रहे थे। लीयांग-चूँग-काई के नेतृत्व में मजदूर और किसान संघ का भी संघटन होने लगा।

कैन्टन बन्दरगाह के कस्टम सरप्लस को जब सनयातसेन ने अपनी सरकार के लिये मांगा तब विदेशी राष्ट्रों को सनयातसेन के उग्र विचारों का पता चला। चीन के युवक समुदाय ने विदेशियों के प्रति बड़ी कड़ी आवाज उठाई। कस्टम सर्विस विदेशियों के हाथ में तरुण दल को नागवार-सी मालूम होती थी। विदेशी प्रबन्ध काफी दिनों से चला आ रहा था। यह मांचू राजवंश का कनसेशन तथा चीनी कर्जे के क्रेडिट रूप में विदेशियों के हाथ में वर्त्तमान था। चीन में कितने गृहयुद्ध हुए, प्रान्तों ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी परन्तु कस्टम सर्विस विदेशियों के प्रबन्ध के कारण पूर्ववत् चली जा रही थी। सनयातसेन ने दक्षिण चीन के प्रधान की हैसियत से कैन्टन के कस्टम गृह में विदेशियों के द्वारा कर वसूल होते हुए तथा पेकींग भेजे जाते हुए देखा था। उस द्रव्य की जरूरत सनयातसेन को महसूस हुई।

गृहयुद्ध उन्हीं के हिस्से में चेन-चौंग-मींग के साथ चल रहा था। १६२४ के यांगटीसी तथा बड़ी दीवाल के युद्ध में सनयातसेन भी सहायता कर रहे थे। सनयातसेन को यह कब भला मालूम होता कि कैन्टन में द्रव्य वसूल हो और पेकींग में उनके शत्रुओं के पास उनकी सहायता के लिये भेजा जाय। सनयातसेन की माँग को कस्टम के आफिसरों ने स्वीकार नहीं किया। वे अपने को चीन की राष्ट्रीय सरकार से सम्बद्धित समझते थे। सनयात ने कस्टम गृह पर कब्जा कर लेने की धमकी दी। वृटिश और अमेरिकन जहाजी बेड़े कैन्टन के बन्दरगाह पर आ डटे। इस कार्य्य से चीनियों मे और भी विदेशियों के प्रति घृणा का भाव जागृत होने लगा। सनयातसेन के पास बधाई के पत्र आने लगे। इसी बीच में अंग्रेजों ने सनयातसेन के साथ कस्टम कर के ऊपर समझौता कर लिया। इससे सनयातसेन की प्रतिष्ठा अपने देशवासियों में बढ़ गई।

—※—

कौमिंगटांग का पुनर्संघटन

इन कार्य्यों में निःसन्देह बोरोडीन का हाथ था। परन्तु उनका स्थायी काम कौमिंगटांग के पुनर्संघटन तथा उसके राजनीतिक सिद्धान्त में था। १६२३ के अक्टूबर में पुरानी पार्टी का पूर्ण परिवर्तन हुआ। एक कांग्रेस बुलाने के लिये केन्द्रीय प्रबन्ध कारिणी समिति का निर्माण हुआ। बोरोडीन और चीनी नेताओं में इस पर खूब बहसें हुई थीं। यह निर्णय किया गया कि कांग्रेस की बैठक में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों का चुनाव स्थानीय समितियों के द्वारा हो। कुछ प्रतिनिधियों का चुनाव सनयातसेन स्वयं करें। केन्द्रीय प्रबन्ध कारिणी की बैठक दस दिनों तक हुई। इसने कांग्रेस

के लिये प्रस्ताव तथा एक विधान तैय्यार किया। १६२४ की जनवरी में १६६ सदस्यों ने कैन्टन की बैठक में भाग लिया। इस कांग्रेस में हरएक प्रान्त के प्रतिनिधि, तथा प्रवासी चीनियों के भी प्रतिनिधि आये थे। २० वी जनवरी को सनयातसेन ने कौमीगटांग की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्घाटन किया। दूसरे ही दिन लेनिन की मृत्यु होगई थी। दस दिनों तक कांग्रेस की बैठकें होती रहीं।

सनयातसेन ने कांग्रेस का उद्घाटन करते हुए कहा था—"क्रान्ति के सफल होने के बाद हमलोगों के बीच संगठन के लिये कोई निर्णय न हो सका। इस कांग्रेस के बुलाने का उद्देश्य यही है कि संगठन के लिये आप लोग मिल कर एक तरीका जो आपके सामने पेश किया जायगा उसे स्वीकार करें। वे तरीके आपके सामने प्रति दिन पेश किये जायेंगे। यह नहीं कहा जा सकता कि उसमें कोई दोष नहीं है। इसीलिये तो इस सभा में पेश करने की जरूरत पड़ रही है ताकि आप उस पर अपने विचार पेश कर सकें। आप उसका अध्ययन करें फिर उसे स्वीकार करके भिन्न २ जगहों में उसके अनुसार कार्य्य करने की प्रतिज्ञा करें। कौमीगटांग के पुनर्संगठन में दो बातें हैं—पहला कौमींगटांग को फिर से एक शक्तिशाली और संघठित राजनीतिक दल बनाया जाय। दूसरा—इस राजनीतिक दल की शक्ति को देश के पुनर्संघटन में लगाया जाय। अपने दल में एकता की अनुपस्थिति का कारण किसी शत्रु के द्वारा सदस्यों में फूट फैलाने का कार्य्य नहीं था परन्तु हम लोग स्वयं ही इस एकता के नाशकर्त्ता थे। लोगों के मस्तिष्क अभी अपरिपक्व थे और कभी २ व्यर्थ की बातों पर भी फूट हो

जाती थी। किसी भी राजनीतिक दल में एक विशेष वस्तु की आवश्यकता पड़ती है वह आध्यात्मिक एकता है। सभी सदस्यों को आध्यात्मिक एकता के लिये आवश्यकीय वस्तु की आवश्यकता होती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता इस संघटन को अर्पित कर दे तो यह संघटन योग्य और शक्तिशाली होगा। पहले की असफलता का यही कारण था कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वतंत्रता थी और संघटन के पास सामूहिक स्वतंत्रता नहीं थी। हम लोगों का पुनःसंघटन इसी कमी को हटाने के लिये है।

सनयातसेन ने अपने भाषण में पहले पहल अपने संघटन की त्रुटि पर ध्यान दिया। अब तक इनके जितने भाषण हो चुके थे उनमें अपने संघटन की त्रुटि स्वीकार नहीं की थी। वोरोडीन ने सनयातसेन का मत परिवर्तित कर दिया था। चीन के राजनीतिक जीवन में एक नये जीवन का आविर्भाव हुआ। यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का त्याग था।

कांग्रेस के दो मुख्य कार्य्य थे—संघटन तथा सिद्धान्त की घोषणा। संघटन और घोषणा ने चीन के जीवन में एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी। कौमींगटांग का विधान ही दक्षिण चीन में एक नई सरकार के निर्माण का आधार हो गया।

कौमींगटांग की शक्ति दिनोदिन बढ़ने लगी। पाँच वर्ष के बाद सारा चीन कौमींगटांग की शक्ति के अन्दर आ गया। सम्पूर्ण चीन का पुनर्संगठन कौमींगटांग के विधान के आधार पर हुआ। कौमींगटांग विधान की प्रधानता एक राजनीतिक दल के साथ नहीं है बल्कि प्रजातंत्र की ही काया पलट है। १९२४ के संघटन ने चीन की शासन व्यवस्था में ऐसा अन्तर उत्पन्न कर दिया कि इस नई

व्यवस्था से तथा १६११ के फ्रांस और अमेरिका के आधार पर बने हुए विधान में कोई भी समानता या तुलना नहीं रह गई थी। कैन्टन का कायापलट चीन विधान में एक क्रांति के रूप में हो गया। इस संघटन में रूसी मस्तिष्क काम कर रहा था इसमें कोई सन्देह नहीं। रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का संघटन भी इसी रूप में है। इस संघटन का उद्देश्य एक पार्टी का प्रभुत्व है। देश में जनता की सरकार को राज-नीतिक पार्टी के रूप में संघटित करना है। सदस्यों के ऊपर कठिन अनुशासन के द्वारा पार्टी में सुयोग्य और आज्ञाकारी सदस्यों को रखने का एक अद्भुत नियम है। इस विधान में सबसे प्रधान-राष्ट्रीय कांग्रेस है जो दो वर्षों में दस दिन के लिये एक बार बुलाई जाती है। यह कांग्रेस कुछ प्रतिनिधियों की संस्था है जिसको आवश्यक सिद्धान्तों को निर्णय करने का अधिकार है। इसे एक केन्द्रीय प्रबन्ध कारिणी समिति नियुक्त करती है जब तक कांग्रेस की दूसरी बैठक न हो तब तक कौमींगटांग का सब प्रबन्ध वही करती है। केन्द्रीय समिति को कुछ अधिकार दिये हुए हैं जो दूसरों को सुपुर्द नहीं किए जा सकते। केन्द्रीय समिति अपने आधीन स्थानीय दल का संघटन करती है। केन्द्रीय समिति कौमींगटांग के आर्थिक प्रबन्ध पर अपनी देखरेख रखती है। बाहर के अन्य राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने के लिये केन्द्रीय समिति ही उत्तरदायी है। केन्द्रीय समिति को कौमींगटांग की तरफ से किसी भी आवश्यकीय विभाग के संघटन का अधिकार है। यह प्रचार-कार्य्य, मजदूर और किसान आन्दोलन तथा स्त्रियों में कार्य इत्यादि का प्रबन्ध कर सकता है। राष्ट्रीय सरकार का निर्माण भी केन्द्रीय समिति ने ही किया था और इसी के अधिकार में

सब काम होता है। केन्द्रीय समिति का एक अधिवेशन छः महीने में अवश्य होता है। केन्द्रीय समिति में एक छोटी-सी स्ट्रैनडींग कमेटी है जो बड़ी समितियों की बैठकों के दरम्यान सभी काम करती है। केन्द्रीय समिति ने एक और केन्द्रीय राजनीतिक काउन्सिल की भी नियुक्ति की हुई है। इसमें स्ट्रैन-डींग कमिटि के नौ सदस्य तथा सरकारी छः मंत्री इसके सदस्य होते हैं। इनकी संख्या आवश्यकतानुसार और भी बढ़ा दी जाती है। यह सप्ताह में दो या तीन बार बैठती है जिसमें मंत्रियों के द्वारा लाये गये राजनीतिक प्रश्नों पर विचार किया जाता है और निर्णय होता है। यह काउन्सिल सरकार तथा कौमीं-गटांग की एक शक्तिशाली संस्था है। केन्द्रीय राजनीतिक काउन्सिल के प्रधान जेनरल चियांग काई-शेक हैं। कुछ लोगों का समझना बिल्कुल भ्रमात्मक है कि चियांग-काई-शेक चीनी प्रजातंत्र के राष्ट्रपति हैं। केन्द्रीय संगठन के बाद स्थानीय संघटन हैं। जो केन्द्रीय संगठन के प्रति उत्तरदायी हैं। विधान के अनुसार संगठन के द्वारा अधिकार नीचे की तरफ आता है। प्रान्तीय संस्था को राष्ट्रीय संघटन के निर्माण तथा कार्य्य में कोई हाथ नहीं है। राष्ट्रीय संस्था के हुक्म को कार्य्यान्वित करना पड़ता है। बिना प्रान्तीय संस्था के हुक्म के स्थानीय समिति अपनी स्थानीय कांग्रेस की बैठक भी नहीं बुला सकती।

कांग्रेस के प्रतिनिधियों की संख्या निर्धारित करने का अधिकार प्रबन्ध-कारिणी समितियों को ही होता है। कांग्रेस के अधिवेशन के बाद से नई समिति चुनी जाती है। प्रबन्ध कारिणी समिति के अधिकारों का उपयोग या दुरुपयोग कांग्रेस मे अपने आदमियों के भरने पर काफी निर्भर रहता है

अनुभव से पता चलता है कि कौमींगटांग की राष्ट्रीय कांग्रेस दिनों दिन केन्द्रीय समिति के प्रस्तावों पर अपनी स्वीकृति की छाप देने की संस्था होती जा रही है। पार्टी संघटन भी एक अधिनायकत्व में परिणत हो जाता है।

कौमींगटांग पार्टी विधान का राष्ट्रीय महत्व राष्ट्रीय क्रांति के बाद हुआ। १९२८ में नानकिंग में चीनी प्रजातन्त्र के शासन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। लोगों को आशा हुई कि कौमींगटांग के सिद्धान्त से चीन में फूट, वैमनस्य, प्रान्तीय सरकारों की चुनौती, राष्ट्रीय या प्रान्तीय असेम्ब-लियों का झगड़ा समाप्त हो जायगा। राष्ट्रीय सरकार की शक्ति केन्द्रीय समिति की योग्यता और संचालन पर ही अवलम्बित है।

कौमींगटांग का संघटन निःसन्देह रूस के तरीके पर हुआ था परन्तु चीनी संस्कृति समिति-शासन से अनभिज्ञ नहीं थी। पुराने समयों में पंचायत तथा संघ होते थे जो चीन के जातीय संगठन से सन्निहित हुआ करते थे। अत. यह संघटन भी एक जातीय और राष्ट्रीय था। पहली राष्ट्रीय कांग्रेस की घोषणा में सनयातसेन के ऊपर वोरोडीन का प्रभाव अच्छी तरह से पड़ा है। चीन के राष्ट्रीय आन्दोलन में रूसी विचार का समावेश साफ २ प्रकट होने लगा। सनया-तसेन के तीन सिद्धान्त के आधार पर घोषणा तैय्यार की गई थी परन्तु रूसी विचार पद्धति के कारण चीन में एक नया दृष्टिकोण पैदा हो गया। रूसी शब्दों का भी व्यवहार किया गया है जैसे—कामरेड, साम्राज्यशाही, आर्थिक लूट, पूँजीवादी, मजदूर और किसान, इत्यादि इस प्रकार के प्रचार से राष्ट्रीय आन्दोलन का आधार विस्तृत हो गया

तथा इसके सर्व प्रिय होने में विलम्ब नहीं हुआ। चीन की अवनति का कारण विदेशी साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद का मेल है। चीन की स्वतन्त्रता साम्राज्यवादी राष्ट्रों से कुचल दी गई और इसका स्थान एक उपनिवेश जैसा हो गया है। घोषणा में सभी अपमानसूचक सन्धिओं में विदेशी कनसेशन एक्सटेरीटोरीपलिटी तथा विदेशी कस्टम-सर्विस को नाजायज कर देने तथा हटा देने की चेतावनी दी गई है। चीन ने अपनी नई घोषणा के द्वारा सूचित कर दिया कि चीनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित करने के लिये जनता पूर्ण रूप से कटिवद्ध है। किसानों का ध्यान खींचते हुए घोषणा में यह कहा गया था:—पुरातन काल से चीन कृषि-प्रधान देश रहा है और अब भी यह एक कृषि-प्रधान देश है। कृषि करनेवाली जनता का आर्थिक ह्रास सबसे अधिक हुआ है और हो रहा है। हमलोगों के जीवनयापन सिद्धान्त से जिन किसानों की भूमि छीन ली गई है उन्हें कृषि के लिये भूमि दी जायगी या जिन लोगों की जमीन जमीन्दारों के अत्याचार से ले ली गई है उन्हें भी खेती के लिये भूमि दी जायगी। पानी पटाने के लिये प्रवन्ध किया जायगा तथा जिन लोगों के पास अपनी भूमि नहीं है उन्हें वसने तथा खेती करके जीवन निर्वाह के लिये नई जगहें दी जायेंगी। किसानों के लिये देहाती बैंक स्थापित किये जायेंगे। इस पार्टी की मन्शा है कि किसानों के सुख के लिये जहाँ तक हो सकेगा करने के लिये प्रयत्न किया जायगा।

मजदूरों को सन्देश—सदियों से चीनी सरकार ने मजदूरों के जीवन-यापन के प्रश्न पर अपनी क्रूर मनोवृति का ही प्रदर्शन किया है। हमलोगों के सिद्धान्त के अनुसार राज्य

को बेकार आदमियों की सहायता करनी चाहिये और मज-दूरों की दशा सुधारने के लिये कानून बनाने चाहिये। बूढ़ों के लिये सहायता का प्रबन्ध, बच्चों की सेवा, अंगहीन मजदूरों के लिये पेनशन की आवश्यकता और जनता की शिक्षा के लिये भी राष्ट्रीय सरकार उद्योग करेगी।

इस विशाल चीन में कोई ऐसा कोना नहीं है जहाँ गरीब किसान तथा मजदूर न पाये जाते हों। उनकी हालत इतनी गिरी हुई है कि उनकी मुक्ति का प्रबन्ध शीघ्रातिशीघ्र होना आवश्यक है। वे ही मजदूर और किसान सच्चे मजदूर और किसान कहलायेंगे जो अपनी उन्नति के लिये कौमीगटांग के आदेशानुसार हमलोगों के साथ साम्राज्यवादियों से उत्साह और अपनी शक्ति भर लड़ेंगे। जनता की क्रान्ति तभी सफल होगी जब किसान और मजदूर हमलोगों का सच्चाई के साथ, साथ देंगे। कौमीगटांग किसान और मजदूरों के संगठन में अपनी शक्ति लगायेगी, ताकि राष्ट्रीय आन्दोलन जोर पकड़े। किसानों और मजदूरों को चाहिये कि कौमीगटांग के झण्डे के नीचे आ जाँय और अपनी भक्ति अर्पित करके राष्ट्रीय क्रांति की सफलता के लिये सतत् उद्योगशील रहें। कौमीगटांग की लड़ाई साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद दोनों से है जो किसानों और मजदूरों के जबर्दस्त दुश्मन हैं अत. इस संघर्ष में सहायता देना अपनी सहायता करना है।

चीन की सेना भी किसानों से निर्मित है परन्तु किसान सिपाही अपने कर्त्तव्य से अनभिज्ञ तथा देश सेवा से च्युत हैं। साम्राज्यवाद हम लोगों का शक्तिशाली शत्रु है परन्तु सैनिक सिपाही साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद से लड़ने का

महत्व नहीं समझता। वल्कि ये सैनिक सिपाही सैनिक शाहियों के द्वारा अपने देश की जनता के विरुद्ध ही लड़ने में लगा दिये जाते हैं।

कौमींगटांग इस व्यवस्था को खराब समझती है और यह मानती है कि ये गरीब सिपाही रोटी के लिये कहीं भी और किसी भी संस्था के साथ काम कर सकते हैं। इस दृष्टि से कौमीगटांग अपने सिपाहियो को शिक्षित वनाने की चेष्टा कर रही है और उन्हें सेना के रूप में परिणत कर रही है ताकि देश हित के लिये वे लड़ें। राष्ट्र के सिपाहियों का यह धर्म है कि जनता की क्रान्ति के लिये लड़े। जिन सिपाहियों ने क्रान्तिकारी सेना में काम किया है उन्हें यदि वे घर जाकर कृषि करने की इच्छा रखते हों तो जा सकते हैं उन्हें खेती के लिये जमीन राष्ट्र से दी जायेगी।

इस घोषणा के साथ कौमीगटांग ने राष्ट्रीय क्रान्ति के लिये पैर वढ़ाया। रूस की तरफ झुकने के लिये कौमीगटांग या सनयातसेन को कोई दोष नहीं दे सकता क्योंकि कोई दूसरा चारा ही नहीं रह गया था। टी-सी-वू ने 'कौमींग-टांग और चीनी क्रान्ति का भविष्य' नामक पुस्तक में लिखा है:—'रूसी नेता क्रान्ति कला में प्रवीण हैं। अपना अनुभव कौमींगटांग के लिये अर्पित कर दिया है।'

कितने दिनों से चीनियों को शासन-शिक्षा देने के लिये विदेशी-अनुभवी पुरुषों की सहायता चाहते थे। परन्तु जिस अनुभवी पुरुष को सनयातसेन ने खींचा वह 'क्रान्ति का अनुभवी' था। चीनी क्रान्ति का श्रेय इसी अनुभवी पुरुष की उद्योगशीलता है। जो एक समय केवल यह मालूम होता था कि सलाहकार की हैसियत से पार्टी का पुनर्संघटन करने

आया है उसके कार्यों का यह नतीजा हुआ कि थोड़े ही दिनों में चीन की काया पलट हो गई। १९२५-२७ तक विदेशी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध आन्दोलन बड़े धूमधाम से चलता रहा। परन्तु यह उत्साह क्रान्ति के सफल होने के बाद ठंडा हो गया।

सनयातसेन ऐसे स्वच्छन्द प्रकृति के पुरुष को बोरोडीन ने अपने रंग में रंग दिया। यह बोरोडीन के दिमाग की बलिहारी थी। सनयातसेन और बोरोडीन की भेंट सनयातसेन की गिरती हुई अवस्था तथा हतोत्साह होने पर हुई थी। सनयातसेन के लिये बोरोडीन भी नये थे और बोरोडीन भी सनयातसेन के लिये नये थे। बोरोडीन का दृष्टिकोण नया था अभी उसमें हरियाली थी। सनयातसेन हिल चुके थे। उनकी शक्ति का ह्रास हो रहा था। बोरोडीन का कार्य्य सहल नहीं था परन्तु जिस तत्परता और सच्चाई के साथ कार्य्य प्रारम्भ हुआ वह उसकी सफलता से ही प्रतीत हो सकता है। सनयातसेन अपने संगठन में अपनी शक्ति का ख्याल रखते थे। इसलिये बोरोडीन ने उनकी शक्ति पर हाथ नहीं फेरा। परन्तु बोरोडीन ने उनके हाथ में ऐसे अधिकार दे दिये जैसा सनयातसेन ने कभी पहले अनुभव नहीं किया था।

२१ वें नियम में लिखा था:—डा० सन जनता के तीन सिद्धान्त के निकालने वाले तथा विधान के पाँच विभाग में विश्वास करने वाले पार्टी के प्रेसिडेंट रहेंगे।

२२—सभी सदस्य प्रेसिडेंट की आज्ञा का पालन करेंगे तथा पार्टी के सिद्धान्त को बढ़ाने का प्रबन्ध करेंगे।

२५—प्रेसिडेंट राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रस्ताव को अस्वीकार कर सकते हैं।

२६—प्रेसिडेंट को केन्द्रीय प्रबन्धकारिणी समिति के कार्य्यों पर अन्तिम निर्णय देने का अधिकार रहेगा।

सनयातसेन अपनी व्यक्तिगत शक्ति की प्रशंसा चाहते थे। उनके भाषणों से यह प्रकट होता था कि उनके कार्य्य-क्रमों में किसी दूसरे का हाथ नहीं है। वोरोडीन ने इन बातों को समझ लिया था। इसलिये उसने सनयातसेन को और भी अधिकार देकर आगे बढ़ाया। वोरोडीन सनयातसेन से संभाषण करते समय उनके क्रान्तिकारी कार्य्यक्रम में साम्य-वादी विचारों के समावेश की तरफ ध्यान दिलाया करता था। उनके तीन सिद्धान्तों में और कम्युनिज्म में सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा की जाती थी।

वोरोडीन ने चीन में कम्युनिज्म प्रारम्भ करने की आव-श्यकता पर जोर नहीं दिया था बल्कि कौमीगटांग की सदस्यता में वोलशेविकों के रखने पर ही जोर दिया था। सनयातसेन ने भी इस बात को स्वीकार किया है।

वोरोडीन ने सनयातसेन तथा चीन में लोगों को अन्त-र्राष्ट्रीय परिवार के एक अंग बनने की इच्छा देखी।

इउजीनचेन ने सनयातसेन की कनफूसीयस सिद्धान्त के अनुसार संसार को एक आदर्श के लिये कार्य्य करते हुए एक सूत्र में बँध जाने की महत्वाकांक्षा को देखा।

वोरोडीन ने कांग्रेस के समाप्त होने के वाद सनयातसेन को उनके जीवन के अन्त तक प्रचार कार्य्य में संलग्न रखा। इन दिनों स्वास्थ्य की स्थिति के अनुसार सनयातसेन खूब परिश्रम करते थे। भाषण देने में इनकी जैसी प्रवृति थी

वोरोडीन के प्रभाव से वह और भी तेज हो गई। सनयातसेन के लिये सच्चा काम बोलना था। भाषणों के द्वारा प्रचार और चन्दा वसूल करना ही इनका मुख्य कार्य्य था। जीवन के अन्त में इन्हें अपनी शक्ति के प्रयोग का खूब मौका मिला। इनके व्याख्यान कहाँ नही होते थे—विद्यार्थियों, वैंकरों, व्यापारियों, पैरेड पर के सिपाहियों, मजदूर सभा, किसानों की भरी हुई सभाओ, लड़कियों के स्कूल, कौमीगटांग की समिति तथा स्थानीय संघटन दोपहरी चाय, मिशनरी कालेज, तथा राष्ट्रीय क्रिस्ट्रीय तरुण संघ की बैठकों में हुआ करते थे। उनके तीन सिद्धान्त प्रेसिडेंट अब्राहम के सिद्धान्त से मिलते थे। मीनयू (The people to have) मीन चीह (The people to govern) और मीनहीयांग (The people to enjcy) ये ही तीन सिद्धान्त थे।

मीनयू का अर्थ जनता की जातीय एकता है। मीनचीह के अनुसार जनता ही राज्य-अधिकार की अधिकारी है। मीनहीयांग से जनता के आर्थिक संघटन का बोध होता है। कभी २ सनयातसेन इन सिद्धान्तो को सहोदरता, स्वतंत्रता ओर समता से तुलना करते थे। १९२४ की जनवरी में इनका भाषण हुआ था—जिसमें राष्ट्रीयता पर छः व्याख्यान तथा लोकतन्त्र पर भी छः व्याख्यान हुए थे।

एक दिन में पाँच व्याख्यान देने से सनयातसेन वीमार पड़ गये थे। कुछ लोगों ने यह भी शोर कर दिया कि वे मर गये। नड़ियों के टाइम्स में उनके मरने पर टिप्पणी भी निकल गई।

अच्छे होने के बाद सर्व साधारण को अपना दर्शन देकर ही लोगों के संशय दूर किये। पुनः अगस्त १९२४ में उनके

चार भाषण हुए। इन सोलहो व्याख्यान का सार एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है। यह पुस्तक १९२६-२८ के राष्ट्रीय प्रचार में बाइविल का काम करती थी। यह पुस्तक सनयातसेन पद्धति (Sun Cult) का अच्छा विश्लेषण है।

मीन शेंग (The Peoples Livelihood) में सनयात-सेन के साम्यवादी विचार हैं। सनयात ने इतिहास मार्क्स वाले अर्थ से कहीं कही मतभेद प्रकट किया है समाजवाद के सिद्धान्त को लेकर वह दिमाग खर्च नही करना चाहते थे। वह कहा करते थे कि पाश्चात्य साम्यवादी विद्वानों में भी उद्देश्य प्राप्ति में मतभेद है। अतः सनयातसेन अपने विचारों को ही चीनी समस्या के लिये उपयुक्त समझते थे। भूमि का साम्य वितरण तथा विना परिश्रम से प्राप्त लाभ का सामाजिक विभाजन, पूंजी पर सरकारी अधिकार होना चाहिये जो गन्तव्य मार्ग तथा व्यवसायों के सरकारी अधि-कारों में उन्नति करने से ही सकता है।

सनयातसेन ने अपने तीसरे और चौथे भाषण में जो १९२४ में दिया था खाद्य सामग्री को आर्थिक समस्या की दृष्टि से सुलझाने का प्रयत्न किया है। अपने देश में कृषि की उन्नति के लिये वैज्ञानिक रीति का प्रतिपादन करते थे। कपास, रेशम तथा ऊन इत्यादि के तैय्यार करने और उसके जरिये वस्त्र की समस्या पूरी करने पर जोर देते थे। व्यव-साय की रक्षा और उन्नति के लिये कर लगाने या बढ़ाने के राय में थे। चतुर मनुष्यों ने संसार की अच्छी से अच्छी वस्तुओं पर अपना कब्जा जमाकर दूसरे लोगों को गुलाम बना डाला है। इससे यह युग मानवी संघर्ष का भयावना समय हो रहा है। इस संघर्ष का अन्त साम्यवाद में ही

निश्चित है। मनुष्य आज रोटी के लिये ही एक दूसरे पर अत्याचार कर रहा है। साम्यवाद के युग में जब प्रत्येक मनुष्य को खाने पीने के लिये पर्य्याप्त रूप में मिलेगा तभी मानवी संघर्ष समाप्त होगा। इसलिये साम्यवाद सामाजिक संघटन के लिये सब से बड़ा आदर्श है। विशिष्टवाद और मीनशेंग में केवल यही अन्तर है कि विशिष्टवाद जीवन-यापन का आदर्श है और मीनशेंग कार्य्य में संभाव्य विशिष्ट-वाद है।

अतः चीन में कौमीगटांग और विशिष्टवादियों में मतभेद क्यों है? यह दोनों की भूल है। इन दोनों सिद्धान्तों में मूलतः कोई भेद नहीं है। यह सिद्धान्त कालमार्क्स ही ने पहले पहल नहीं निकाला था। मनुष्य ने पहला समाज जो स्थापित किया वह विशिष्टवादी था और प्रारम्भिक युग विशिष्टवादी युग था।

कौमीगटांग के तीन सिद्धान्तों में जीवनयापन का सिद्धान्त तो विशिष्टवाद ही है—साम्यकरण। परन्तु हम लोग जिस विशिष्टवाद की बात कह रहे हैं वह भविष्य के लिये है वर्त्तमान के लिये नहीं है।

जीवनयापन के सिद्धान्त को कार्य्य रूप में परिणत करने के लिये मार्क्स-पद्धति नहीं वर्त्ती जा सकती। जहाँ पर धन के वितरण में असाम्यता रहती है वहाँ मार्क्स का नियम लागू हो सकता है। वहाँ श्रेणीयुद्ध प्रारम्भ करके असाम्यता का नाश किया जा सकता है। परन्तु चीन में व्यवसाय की वृद्धि नहीं हुई है अतः श्रेणीयुद्ध और मजदूरों का अधिनायकतन्त्र स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिये मीन-शेंग सिद्धान्त में विशिष्टवाद है। उसके अनुसार कार्य्य करने से

केवल विशिष्टवादी राज्य ही नहीं होगा परन्तु एक पूर्ण रूप से जनता का राज्य स्थापित होगा।

सनयातसेन के ऐसे ही व्याख्यानों से उनके मरने के बाद लोगों में ये बातें होने लगी कि वह कम्युनिस्ट थे अथवा नही। कौमींगटांग का जो दल नानकिंग में अधिकार प्राप्त किये हुए है वह सनयातसेन को कम्युनिस्ट नहीं मानता। कम्युनिस्ट उनके व्याख्यानों के आधार पर तथा रूस के साथ सम्पर्क और रूसी पद्धति में विश्वास रखने के कारण उन्हें कम्युनिस्ट मानते हैं। मौरिस विलियम महोदय ने 'सनयातसेन बनाम कम्युनिज्म' नाम की पुस्तक लिखकर यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि उनकी एक पुस्तक जिसका नाम 'इतिहास का सामाजिक अर्थ' है प्रकाशित होने के पहले सनयातसेन की विचार पद्धति मार्क्स की तरफ़ झुक चुकी थी। परन्तु इस पुस्तक के बाद उनके विचार में परिवर्त्तन हो गया।

जो कुछ हो सनयातसेन के दिमाग पर पाश्चात्य विद्वानों की छाप पड़ी थी। सनयातसेन के प्रारम्भिक सार्वजनिक जीवन से ही साम्यवादी विचार थे। सन् १६०५ के पूर्व से ही भूमि का साम्यकरण इत्यादि का प्रचार करते थे। कितनी बार उन्होंने अपने व्याख्यानों में कहा था कि पाश्चात्य देशों की तरह पूँजी और मजदूर संघर्ष चीन में न शुरू हो इसलिये राष्ट्रीय व्यवसाय सरकार के हाथ में हो जाना चाहिये।

सन् १६०५ में उन्होंने कहा था:—'हमलोग साम्यवादी राज्य की स्थापना करेंगे और प्रत्येक नागरिक को सुन्दर जीवन व्यतीत करने योग्य बना देंगे। यदि जो कोई आर्थिक जरिये को अपने लिये सुरक्षित तथा हड़पने की चेष्टा

करेगा जो वस्तुतः राष्ट्र के सभी नागरिकों का होना चाहिये उसे हमलोग अवश्य ही चीन से बाहर कर देंगे।'

डाक्टर सनयातसेन ने अपने १९२४ के व्याख्यान में रूस की सफलता पर तथा रूस के सन्देश पर काफी जोर दिया था। रूस ने अपने देश में साम्राज्यवाद को कुचलकर संसार भर से साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने का जो इरादा प्रकट किया था उसकी सराहना के रूप में कितनी बार भाषण में हर्ष प्रकट किया था।

सनयातसेन ने चीन की राष्ट्रीयता को 'मीन यू' के द्वारा प्रकट किया था। मीन यू का अर्थ है जनता के हाथ में अधिकार आना। डाक्टर सनयातसेन ने मांचू राजवंश को एक विदेशी की दृष्टि से देखा। मांचू वंश को पद च्युत करके चीनी जनता के हाथ में अधिकार का आना मुख्य उद्देश्य था। इसमें चीन को जातीय एकता का बोध है जब तक चीन की जातीयता इस भाव से पूरित होकर संगठित नहीं होती तब तक 'मीन यू' का सच्चा अर्थ नही मिल सकता। सन् १९११ में मांचू राजवंश हटा दिया गया परन्तु 'मीन यू' की सफलता नही हुई। जातीयता के भाव से प्रेरित होकर अपनी शक्ति में जब तक विश्वास नहीं होता तब तक इस सिद्धान्त में सफलता नही होती। यही सनयातसेन का विषय १९२४—२५ में था। एकता और साम्य चीन को विभिन्न जातियों में होना अनिवार्य्य है। अमेरिका तथा स्विटजरलैण्ड का उदाहरण उनके सामने वर्त्तमान था। १९२३ के बाद से राष्ट्रीय एकता का प्रचार विदेशी साम्राज्यवाद के ऊपर आक्षेपों के द्वारा भी होने लगा।

राष्ट्रीयता तथा स्वतन्त्रता का संघर्ष केवल साम्राज्य-

वाद का संघर्ष है। सनयातसेन के शब्दों द्वारा राष्ट्रीयता प्रचार का यह नया तरीका और भी शक्तिशाली और प्रभावयुक्त हो गया। सनयातसेन ने चीन की जातीयता के मिट जाने की सम्भावना से लोगों के हृदयों को प्लावित कर दिया। लोगों में एक डर समा गया। उन्हें यह मालूम हो गया कि कोई महान् संकट आ पड़ा है जिससे निकलने का एक ही रास्ता सनयातसेन के रूप में लोगों को नजर आने लगा। सनयातसेन के अन्दर लोगों के भाव उद्वेलित करने की एक विशेष क्षमता थी।

सनयातसेन पहिले विदेशी पूँजी के द्वारा चीन की व्यावसायिक उन्नति करने के बड़े पक्षपाती थे। परन्तु अन्तिम समय में राष्ट्रीयता की जो नई किरण चमकी उससे उन्हें पता चल गया कि विदेशी अपने स्वार्थ के लिए ही पूंजी लगाकर राष्ट्रों को अपने हथकंडों में फंसा लेते हैं इसी से विदेशियों की लूट नीति की कड़ी से कड़ी आलोचना करने लगे थे। उन्हें चीन के खून को पीने वाले कीड़े समझते थे।

सनयातसेन के साम्राज्यवाद विरोधी भाषणों से चीनी जनता में उनकी प्रतिष्ठा फिर जगमगा उठी। १६२४ में उन्होंने एक और पुस्तक प्रकाशित की जिसका नाम 'पुनसंघटन की रूप रेखा' है। यह पुस्तक आज भी कौमीगटांग के कार्य्यक्रम की एक ही पुस्तक है। इसमें चीन के लिये पच्चीस सुधारों की माँग है। ये पच्चीस माँग नानकिंग में यादगारी हाल के सामने दीवारों पर खुदे हुए हैं।

इस पर श्रीमती सनयातसेन (चींग-लींग) के हाथ की लिखी हुई छोटी सी टिप्पणी है जो अब दिनों के गुजरत हो

जाने से धुँधली-सी हो गई है। इस पर सनयातसेन का हस्ताक्षर मौजूद है।

सनयातसेन के राजनीतिक कार्य्यक्रम में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। उनके कार्य्यक्रम तो शुरू से ही भाषणों के द्वारा व्यक्त हो चुके थे। पुस्तकों में चीन के पुनर्संघटन का तरीका निकल चुका था। इसी कारण डाक्टर सनयातसेन कार्य्यक्रम बनाने वालों में बड़े समझे जाते हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय जो २५ माँगे तैय्यार हुईं वे सब नए रूप में पुरानी ही बातें जनता के सामने रखी गईं।

'राष्ट्रीय सरकार तीन सिद्धान्त तथा पंच-विधान सिद्धान्तों के आधार पर प्रजातन्त्र का पुनः संघटन करेगी।'

'संघटन का तरीका तीन समयों में विभाजित किया जायगा।'

'जब तक सैनिक प्रबन्ध रहेगा तब तक सैनिक प्रबन्ध-प्रदेशों में सैनिक-कानून लागू रहेंगे।'

२५ माँग सनयातसेन के पूर्व कथित क्रमों का एक नवीन रूप है। संघटन का पहला कार्य्य जनता की समृद्धि का प्रश्न है। इसमें रोटी का सवाल भी शामिल है। रोटी, वस्त्र गृह तथा दूसरी जीवन-सुविधाओं के लिये सरकार कृषि तथा वस्त्र-व्यवसाय की उन्नति जनता की सहायता से करेगी। स्थानीय स्वायत्त शासन की जिम्मेवारी पर भी आर्थिक उन्नति रखी गई है। प्रत्येक जिला अपने यहाँ पब्लिक-व्यवसाय की उन्नति करेगा, स्थानीय शासन के आधीन ही भूमि कर, जंगल, नदी, जलशक्ति, खानों का प्रबन्ध रहेगा।

जब जिलों में या प्रान्तों में शान्ति स्थापित हो जायेगी

तब इन्हें स्थानीय-स्वायत्त शासन का अधिकार प्राप्त होता जायगा। प्रान्तों में प्रान्तीय असेम्बलियाँ स्थापित होंगी। ये अपने गवर्नर स्वयं चुनेंगे। प्रान्तीय सरकार केन्द्रीय सरकार स्थानीय शासनों में केवल एक जोड़ने की कडी का काम करेंगी। राष्ट्रीय विषयों मे केन्द्रीय सरकार के आधीन रहना होगा। जब काफी संख्या में प्रान्तों में स्वायत्त शासन स्थापित हो चुकेगा तब एक राष्ट्रीय कांग्रेस का चुनाव होगा जो केवल विधान पास करेगी। उसमें प्रत्येक जिलों से एक २ प्रतिनिधि लिये जायेंगे। जिस दिन विधान प्रकाशित होगा उसी दिन विधान के अनुसार सरकार का रूप परिणत हो जायगा। उसके बाद विधान के अनुसार नया निर्वाचन होगा। कांग्रेस के अधिकार में केन्द्राय सरकार रहेगी। सनयातसेन के कार्य्यक्रम में क्रियात्मक समय के लिये एक-तंत्र सरकार की स्थापना है। एकतंत्र की स्थापना प्रजातंत्र की स्थिरता जमाने के लिये सनयातसेन के विचार से अत्यावश्यक है।

सनयातसेन की सेना का संघटन रूसी आधार पर हो रहा था। १९२४ की ८ वीं अक्टूबर को एक रूसी बेड़ा कैन्टन में आया था। जहाज के कप्तान ने कौमींगटांग के लिये रूसी ऊन दिये थे। कुछ लोगों का ख्याल था कि रूस से द्रव्य आया था। सनयातसेन ने कप्तान के पास एक मानपत्र भेजा था—

'सोवियट प्रजातंत्र और चीनी प्रजातंत्र की मित्रता गहरी हो गई है। सोवियट प्रजातंत्र ने अत्याचारी साम्राज्यवादियों को कुचल देने की प्रतिज्ञा कर ली है। मैं भी तीन सिद्धान्त तथा चीनी और विश्वक्रांति के लिये लड़ रहा हूँ। आप

इतनी मंजिल तय करके यहाँ आये हैं इससे मित्रता और भी पूर्ण हो जायेगी। एक दूसरे की सहायता करते हुए तथा विघ्नों को हटाते हुए दोनों राष्ट्र विश्व शांति की तरफ बढ़ेंगें। यह शुभ कामना इन दो ही राष्ट्रों के लिये नहीं वरन् विश्व के लिये है।'

कैन्टन के अच्छे २ नागरिकों के मनमें यह अन्देशा हो गया था कि चीनी राष्ट्रीयता कम्युनिष्ट पार्टी में मिल गई है और किसी तरह की आपसी सन्धि भी हुई है। कांगटंग में सनयातसेन की 'लाल सेना' को संघटित होते हुए देख रहे थे। रूसी मास्टर इन सिपाहियों को सैनिक शिक्षा रूसी पद्धति पर दे रहे थे तथा साथ २ यह भी ध्यान दे रहे थे कि जिस उद्देश्य के लिये इनकी शिक्षा हो रही है उसे भी समझें। उन्हें कम्युनिज्म की दीक्षा भी देने की चेष्टा होती थी। उन दिनों कैन्टन में सनयातसेन के उत्साह से 'मर्चेण्ट वालनटीयर कौर्प्स' की भी स्थापना हो गई थी। सनयातसेन के साथ सौदागरों से एक बात पर अड़चन पड़ गई थी। शस्त्रों के बाहर से मांगने में कुछ झगड़ा चल पड़ा था। इसलिये मर्चेण्ट कौर्प्स और लालसेना में लड़ाई हो गई। जिनमें कितने ही घायल हुए और कितने ही मारे गये। मकानों में आग लगा दी गई।

सनयातसेन अपने तीनों शासनकाल में; दक्षिण और उत्तर के सरदारों के युद्ध में शामिल रहते थे। तीसरे में स्वयं भी युद्ध-क्षेत्र में गये। परन्तु सनयातसेन में मिलिटरी चातुर्य्य नहा था। वह एक सिविलियन थे।

१९२३ में एक घटना घटी। पार्लीयामेंट को घूस देकर

टावो-कुन ने अपने लिये राष्ट्रपति का पद स्वीकार करा लिया। इस घूसखोरी का विरोध सारे चीन में एक स्वर से हुआ। वू-पी-फू नाम का युद्ध सरदार पेकिंग पर अपना प्रभुत्व जमाये हुए था। वू-पी भी प्रेसिडेन्ट के दल का आदमी था इसलिये उसके ऊपर आक्षेप हुए। राजनीतिक पार्टियों का मतभेद शत्रुता के रूप में परिणत हो गया। १९२४ के सितम्बर में उत्तरी चीन तथा यांगट्सी प्रदेश में युद्ध भी छिड़ गया। सनयातसेन ने चांग-सो-लीन और आनफू दल से अपनी सेना मिला ली। युद्ध के लिये आगे बढ़े।

सनयातसेन ने युद्ध में जाते समय अपनी घोषणा १८ सितम्बर को निकाली थी। उस समय के मैनीफेस्टो के देखने से पता चलता है कि रूसी शैली का कितना प्रभाव उनके ऊपर पड़ चुका था। 'हम लोगों के गृहयुद्ध का कारण सैनिकवाद है जो गत तेरह वर्षों के अन्दर बहुत ही बढ़ गया है। इसका अप्रत्यक्ष कारण साम्राज्यवाद है। उत्तरी चढाई जनता की सहायता से टाव-कुन, वू-पी-फू इत्यादि शत्रुओं के दमन करने के लिये है। यह युद्ध केवल प्रस्तुत सैनिकवाद ही के विरुद्ध नहीं है वल्कि उस साम्राज्यवाद के विरोध में भी है जिसकी सहायता से यह सैनिकवाद फूलता और फलता है।' विजय होने पर हम लोग जबर्दस्ती लादे हुए समझौते और सन्धियों को नाजायज करने के लिये चेष्टा करेंगे। विशेष अधिकारों को जिसके द्वारा विदेशी चीन की आर्थिक शक्ति का ह्रास कर रहे हैं समाप्त किया जायगा। इस तरह चीन से साम्राज्यवादी प्रभाव का नाश होगा। नई सन्धि स्वतंत्रता और समता के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्तों के अनुसार होगी। अपमान सूचक सन्धियां के

नाजायज होने पर चीन का कानून सारे देश में एक रूप से लागू होगा।

यह लड़ाई तुरन्त समाप्त हो गई। सनयातसेन अभी पहुँच भी नही पाये थे कि पेकिंग पर कब्जा हो गया। क्रिश्चियन जेनरल फेंग-यू-हियांग ने अपने बड़े अफसर और सरदार वू-पी-फू को कैद कर लिया। उन्हें मजबूर किया कि चांग-सो-लीन के सामने से अपनी सेना हटा लें। तब जेनरल फेंग ने पेकिंग पर कब्जा करके राजप्रासाद से छोटे बालक-सम्राट को निकाल दिया। प्रधान प्रबन्धकारिणी अधिकार के लिये पुराने टवान-ची-जूई को बुलाया। तुरन्त उत्तर और दक्षिण को एक में करने की बातें होने लगीं। पेकिंग आने के लिये एक निमंत्रण सनयातसेन को भेजा गया १६२२ में ली-यूवान-हंग ने भी ऐसा ही निमंत्रण भेजा था परन्तु सनयातसेन ने कोई उत्तर नही दिया था। इससे चीन की जनता इनसे रुष्ट हो गई थी। इस बार स्थिति में अन्तर था। उनके शत्रु वू-पी-फू और टाव-कुन जेनरल फेंग के द्वारा निहत हो चुके थे। हर्ष और मान के साथ जेनरल फेंग के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। कैन्टन अब उनके रहने की जगह भी नही रह गई थी। अच्छा था कि निकलने का उपाय दिखलाई पड़ा। सनयातसेन की तबीयत अच्छी नहीं थी। बोरोडीन ने भी निमंत्रण स्वीकार कर लेने के लिये परामर्श दिया था परन्तु बोरोडीन को लेशमात्र भी विश्वास नहीं था कि चीन की एकता इतनी जल्दी हो जायगी। बोरोडीन सनयातसेन को रोक नहीं सकता था। अवसर को हाथ से जाने देना कितना भयंकर होता। बोरोडीन को सन्तोष था कि पेकिंग में भी रूसी प्रभाव कम नहीं था।

चीन और रूस में १९२४ की मई में उसी पेकिंग नगर में सन्धि हुई थी। काराखन सोवियट प्रजातन्त्र का राजदूत होकर चीन की राजधानी पेकिंग में पहुँच गया था। किसी भी राष्ट्र ने चीन में राजदूत ambassador अभी तक नही भेजा था। पेकिंग के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक जमावड़ों में रूसी राजदूत की चहल पहल रहती थी परन्तु दूसरे देश वाले इस बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर द्वेष रखते थे। रूसी राजदूत चीन की नई सहानुभूति पाकर नवयुवक चीनियों पर जो कम्युनिज्म मे दिलचस्पी लेने लगे थे अपना प्रभाव जमाये बिना नही रहता था। कौमींगटांग के पदाधिकारियों ने समझा कि यदि सफलता न होगी तो एक प्रचार का अच्छा-सा अवसर हाथ लगा है। सनयातसेन ने अपने व्याख्यान उत्तरी चीन में भी जारी रखे जिसका श्री गणेश बोरोडीन ने कराया था। मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए देशभक्त ने जैसी प्रवीणता और विलक्षणता अपने भाषणों में अन्तिम समय में दिखलाई वैसी कभी नही दिखलाई थी। सनयात-सेन बोरोडीन के प्रभाव में आकर रूस की बड़ाई ही नही किया करते थे बल्कि विदेशी साम्राज्यवादियों के ऊपर भयंकर और खतरनाक बौछार भी छोड़ने के लिये तैय्यार रहते थे। उत्तरी-चीन की यात्रा करने के पहले कैन्टन में उन्हें जन्मतिथि के मान में प्रीति भोज दिया गया। कौन जानता था कि कैन्टन में यही अन्तिम प्रीति भोज या यही भाषण इस नगरी के लिये अन्तिम है।

अन्तिम जीवन

१३ नवम्बर १९२४ को डाक्टर सनयातसेन अपनी तरुण पत्नी के साथ तथा एक स्टाफ के सहारे सरकारी क्रूजर से पेकिंग के लिये रवाना हुए। हांगकांग से जापानी जहाज पर १७ तारीख को शंघाई पहुँचे। २१ ता० को कोवी के लिये प्रस्थान किये। रास्ते में उन्होंने अपना वक्तव्य प्रेस को दिया। कितनी जगहों में पवलिक भाषण भी हुआ। शंघाई में एक जवर्दस्त वक्तव्य प्रेस में विदेशियों के विरोध में निकाला था। विदेशियों ने चीन को नीचा दिखाने, अपमान करने की जो २ तरकीबें निकाली हैं उसके लिये बड़े कड़े शब्दों में घृणा के शब्द व्यवहृत हुए थे।

मिशनरियों को साम्राज्यवाद के दौड़ते हुए कुत्ते कह कर पुकारा था। मोजी में उन्होंने कहा था—'चीन का नाश इंगलैण्ड ने किया।' कोवी में उन्होंने एक पाम-एशियाटिक आन्दोलन यूरोप और अमेरिका के दबाव के विरोध में प्रारम्भ करने के लिये कहा। 'रूस रहने और रहने देने' के सिद्धान्त पर अवलम्बित है। दूसरे राष्ट्र कमजोर राष्ट्रों पर अधिकार करने की चेष्टा में रहते हैं। एशिया वासी यूरोप और अमेरिका के अत्याचार से एशिया तथा यूरोप और

अमेरिका के दबे हुए राष्ट्रों को बचाने के लिये अवश्य तैय्यार हो जायें। जापान और चीन को आपस में मित्रता कर लेनी चाहिये। दोनों राष्ट्र मिलकर विशाल एशिया की स्वतन्त्रता और मान के लिये यूरोपीय साम्राज्यवाद से लड़ें। यही विश्व शान्ति का मार्ग है।' यात्रा में ही सनयातसेन को मालूम हो गया कि प्रधान एक्सक्युटिव ने विना उनकी सम्मति के पुनर्संघटन कानफ्रेन्स के बुलाने के लिये घोषणा कर दी। सनयातसेन ने भी अपनी यात्रा के प्रारम्भ में ही चीफ एक्सक्युटिव से विना परामर्श किये एक विचित्र मैनीफेस्टो प्रकाशित कराया जिसमें राष्ट्रीय संगठन पर अपना विचार प्रकट किया था। वह चाहते थे कि वे ही प्रतिनिधि बुलाये जायँ जिनका उन्नतिशील प्रवृति पर विश्वास हो। (१) आधुनिक व्यावसायिक संगठन (२) चैम्बर आफ कामर्स (३) शिक्षा समितियाँ (४) यूनिवर्सिटी (५) विद्यार्थी संघ के प्रान्तीय संघ (६) मजदूर संघ (७) किसान संघ (८) ट्साव-चू की विपक्षी सेना (९) राजनीतिक दल।

सनयातसेन इन्हीं संगठनों के प्रतिनिधियों को निमंत्रण देना चाहते थे। टीन्टसीन में सनयातसेन को पेकिंग सरकार की लिस्ट जो निर्वाचन के लिये तैय्यार की गई थी दिखाया गया। उस लिस्ट के अनुसार समन भी निकाले जा चुके थे उन्हें बड़ा दु:ख हुआ कि उनके मत की अवहेलना की गई। टीन्टसीन में ही सनयातसेन ने अपने मिलिटरी-मित्र चांग-सी-लीन से बातें की। यहाँ पर उन्हें इतना परिश्रम करना पड़ा कि लीवर में दर्द हो जाने के कारण बिस्तरे पर शरण लेनी पड़ी।

३१ दिसम्बर को सनयातसेन बीमारी की हालत में "पेकिंग पहुँचे पेकिंग के होटल में ठहराये गये डाक्टरों ने उनकी सेवा सुश्रुषा करनी प्रारम्भ कर दी। प्रेसों में यह खबर निकल गई कि डाक्टर सनयातसेन की बीमारी खराब हो चली है। डाक्टरों की राय से चीन के सर्वश्रेष्ठ अस्पताल यूनियन मेडिकल कालेज में ले जाये गये। सनयातसेन की दवा अच्छे से अच्छे मिशनरी डाक्टरों के द्वारा होने लगी जिन लोगों को शंघाई में साम्राज्यवाद का एजेन्ट कहा था। यहीं पर उनके रूसी सलाहकार आते थे। दूसरे राजनीतिक दल के लोग भी मुलाकात करने आने लगे। एक प्रकार से अस्पताल उन दिनों राजनीतिक चालों का एक मुख्य स्थान हो गया था। २६ जनवरी को डाक्टर टेलर ने इनका आपरेशन किया। आपरेशन से पता चला कि लीवर में कैंकर हो गया है। घाव बन्द कर दिया गया। सनयातसेन के मित्रों को यह खबर दे दी गई कि यह अच्छा नहीं हो सकता। अस्पताल इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता था। उस समय भी रुग्नशय्या के नजदीक राजनीतिक चालें खूब चल रही थीं उनकी स्त्री ने उन्हें दूसरी जगह ले जाने का प्रबन्ध किया। अस्पताल को राजनीतिक कुत्तों से अन्त में छुट्टी मिल गई। वह वीर आत्मा मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ था और अवसर देखने वाले स्वार्थी ऐसे ही समय में अपना स्वार्थ साधना चाहते थे। उस ताताकी नगर में डाक्टर सनयातसेन ने अपने जीवन के अन्तिम दिन बताये। पाश्चात्य औषधि से जब कोई स्थिति में सुधार नहीं हुआ तब मित्रों की राय से चीनी पद्धति से दवा करने का प्रबन्ध ठीक हुआ। चीनी डाक्टर आये परन्तु कोई सुधार नहीं हुआ। उनकी स्त्री और

उनका पुत्र सुन-फो उनकी सेवा में रात दिन लगे रहते थे। उनकी एक लड़की भी जो जीवित थी बुला ली गई थी। लड़को की माँ नही बुलाई गई। मृत्यु शय्या पर पड़े रहने पर भी बोरोडीन ने डाक्टर सनयातसेन को नहीं छोड़ा। उनका साथ देने के लिये पेकिंग आया था। उनके कुछ चीनी मित्र वांग-चीग-वी और श्रीमती लीआव-चुंग-काई इत्यादि सेवा में सदा मौजूद रहते थे।

जिस तरह लेनिन के मरने के समय एक वक्तव्य तैय्यार हुआ था उसी तरह इस समय भी तैय्यार कराया जा रहा था। १७ फरवरी के सन्देश में चीफ एक्सक्युरिम के पुनःसंघटन समिति के निर्वाचन पद्धति तथा उसके कार्य्यक्रम पर आलोचना निकली। कोमीगटांग ने इस कानफ्रेन्स में कोई भाग नही लिया।

इससे कोई स्थायी कार्य्य नहीं हो सका। सनयातसेन जिस कार्य्य से पेकिंग आये थे वह चीन की एकता, पुष्पित न हो सकी। परन्तु जिन बातों से चीन की एकता सफल हुई वह तो उनकी मृत्यु-शय्या के निकट हो ही रही थी। उनके मरने के बाद एक "will" प्रकाशित हुआ। उस will के विषय में कितनी ही बातें कही जाती हैं। परन्तु विश्वासयुक्त वक्तव्य एक ही है। कदाचित् सनयातसेन से यह कहा गया कि आपको अभी अच्छे होने में भी काफी दिन लगेंगे। आपकी अनुपस्थिति में पार्टी आपके नेतृत्व बिना रहेगी। इसलिये वे चाहते हैं कि आप अपना एक सन्देश प्रकाशित करा दें कि आप क्या २ करना चाहते हैं ? दूसरे लोगों का कथन है कि उनके मृत्युशय्या के चारों ओर उनकी स्त्री, उनका लड़का तथा उनके मित्र वांग-चीग-वी

इत्यादि बैठे हुए थे। सनयातसेन ने अपनी आंख खोली और पूछा कि तुमलोग मुझसे क्या सुनना चाहते हो? वांग-चीग-वी ने उनके मुख से निकले हुए शब्दों को लिख लिया और उन्हें पढ़कर सुना दिया। सनयातसेन ने सुनकर 'बहुत अच्छा' 'बहुत अच्छा' कहा। कागज फिर रख दिया गया। मरने के एक दिन पहले सनयातसेन ने उस कागज को माँग कर उस पर दस्तखत कर दिया।

यद्यपि वह 'will' वांग-चीग-वी के हाथ का लिखा हुआ है परन्तु शैली सनयातसेन की है। यह will ऐसा भाव शून्य है कि जैसे वह किसी कमेटी की बैठक में कोई सनयातसेन का दिया हुआ वक्तव्य। उस will पर आठ आदमियों के हस्ताक्षर भी हुए हैं जो उस समय उनके मरण-शय्या के निकट जमा थे।

उस 'will' का तर्जुमा टी-सी-वू ने कौमीगटांग तथा चीनी राज्यक्रांति का भविष्य नामक पुस्तक में दिया है—मैंने अपने जीवन के चालीस वर्ष राष्ट्रीय क्रांति के लिये लगाये हैं जिसका उद्देश्य चीन की स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता प्राप्त करना है।

चालीस वर्ष के अनुभव से यह ज्ञात हो गया है कि उद्देश्य-प्राप्ति के लिये चीन की सोई हुई जनता को जागृत करना और संसार की उस जाति से नाता जोड़ना भी जरूरी है जो हम लोगों के साथ समता का व्यवहार रखती है। अभी क्रान्ति पूरी नहीं हुई है। मैं आदेश देता हूँ कि हमारे सभी कामरेड पुनर्संघटन के मुख्य सिद्धान्तों, जनता की तीन-सिद्धान्त तथा राष्ट्रीय कांग्रेस की घोषणा के अनुसार अपना काम करते चलें जब तक उद्देश्य पूरा न हो जाय।

जनता की कांग्रेस बुलाने तथा अपमान सूचक सन्धियों के हटाने का यत्न जितनी जल्दी हो सके करना चाहिये। इन्हीं बातों की तरफ मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। यह वक्तव्य उनके मरने के दो सप्ताह पहले ही लिखा जा चुका था परन्तु इस पर ११ मार्च सन् १६२५ को उनका दस्तख़त हुआ। डाक्टर सनयातसेन की मृत्यु ता० १२ मार्च को हुई।

उनके मरने के पहले एक सन्देश सोवियट रूस के लिये भी लिखा गया था जिस पर उनसे दस्तख़त कराया गया।

प्यारे कामरेड,

जब मैं ऐसे रोग से जकड़ा हुआ हूँ जहाँ मनुष्य की शक्ति काम नहीं कर सकती, मेरा ध्यान तुम्हारी तरफ लगा हुआ है तथा अपनी पार्टी और देश की तरफ लग रहा है।

तुम लोग स्वतंत्र प्रजातंत्र की एकता के संचालक हो जिसे लेनिन ने तुम्हारे हाथों में सौंपा है। तुम्हारी सहायता से साम्राज्यवाद से कुचली हुई आत्मायें मुक्त होंगी जिसके ऊपर ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आवरण ढँका हुआ है जिसका मूल गुलामी, युद्ध और अन्याय में गड़ा हुआ है। मैं अपने पीछे एक ऐसी पार्टी छोड़ जाता हूँ जो तुम्हारे साथ मिलकर चीन को ही नहीं वरन् सभी साम्राज्यवाद से पीड़ित देशों को स्वतंत्र करने में अग्रसर होगा।

भाग्य की इच्छा से मैं अपने कार्य्य को असमाप्त छोड़े जाता हूँ और उन लोगों को उत्तरदायित्व दिये जाता हूँ जो पार्टी के सिद्धान्तों तथा उपदेशों में विश्वास रखकर मेरे सच्चे अनुगामी होंगे। इसलिये मैं कौमींगटांग को यह आदेश दिये जाता हूँ कि क्रांतिकारी राष्ट्रीय आन्दोलन को आगे बढ़ाते चले जायें जब तक चीन जो साम्राज्य वादियों

के द्वारा उपनिवेश के रूप में परिणत कर दिया गया है पूर्ण रूप से स्वतंत्र न हो जाय। इस ध्येय का मैंने अपनी पार्टी को सन्देश दिया है कि तुम्हारे साथ अपना सम्बन्ध बराबर जारी रखें। मुझे पूरा विश्वास है कि रूस अपनी सहायता मेरे देश को देता रहेगा।

प्यारे कामरेडो, मैं तुम लोगों से बिदा लेता हूँ और अपनी आशा प्रकट करता हूँ कि वह दिन आयेगा जब सोवियट प्रजातंत्र स्वतंत्र चीनी प्रजातंत्र के साथ मित्रता और सन्धि करके संसार की दलित जातियों का उद्धार करने के लिये दोनों मित्र विजय का डंका बजाते हुए आगे बढ़ते जायेंगे।

भातृ स्नेह के साथ तुम्हारा—

सनयातसेन

सनयातसेन की मृत्यु के बाद स्टैलिन का एक तार सनयातसेन के सन्देश के उत्तर में तुरन्त मिला।

सनयातसेन ने मरते २ एक दूसरा will अपनी स्त्री चांग-मींग को दिया। इसके द्वारा उनकी पुस्तकें और शंघाई का घर चींग-मींग को मिला। यही सनयातसेन का संचित धन था।

इसके बाद उनकी लाश पेकिंग यूनियन मेडिकल कालेज में लाई गई। उसमें दवा इत्यादि का लेपन कर उसे काफी दिन ठहरने योग्य बना दिया गया। लेनिन की लाश भी बहुत दिनों तक लोगों के दर्शनार्थ रखी गई थी। उनके परिवार वालों की राय से क्रिश्चियन तरीके पर उनकी अन्त्येष्ठि क्रिया की गई।

—*—

श्रद्धाञ्जली

सनयातसेन की मृत्यु के बाद चीन वासियों ने अपने राष्ट्रनिर्माता का मूल्य समझा। उस पुण्यात्मा की स्मृति के लिये एक १९२५ में "सनयातसेन यूनिवर्सिटी" स्थापित की गई। इस राष्ट्रीय विद्यालय का मुख्य ध्येय था कि पुरानी मिशनरियों की शिक्षापद्धति को हटाकर सोवियट संस्कृति की शिक्षा देना तथा देश के नवयुवकों में क्रान्ति का पाठ पढ़ाकर अपनी सफलता को आगे बढ़ाना।

कौमिंगटांग की ओर से सम्पूर्ण चीन के होनहार लड़के भेजे जाते थे। वे राष्ट्रीय शिक्षोपार्जन कर देश के उत्थान में सहायक हुए। सनयातसेन के नाम पर प्रत्येक सोमवार को सभा होती है यहाँ तक कि स्थानीय शाखाएँ, गवर्मेन्ट आफिस, फेक्टरी, स्कूल वाले भी सभाएँ करते हैं। सभाओं में वहाँ के नागरिक सनयातसेन के चित्र के सामने सर झुकाते हैं। उनका Will पढ़ा जाता है। इसके बाद ३ मिनट मौन रहते हैं। चीन में सनयातसेन की प्रथम जयन्ति मनाई गई। लाखों की संख्या में वहाँ की जनता सम्मिलित हुई जलूस निकाला गया। राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी तथा अन्य विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक थी। आज वह "चीन के पिता" के नाम से संबोधित होते हैं। सनयातसेन का जीवन देश के लिए कुर्बान हुआ, वह देश को बहुत प्यार करते थे। वास्तव में सनयातसेन की तरह त्यागी पुरुष का होना बहुत कठिन है। सनयातसेन की आत्मा पुकार २ कर कह रही है कि देश को साम्राज्यवाद से मुक्त करो। सनयातसेन की आत्मा को संतोष जभी होगा जब साम्राज्यवादियों के चंगुल से चीन स्वतन्त्र हो सकेगा!

प्रेमपत्र अथवा लवलेटर्स।

इन नामोंकी पुस्तकें प्रायः छप चुकी हैं। किन्तु जिस उद्देश्य से पाठक पाठिकाएँ इन पुस्तकों का नाम देखकर पुस्तक क्रय करते थे वह पूर्ण नहीं होती थी। कारण एक प्रकाशक ने प्रेमपत्र नाम देकर इतने थर्डक्लास पत्रों का चयन किया जिनके पढ़ने, अथवा बहिन बेटियों के हाथोंमें पड़ने देना भी गर्हित था। एक दूसरे सज्जन ने लवलेटर्स नाम देकर चाँद कार्यालय द्वारा चाँद पत्र के विशेषाँक "पत्राँक" की सहायता तथा कुछ विभिन्न मित्रोंके द्वारा लिखवाए गए पत्रों को ही लवलेटर्स बना डाला। यह नहीं सोचा कि वह बेचारे कालेज के विद्यार्थी जब इस पुस्तक को अन्दर से पढ़ेंगे तब क्या २ न कह बैठते होंगे। वास्तव में जो पुस्तक का उद्देश्य नाम से होता है वह लक्षित नहीं होता था। प्रस्तुत पुस्तक इन कमियों को ध्यान में रखकर प्रकाशित की गई है इसमें आपको मिलेगा।

मानव हृदय के निगूढतम रहस्यों का सुन्दर निदर्शन !
कोमल तम वृत्तियों का मनोरम चित्र !

इन पत्रोंको पढ़कर हृदय प्रेम—जनित मधुर आकाँक्षाओं से भर जाता है। हम यह जानपाते हैं कि क्यों और किस तरह हृदयों का समवेत स्पंदन मनको पागल करने में सक्षम होता है। हम प्रायः अपनी ही ऐसी वृत्तियों से जिनके सहज स्पर्श से ही हमारा जीवन सुखद-स्वर्गीय कल्पनाओं का आकर बन जाता है, वंचित रहते हैं। इन पत्रों को पढ़कर, इस पुस्तक की प्रत्येक लाइनों को समझ कर, हमें उनका ज्ञान होता है, और हमारे हृदय में इस संसार के प्रति, यहाँ के प्राणियों के प्रति, एक अनिर्वचनीय प्रेम—स्पृहा जग जाती है और हम अपने को धन्य मानकर प्रमुदित हो उठते हैं। पुस्तक बहुत ही सुन्दर और सचित्र है मूल्य भी लागतमात्र १) रु० रखा गया है। पृष्ठ संख्या ३००